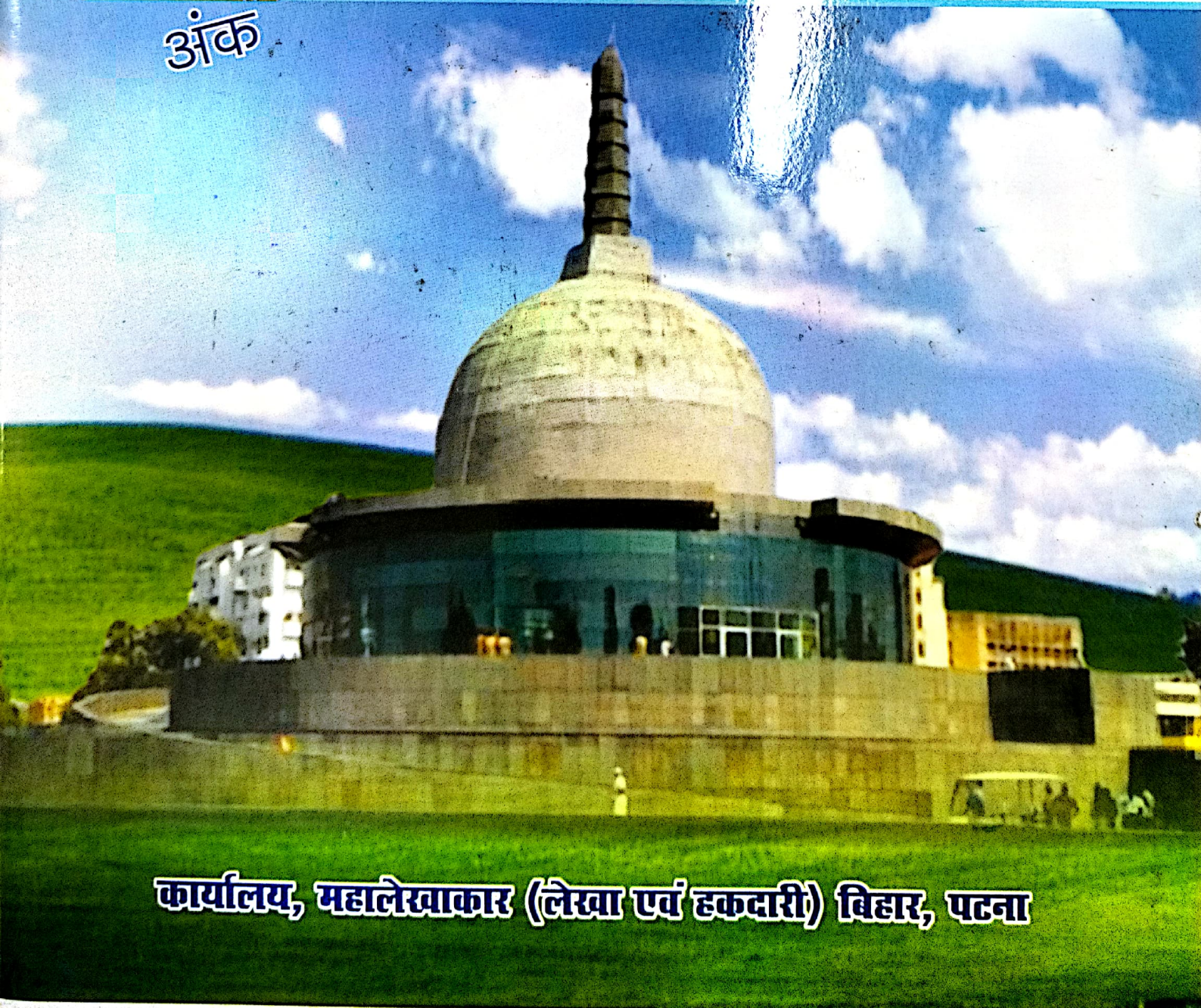




चेतना

22^{वां}
अंक

सितम्बर 2010



कार्यालय, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) बिहार, पटना

चेतना परिवार



बैठे हुए (बायें से दायें) मो० हाशिम अंसारी, लेखा अधिकारी; श्री समरेन्द्र चक्रवर्ती, उप महालेखाकार; श्री इन्द्रदीप सिंह धारीवाल, महालेखाकार (ले० एवं हक०), बिहार, पटना; श्री प्रवीर कुमार, वरिष्ठ उप महालेखाकार एवं श्री जॉर्ज सैमुएल, वरिष्ठ लेखा अधिकारी (महालेखाकार के सचिव) ।

खड़े हुए (बायें से दायें) श्री कृष्ण माधव सिंह, लेखाकार; श्री पियुष ओझा, वरिष्ठ लेखाकार; श्री बंशीधर मिश्र, लेखा अधिकारी (सम्पादक); श्री श्रीराम पाण्डेय, सहायक लेखा अधिकारी; श्री उपेन्द्र प्रसाद सिंह, सहायक लेखा अधिकारी; श्री अजय कुमार सिन्हा, सहायक लेखा अधिकारी; श्री निरंजन प्रसाद, सहायक लेखा अधिकारी एवं श्री राजेन्द्र कुमार, वरिष्ठ लेखाकार ।



चेतना

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

22वाँ अंक

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना
का कार्यालय, महालेखाकार भवन,
वीरचन्द पटेल मार्ग, पटना-800001

“चेतना” के इस 22वें अंक में प्रकाशित समस्त रचनायें लेखकों/रचनाकारों के अनुसार उनकी मौलिक एवं अप्रकाशित हैं तथा इसमें दिये गये विचार/मंतव्य उनके अपने हैं । इससे सम्पादक-मण्डल की किसी भी प्रकार की सहमति/असहमति नहीं है ।

चेतना

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

अंक : 22वाँ

सितम्बर, 2010

चेतना परिवार

* संरक्षक *

श्री इन्द्रदीप सिंह धारीवाल
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना

* प्रकाशन परामर्शदातृ समिति *

श्री प्रवीर कुमार
वरिष्ठ उप महालेखाकार, बिहार, पटना

श्री समरेन्द्र चक्रवर्ती
उप महालेखाकार, बिहार, पटना

* प्रधान संपादक *

श्री (मो.) हाशिम अंसारी
लेखा अधिकारी, हिन्दी कक्ष

* संपादक *

श्री बंशीधर मिश्र
लेखा अधिकारी

* सदस्य *

श्री निरंजन प्रसाद
सहायक लेखा अधिकारी
श्री श्रीराम पाण्डे
सहायक लेखा अधिकारी
श्री राजेन्द्र कुमार
वरिष्ठ लेखाकार, हिन्दी कक्ष
श्री पियुष ओझा
वरिष्ठ लेखाकार

स्वत्वाधिकार : महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना ।

प्रकाशन : चेतना

प्रकाशक : महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना का
कार्यालय, महालेखाकार भवन, वीर चन्द पटेल मार्ग,
पटना-800001

अंक : 22वाँ
(सितम्बर 2010)

मुख्य पृष्ठ : बुद्धा स्मृति पार्क, पटना

मूल्य : राजभाषा हिन्दी की अनवरत सेवा

मुद्रक : जी० बी० प्रिंटर्स
पोपुलर प्लेस,
लंगरटोली चौराहा, पटना-4

इस अंक में

क्र.सं.	विषय	रचना	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	चेतना परिवार			III
2.	अनुक्रमणिका			V
3.	महालेखाकार का संदेश			VII
4.	वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) पेंशन, राज. हक. एवं कार्य-लेखा का संदेश।			VIII
5.	उप महालेखाकार (लेखा एवं वी. एल. सी.) का संदेश			IX
6.	सम्पादकीय			X
7.	आपके पत्र			XII
8.	महालेखाकार कार्यालय में हिन्दी की गतिविधियाँ : 2009-2010 (रिपोर्ट हिन्दी कक्ष की)।	प्रतिवेदन	हिन्दी कक्ष	16
9.	“चन्दा मामा दूर के”	कहानी	श्रीमती संगीता रंजन	17
10.	सर्वगुण सम्पन्न : एक परिचय	निबंध	श्रीमती दीपशिखा	19
11.	“सीखो” “श्रमदान”	कवितायें	अनुज राज	20
12.	समझदारों की नासमझी	निबन्ध	श्री संजय कुमार	21
13.	“पैसा”	कविता	श्री आशुतोष झा	22
14.	“उम्मीद”	लेख	श्री वंशीधर मिश्रा	23
15.	संस्मरण-मसूरी की सैर (ट्रेकिंग से)	संस्मरण	श्री चन्द्रशेखर	24
16.	संस्मरणीय यात्रा	संस्मरण	श्री दुलारीशरण सिंह	26
17.	क्या भारत मेरा देश नहीं ?	कविता	श्री संजय कुमार मिश्रा	28
18.	“विफल”	कहानी	अश्विन अनुराग	29
19.	“कर भला, हो भला”	संस्मरण-कथा	श्रीमती सुषमा चौधरी	32
20.	“तुम कहते हो”	कविता	श्री अनुरूद्ध राय	33
21.	“बूढ़ी आँखों का गम”	कविता	श्री चन्दन कुमार	33
22.	पेंशन सॉफ्टवेयर- चुनौतियाँ और समाधान	लेख	श्री अमरेन्द्र कु० पाण्डेय	34
23.	“हमार कार्यालय” “मकई”	कवितायें	श्री बनवारी सिंह	40
24.	कैंसर में गुणकारी- “श्याम तुलसी”	स्वास्थ्य निबंध	वैद्य डा० रामेश्वर राम	41
25.	खून का रिश्ता	कहानी	श्री हरeram प्रधान	42
26.	भ्रष्टाचार	कविता	श्री राजेन्द्र कुमार	45
27.	कथनी और करनी	कहानी	श्री रामदेव झा	46

28.	काँटों का जीवन	कविता	श्री शशिशंकर झा	47
29.	बदला	कहानी	श्री श्रीराम पाण्डेय	48
30.	माँ तूझे सलाम	कविता	श्री अजय कुमार	50
31.	नवजीवन का संचार करो	कविता	श्री शिव शंकर तिवारी	50
32.	शाकाहार बनाम मांसाहार	निबन्ध	श्री भारत भूषण झा	51
33.	गेहूँ के ज्वारे का रस	निबन्ध	श्री विजय प्रसाद	53
34.	परिवर्तन	कहानी	श्रीमती मुक्ता बनर्जी	56
35.	एक अनुभव	कविता	श्री सुभाष चन्द्र गुप्ता	56
36.	सीख	कहानी	श्री सुरेन्द्र लाल दास	57
37.	माता-पिता	कहानी	सुश्री पम्मी कुमारी	58
38.	छींक-विचार	लेख	सुश्री रेणुका पासवान	59
39.	गुलाब	कविता	श्रीमती प्रतिमा सिन्हा	60
40.	जाको राखे साईया...	संस्मरण-कथा	श्रीमती नीता मिश्रा	61
41.	हिन्दी पखवाड़ा समारोह, 2009- एक सिंहावलोकन		हिन्दी कक्ष	63



महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना का



संदेश

कार्यालय की हिन्दी पत्रिका “चेतना” का 22वाँ (बाईसवाँ) अंक प्रकाशित करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। इसमें उत्तरोत्तर हो रहे अच्छे संकलन एवं सम्पादन के लिए रचनाकार, विशेषकर बच्चे एवं सम्पादक-मण्डल बधाई के पात्र हैं। परामर्शदातृ समिति के सदस्यों को भी मैं हृदय से साधुवाद देता हूँ। पाठकगण की सहभागिता एवं प्राप्त हो रही प्रतिक्रियायें काफी उत्साहवर्द्धक हैं एवं वे भी समान रूप से धन्यवाद के पात्र हैं।

यह पत्रिका जागृति-सूत्र के रूप में कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की साहित्यिक-विचार, सांस्कृतिक एवं सामाजिक सोंच एवं परिवेश, कार्यक्षेत्र तथा सकारात्मकता के प्रति सामुहिक अभिव्यक्ति को प्रतिबिम्बित करती है। इसके साथ ही कार्यालय में हिन्दी का सर्वांगीण विकास एवं प्रयोग की उपयोगिता दर्शाने का सुफल प्रयास है।

कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हृदय से बधाई देते हुए “चेतना” का बाइसवाँ अंक आप सबों के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ, जिसे पढ़कर पाठकगण आह्लादित महसूस करेंगे। पूर्ण विश्वास है कि “चेतना” अपने शाब्दिक अर्थ के अनुरूप खरी उतरेगी।

जय हिन्द ! जय हिन्दी !

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
बिहार, पटना



वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) बिहार, पटना का



संदेश

मुझे ये जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के 22वें अंक का शीघ्र प्रकाशन होने जा रहा है। यह पत्रिका हिन्दी के विकास में एक सराहनीय कदम है।

पत्रिका के प्रकाशन के लिए चेतना परिवार के सभी सदस्य एवं रचनाकार बधाई के पात्र हैं। उन्हें मेरी हार्दिक बधाई! आशा है, सरकारी कामकाज में हिन्दी को इससे प्रोत्साहन मिलेगा और हमलोग अपने दैनिक कार्यों में हिन्दी का अधिक-से-अधिक प्रयोग करेंगे एवं इसके विकास में अपना योगदान देंगे।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं सतत् प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

प्रवीर कुमार
वरिष्ठ उप महालेखाकार
(प्रशासन)



उप महालेखाकार (लेखा एवं वी. एल. सी.) बिहार, पटना का



संदेश

इस कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के 22वें अंक के प्रकाशन पर मुझे दिली खुशी हो रही है।

पत्रिका की सभी रचनाएँ रोचक एवं पठनीय हैं। आशा है, यह पत्रिका हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की हिन्दी में मौलिक लेखन प्रतिभा को प्रोत्साहन प्रदान करने में प्रेरक भूमिका निभाएगी।

आखिर में, मैं पत्रिका की अहर्निश प्रगति के लिए, उसके निरन्तर प्रकाशन के लिए सभी रचनाकारों को शुभकामनाएँ देता हूँ।

समरेन्द्र चक्रवर्ती

उप महालेखाकार

(लेखा एवं वी. एल. सी.)



संपादकीय....



अपने दिल के अन्तःकरण से पाठकों को शुभकामनाओं के साथ कार्यालय की हिन्दी पत्रिका “चेतना” के बाइसवें अंक को हिन्दी-प्रेमी पाठकों को प्रस्तुत करते हुए अपार खुशी हो रही है। पिछले दो अंकों की सम्पादकीय कार्य हेतु लोगों की प्रतिक्रियायें, सुझाव एवं तारीफों को मैं हृदय से स्वीकार करते हुए उनलोगों को हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

राष्ट्रभाषा हिन्दी की प्रगति के लिए यह पत्रिका ‘चेतना-परिवार’ की अमूल भेंट है जिसमें हिन्दी की रचनाओं के हर पहलू को इस दृष्टि से शामिल करने का प्रयास होता है कि पाठकों के मनोरंजन के साथ-साथ सरकारी कामकाज में राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रति जागरूकता लायी जा सके। इस प्रयास में हमारी सफलता हमारे साथ-साथ लोगों / पाठकों की जागरूकता को भी दर्शाता है। पत्रिका में सम्मिलित हुए रचनाओं के रचनाकारों, विशेषकर कर्मचारियों के बच्चे एवं रिश्तेदारों को जिनकी रचनायें पत्रिका में सम्मिलित हुए हों अथवा नहीं, हम सभी की ओर से साधुवाद है।

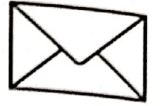
पिछले 61 वर्षों में राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी की प्रगति हम सबों के लिए काफी उत्साहबद्धक रही है। लक्ष्य की तरफ बढ़ता कदम लक्ष्य को चूमने के करीब है। हमें आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विवास है कि लक्ष्य की ओर लगातार बढ़ता कदम इस पूर्णता को प्राप्त कर लेगा। बस ! इसके लिए कहने से ज्यादा करने की आवश्यकता है। हम सबों से हिन्दी के राष्ट्रभाषा के रूप में पूर्णरूपेण व्यवहारिक होने की दृढ़ प्रतिज्ञायता को याद पुनः दिलाना चाहता हूँ जिसकी जागृति एवं कर्तव्यनिष्ठता से पूर्णता प्राप्त होगी।

इस कार्यालय के अधिकारियों, कर्मचारियों, उनके बच्चों एवं अन्य रिश्तेदारों से मिल रही रचनायें हमारे लिए काफी उत्साहबद्धक हैं। इनकी सहभागिता के बिना पत्रिका की पूर्णता संभव नहीं है। इनके साथ-साथ पाठकों की मिल रही प्रतिक्रियायें पत्रिका में लगातार खुबसूरती को बढ़ाने में हमारी मददगार हैं, इस बात को भुलाया नहीं जा सकता। पत्रिका हिन्दी-प्रेमी पाठकों के लिए उपयोगी हो, हमारा यही प्रयास है। साथ ही कार्यालय के कामकाज में उत्तरोत्तर बढ़ोतरी हो सके, इस दृष्टि को भी ध्यान में रखा जाता है।

हिन्दी के प्रति असीम प्यार रखने वाले हमारे विद्वान एवं सफल संरक्षक माननीय महालेखाकार श्री इन्द्रदीप सिंह धारीवाल तथा परामर्शदातृ समिति के सदस्यों को मेरे प्रति अगाध प्रेम एवं विश्वास दिखलाने के लिए मैं हृदय से कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। साथ ही सम्पादक-मण्डल के सदस्यों की सक्रिय सहभागिता, अपार-स्नेह एवं समय-दान को भी भुलाया नहीं जा सकता। इसी का परिणाम है कि पत्रिका लगातार पहले से ज्यादा अलंकृत एवं आकर्षक रूप की ओर हर दृष्टि से कदम बढ़ा पा रही है। पत्रिका के सुन्दर चित्रांकन, सफल प्रकाशन आदि के लिए जी. डी. अनुराग की भूमिका के साथ-साथ श्री अजय कुमार सिन्हा, सहायक लेखा अधिकारी तथा लेखा अधिकारी श्री अजय कुमार शर्मा का योगदान सराहनीय है। सम्पादक-मण्डल की ओर से उन्हें भी कोटि-कोटि आभार। पत्रिका के इस बाइसवें अंक को हृदय से हिन्दी प्रेमी पाठकों का प्रस्तुत करते हुए यह भी सूचित करनी है कि रचनाओं में दिये गये विचार आदि रचनाकारों के स्वयं की रही है तथा इनसे सम्पादक-मण्डल का कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। हम अपने पाठकों का हृदय से आभार प्रकट करते हुए अनुरोध करते हैं कि आलोचनाओं, तारीफों से हमें सूचित कर हमें अनुगृहित करें। यथोचित साधुवाद एवं बधाई सहित प्रस्तुत

जय हिन्द, जय हिन्दी।

(बंशीधर मिश्र)



“चेतना” के 21वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद।

मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि आपके कार्यालय की यह पत्रिका बहुत ही आकर्षक एवं सराहनीय है। आशा है भविष्य में यह पत्रिका और भी आकर्षक एवं सराहनीय होगी। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएं।

कोलकाता
दिनांक 18.12.2009

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी (हिन्दी)
कार्यालय, प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा)
पश्चिम बंगाल, कोलकाता

कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका ‘चेतना’ का 21वां अंक प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद।

अंक में समाविष्ट रचनाएं सुंदर हैं। “पटना एक नजर में” वहां के प्रमुख दर्शनीय स्थलों की सुंदर जानकारी दी गई है। श्री राजेन्द्र कुमार के लेख “भारतीय नारी” में समादिष्ट नारी वंदना का काव्य एवं प्रेरक काव्य “प्राणायाम” बहुत अच्छे लगे। स्वास्थ्य विषयक लेख, कहानियाँ, काव्य भी सुंदर हैं। अंक के सभी रचयिताओं एवं सम्पादक मण्डल को धन्यवाद।

राजकोट
दिनांक 18.12.2009

वरिष्ठ लेखा अधिकारी / हिन्दी कक्ष
कार्यालय, महालेखाकार (लेखा एवं हक.)
गुजरात, राजकोट

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका “चेतना” का 21वां अंक प्राप्त हुआ। तदहेतु धन्यवाद।

पत्रिका में निहित सभी रचनायें पठनीय एवं संग्रहणीय हैं। विशेषकर श्री बंशीधर मिश्र, स.ले.अ. का प्रेरक निबंध ‘भूल’, श्री गौरव आनन्द की कविता “वाह रे आजादी” तथा श्री अश्विनी अनुराग की कहानी “वो पहचान” संग्रहणीय तथा ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका के सफल सम्पादन तथा प्रकाशन के लिए संपादक मंडल बधाई का पात्र है।

शुभकामनाओं के साथ।

चण्डीगढ़
दिनांक 23.12.2009

प्रवर लेखा अधिकारी (हिन्दी)
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
पंजाब, चण्डीगढ़

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के 21वें अंक की एक प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई है।

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनायें अति उत्तम एवं भावप्रद तथा सारगर्भित हैं। पत्रिका का मुख्यपृष्ठ भी बहुत ही आकर्षक है। श्री शिवशंकर तिवारी द्वारा लिखित कविता "माँ" तथा श्री शशिशंकर झा द्वारा लिखित कविता "दुःख-सुख" विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

पत्रिका के सुन्दर सम्पादन के लिए मैं संपादक मण्डल को बधाई देता हूँ तथा पत्रिका की निरन्तर प्रगति की कामना करता हूँ।

नई दिल्ली

दिनांक 11.12.2009

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

कार्यालय, प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा

आर्थिक एवं सेवा मंत्रालय, नई दिल्ली

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "चेतना" के 21वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका में समाहित सभी रचनायें बहुत अच्छी हैं। रचनाओं में से श्री शिवशंकर तिवारी द्वारा लिखित कविता "माँ", श्री राजेन्द्र कुमार का निबंध "भारतीय नारी", एवं श्रीमती नीता मिश्रा का गजल "पहली मुलाकात" विशेष रूप से सराहनीय हैं। अन्य सभी रचनायें पठनीय हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

नई दिल्ली

दिनांक 10.12.2009

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

कार्यालय, महानिदेशक लेखा परीक्षा

(केन्द्रीय व्यय), नई दिल्ली

आपके द्वारा प्रेषित आपकी गृह पत्रिका "चेतना" की 21वां अंक प्राप्त हुआ। धन्यवाद।

पत्रिका में निहित सभी रचनायें सुपाठ्य और ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका की सभी रचनायें पठनीय व रोचक हैं। पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाओं के साथ।

बेंगलूर

दिनांक 01.12.2009

हिन्दी अधिकारी / हिन्दी कक्ष

महालेखाकार का कार्यालय (ले. व. ह.)

कर्नाटका, बेंगलूर

आपके कार्यालय से प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "चेतना" के 21वें अंक की एक प्रति हमारे कार्यालय में प्राप्त हुई है। आभार।

राजभाषा हिन्दी के प्रति सामान्य एवं विशिष्ट जन, कर्मचारियों एवं अधिकारियों को और अधिक चेतना सम्पन्न बनाने में आपकी पत्रिका "चेतना" एक महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। सन्दर्भित अंक भी अपने इस रचनात्मक अभियान में अग्रणी अनुभव किया जा रहा है। सर्जनात्मक सामग्री विशिष्ट एवं उत्कृष्ट हैं। पत्रिका का कलेवर भी आकर्षक, मनमोहक एवं नयनाभिराम है।

हमारे कार्यालय की ओर से उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामनाएं स्वीकार करें।

इलाहाबाद
दिनांक 10.11.2009

वरिष्ठ लेखाधिकारी / हिन्दी अनुभाग
कार्यालय, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
प्रथम, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'चेतना' के 21वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई है, तदहेतु धन्यवाद।

पत्रिका का मुख्यपृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं सुन्दर हैं। श्री संदीप कुमार का निबंध "पटना- एक नजर", श्री गौरव आनन्द की कविता "वाह रे आजादी", श्री विजय प्रसाद की कविता "मातृ प्रेम", श्री शिवशंकर तिवारी की कविता "माँ" एवं सुश्री प्रीति चन्द्रा का व्यंग्य "खुद को तलाशती हिन्दी" विशेष रूप से सराहनीय हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सभी रचनाकार एवं सम्पादक मण्डल बधाई के पात्र हैं।

कोलकाता
दिनांक 15.12.2009

आनन्द कुमार पाण्डेय
सहायक लेखा अधिकारी / प्रशा., हिन्दी सेल
एवं सह-सम्पादक- 'बन्दे मातरम्'
भारतीय लेखा एवं लेखा-परीक्षा विभाग,
महालेखाकार (लेखा एवं हक), पश्चिम बंगाल

आपके कार्यालय की त्रैमासिक पत्रिका "चेतना" का 21वां अंक प्राप्त हुआ। तदहेतु धन्यवाद।

पत्रिका के आवरण पृष्ठ पर प्रकाशित गुरूद्वारा पटना साहिब का चित्र एवं सभी चित्र आकर्षक हैं। पत्रिका में समादिष्ट रचनाएं पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय हैं। विशेषकर श्री राजेन्द्र कुमार का लेख "भारतीय नारी", श्री विजय प्रसाद का लेख "झूठ के कुहासों से उबरें, सत्य का आश्रय लें।" प्रेरक लेख हैं। श्री अनिल कुमार सिंह का व्यंग्य निबन्ध "राष्ट्रभाषा हिन्दी का यह कैसा सम्मान" एवं सुश्री प्रीति चन्द्रा का व्यंग्य "खुद को तलाशती हिन्दी" विचार प्रधान व्यंग्य लेख हैं। 'वो पहचान' एवं "वाह रे आजादी", "मातृ प्रेरणा", "प्राणायाम" कविताएं प्रशंसनीय रचनाएं हैं।

पत्रिका के उत्तम सम्पादन व संकलन हेतु संपादक मंडल को साधुवाद तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

ग्वालियर
दिनांक 07.12.2009

वरिष्ठ लेखा अधिकारी, राजभाषा
महालेखाकारी (लेखा एवं हकदारी) प्रथम का
कार्यालय, मध्य प्रदेश, ग्वालियर

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "चेतना" के 21वें अंक की पत्रिका प्राप्त हुई। तद्हेतु धन्यवाद। पत्रिका में सम्पादित सभी समाचार पठनीय, मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक हैं। श्री शंकर प्र. वर्मा द्वारा लिखित कविता "भारत की बेटी" में भारत की बेटी का महत्व, योगदान दर्शाकर एक उचित संदेश दिया है, श्री शिवशंकर तिवारी द्वारा लिखित कविता "माँ" में माता की सेवा में ही अच्छा इन्सान बन सकता है तथा श्री हरेराम प्रधान द्वारा लिखित कहानी "खेल-खेल में पढ़ाई तथा भाई की भलाई" बहुत सुन्दर सीख है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

नागपुर

दिनांक 19.11.2009

सुमन मिश्र

प्रभारी / राजभाषा अनुभाग

कार्यालय महालेखाकार (ले. व ह.) II

महाराष्ट्र, नागपुर

आपके द्वारा प्रेषित पत्रिका 'चेतना' के 21वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। एतद्भ धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है। पत्रिका की सभी रचनायें पठनीय, मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक हैं। श्री शंकर प्र. शर्मा, सहायक लेखा अधिकारी की कविता "भारत की बेटी", श्री बंशीधर मिश्र का लेख 'भूल' तथा श्री शिवशंकर तिवारी, वरिष्ठ लेखाकार की कविता 'माँ' विशेष रूप से सराहनीय हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं शुभकामनाएं।

इलाहाबाद

दिनांक 17.11.2009

सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी, हिन्दी अनुभाग

कार्यालय, प्रधान महालेखाकार

(सिविल आडिट), उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के 21वें अंक पढ़कर प्रसन्नता हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, कविता एवं सभी रचनायें रोचक, पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं और फोटो अत्यन्त सुन्दर हैं।

पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

बेंगलोर

दिनांक 26.11.2009

हिन्दी अधिकारी,

प्रधान महालेखाकार का कार्यालय

(सि.व.वा.ले.प.) कर्नाटक, बेंगलोर

कार्यालय, महालेखाकार (ले. एवं ह.) बिहार, पटना में

हिन्दी गतिविधियाँ सत्र-(2009-10)

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के द्वारा सरकारी कामगाज में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए प्रत्येक वर्ष एक वार्षिक कार्यक्रम जारी किया जाता है जिसमें हिन्दी के प्रयोग के लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं तथा इन्हीं लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु विभिन्न कार्यालयों से अपेक्षा की जाती है। इस वर्ष महालेखाकार (ले. एवं ह.) बिहार, पटना के कार्यालय ने अपेक्षित लक्ष्यों को प्राप्त करने में जो प्रगति की है, उसका विवरण निम्न प्रकार है:-

1. राजभाषा अधिनियम 3(3) का अनुपालन :

राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अन्तर्गत कुल 893 दस्तावेज जारी किए गये जिनमें हिन्दी में 893 तथा द्विभाषी में शून्य थे। कोई भी आदेश केवल अंग्रेजी में जारी नहीं किया गया।

2. हिन्दी पत्राचार :

वर्ष 2009-10 के दौरान इस कार्यालय में हिन्दी में प्राप्त कुल पत्रों की संख्या 1,39,894 थी जिसमें से 84,325 के उत्तर हिन्दी में भेजे गये। शेष पत्रों के उत्तर अपेक्षित नहीं थे। कार्यालय द्वारा भेजे गये कुल पत्रों की संख्या 84,538 थी। कुल भेजे गये पत्रों में हिन्दी पत्रों की प्रतिशत 99.81 थी।

3. राजभाषा कार्यान्वयन समिति :

उक्त वर्ष में राष्ट्रभाषा कार्यान्वयन समिति की नियमित तिमाही बैठकें सम्पन्न हुई। नियमतः वर्ष के दौरान 4 (चार) बैठकें आयोजित की गई जिसमें राजभाषा के कार्यक्रम एवं नीतियों के क्रियान्वयन पर विचार-विमर्श कर अधिकांश लक्ष्यों की पूर्ति की गई।

4. हिन्दी कार्यशाला :

इस वर्ष इस कार्यालय में 9 (नौ) हिन्दी कार्यशालाएँ चलाई गई जिसमें कार्यालय के 68 (अड़सठ) अधिकारियों / कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया।

5. हिन्दी पुरस्कार योजना :

वर्ष 2009 में इस कार्यालय के 23 (तेइस) अधिकारियों / कर्मचारियों को हिन्दी पुरस्कार योजना के अन्तर्गत मूल टिप्पण एवं आलेखन के लिए हिन्दी पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। यह पुरस्कार 'हिन्दी दिवस' के पावन अवसर पर प्रदान किया गया।

6. हिन्दी पखवाड़ा समारोह का आयोजन :

इस कार्यालय में वर्ष 2009-10 के दौरान 01 सितम्बर, 2009 से 15 सितम्बर, 2009 तक हिन्दी पखवाड़ा समारोह का वृहत आयोजन किया गया। पखवाड़ा के दौरान विभिन्न

प्रतियोगिताएँ तथा हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, संक्षेपण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता, हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता तथा कंप्यूटर पर हिन्दी टंकण प्रतियोगिता इत्यादि आयोजित की गई। विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों को 'हिन्दी दिवस' के उपलक्ष्य में परितोषिक प्रदान कर सम्मानित किया गया। 'हिन्दी दिवस' के सुअवसर पर कवि गोष्ठी भी आयोजित की गई तथा हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के 21वें अंक का लोकार्पण भी किया गया।

7. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति :

इस कार्यालय ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की छमाही बैठक में भाग लिया। बैठक में इस कार्यालय ने राजभाषा कार्यक्रम एवं नीतियों के कार्यान्वयन की समीक्षा में अपने विचार व्यक्त किये। इस कार्यालय ने राजभाषा के वार्षिक कार्यक्रम के अधिकांश लक्ष्यों की पूर्ति की सूचना समिति को दी।

8. हिन्दी शिक्षण योजना :

इस कार्यालय में अधिकारियों / कर्मचारियों के राजभाषा हिन्दी के ज्ञान की स्थिति बहुत अच्छी है। यहाँ 97 (सन्तानवे) अधिकारी एवं 359 (तीन सौ उनसठ) कर्मचारी हैं जिन्हें हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है। यहाँ सभी हिन्दी में ही कार्यालय का कामकाज करते हैं। इस कार्यालय में 04 (चार) आशुलिपिक हैं जो हिन्दी में प्रशिक्षित हैं। यहाँ 16 (सोलह) टंकक हैं जिनमें सभी हिन्दी में प्रशिक्षित हैं।

9. हिन्दी पुस्तकों की खरीद :

इस कार्यालय में 2009-10 के दौरान पुस्तकों के क्रय पर कुल 29,783/- रु. (उन्तीस हजार सात सौ तेरासी रुपये) व्यय किए गये जिसमें से हिन्दी पुस्तकों की खरीद पर 10,000/- रु. (दस हजार रुपये) व्यय किया गया।

10. हिन्दी टिप्पण :

इस कार्यालय में लगभग शत-प्रतिशत हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन किया जाता है। वर्ष 2009-10 के दौरान इस कार्यालय में कुल 57,527 फादलें खोली गई जिनमें 55,704 फाईलो में हिन्दी में टिप्पणियाँ लिखी गई।

इस प्रकार इस कार्यालय ने कुछ लक्ष्यों को छोड़कर वार्षिक कार्यक्रम के अधिकतम लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया है। अतः राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तिमाही बैठकों में वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति के लिए समीक्षा की जाती रही है। आशा है, आगामी वर्षों में शत-प्रतिशत लक्ष्यों की पूर्ति हो सकेगी।



चंदा मामा दूर के



□ श्रीमती संगीता रंजन

पत्नी श्री निरंजन प्रसाद,
सहायक लेखा अधिकारी

इस दिल को छू लेने वाली, कहानी में ममता का मर्म स्पर्श और संबंधों की आत्मा है। निजी जिंदगी में कभी-कभी निहायत ही साधारण से लगने वाले रिश्ते कभी-कभी इतने अमूल्य हो जाते हैं कि उनके आगे रिश्तों की परिभाषा छोटी पड़ने लगती है और ये जिंदगी के आकाश पर छा जाते हैं।

इस कहानी का सबसे सरल, मजबूत और आत्मीय पक्ष ये है कि केवल जन्म देने वाली माँ ही माँ नहीं होती।

अंशुमन, जो बहुत ही अमीर घराने का है, उसके पास सब कुछ है पर अपने व्यस्त पिता और खुद में मगन रहने वाली माँ के कारण प्यार से वंचित है। अंशुमन का बाल मन हमेशा माँ के प्यार को तरसता रहता है। वह प्रायः अकेला और उदास रहता है। उसका एकांकी मन इधर उधर भटकता रहता है। यही भटकाव एक दिन उसे अपने दोस्त राहुल के यहाँ लिए जाती है, जहाँ उसे पता चलता है कि माँ क्या होती है।

राहुल की माँ सुनैना अपने राहुल के साथ अंशुमन का भी ख्याल रखती है। बाद में जब सुनैना की राहुल से अंशुमन के बारे में पता चलता है तो पहले सहानुभूति फिर यही सहानुभूति ममता में बदल जाती है। अब राहुल के साथ अंशुमन भी सुनैना का दुलारा बन जाता है। मासूम अंशुमन खिल उठता है। अब वह सुनैना को ही अपनी माँ समझने लगता है। वह सुनैना का लाडला किशन बन जाता है। तो सुनैना उसकी यशोदा माँ।

लेकिन, अंशुमन के माता-पिता को जब पता चलता है कि उसका बेटा किसी और को अपनी माँ मानने लगा है तो उन्हें अनजाने में हुई अपनी गलती का अहसास होता है। वे अंशुमन को सुनैना से दूर करने का प्रयास करते हैं। लेकिन तब तक अंशुमन सुनैना से बेहद जुड़ चुका होता है और सुनैना अंशुमन से। अंत में, अंशुमन के पिता अपना ट्रांसफर दूसरे शहर में करवा लेते हैं और उसे लेकर दूर चले जाते हैं।

दिन महीने, फिर महीने साल में बदल जाते हैं। अंशुमन कुछ दिन तो उस माँ को बहुत याद करता है, फिर धीरे-धीरे याद धुंधली पड़ जाती है।

लेकिन सुनैना अपने अंशुमन को नहीं भूल पाती। उसे ऐसा लगता है जैसे उसका राहुल उससे दूर हो गया है। सुनैना को हर पल अपने किशन के नन्हें कदमों की आहट का अहसास होता है उसे ऐसा लगता है जैसे बस अभी आ गया..... और अपनी तोतली भाषा में बोल रहा हो... माँ माँ! तुम कहाँ हो ?

कभी अचानक पीछे से आकर आंखें बंद कर देना.. मम्मा..... मैं कौन हूँ ?

सुनैना की आंखें उसकी याद में छलक पड़ती हैं। उस आंसू की बूंदें कभी अंशुमन की तस्वीर पर गिरती हैं तो कभी उसके खिलौने पर।

अंशुमन को गुलाब का फूल बहुत पसंद हुआ करता था, इसलिए वह उसके हर जन्मदिन पर एक गुलाब का पेड़ अपने बगीचे में लगाती है। इस विश्वास के साथ कि एक दिन अंशुमन इस माँ के पास जरूर आएगा। लेकिन कई वर्ष बीत जाते हैं पर उसका किशन नहीं आता, और सुनैना की आंखें थककर एक दिन हमेशा के लिए बंद हो जाती हैं।

एक अजीब संयोग !

अंशुमन उसी वक्त वापस उस शहर में आता है। उसे माँ की बहुत याद आती है। वह खुशी-खुशी माँ से मिलने आ रहा है। उसे अपने बचपन का एक-एक लम्हा याद आ रहा है, सोचता है- कैसी दिखती होगी मेरी माँ ? अब तो बरसों बीत गए। तभी उसके बगल से एक शव-यात्रा गुजरती है। वह प्रणाम करता है। शव-यात्रा उसके बगल से होते हुए चली जाती है।

घर आकर अंशुमन बाहर से ही पुकारता है... माँ.... लेकिन देखता है कि वहाँ मातमी सन्नाटा छाया है, पता चलता है माँ नहीं रही और लोग अभी-अभी शव-यात्रा पर जा चुके हैं। तो क्या ये वही शव-यात्रा थी ? वह भागा-भागा शमशान घाट पहुँचता है देखता है- राहुल मुखाग्नि दे चुका है और लाश जल रही है।

अंशुमन की आँखें नम है और पास खड़ा राहुल मौन.
... "तुमने आने में देर कर दी अंशुमन"

राहुल की बात उसे बहुत कुछ कह गई। अंशुमन की गमगीन नम आँखें भींग गई।

सब जा चुके हैं। अंशुमन माँ की राख को हाथ में लेकर रोता है। उसे एक-एक बात याद आती है- कैसे माँ उसे गोद में सुलाती थी। उसे अपने हाथों से खाना खिलाती थी। उसे बेहद प्यार करती थी।

वापस उस घर में आता है तो देखता है, वह यहाँ जिस खिलौन से खेलता था वह आज भी माँ ने सम्भाल कर रखा है। सब कुछ वैसा-का-वैसा। बाहर आता है तो देखता है, एक कतार में बगीचे में गुलाब का फूल लगा है। फूलों की पंखुड़ियों को छूते हुए उसे ऐसा महसूस होता है जैसे उसका माँ से मिलन हो रहा हो। तभी गुलाब के फूल हवा में लहराने लगे, मानो कहीं माँ के हृदय को सुकून मिला हो- मानों कहीं माँ की ममता तृप्त हुई हो। वह फूल को हाथ में लेकर फूट-फूट कर रोने लगता है। आंसू की झर-झर धारा गुलाब के फूलों पर गिरने लगी... और गुलाब की पंखुड़ियाँ तृप्त हो

लहराने लगी। वर्षों की प्यासी ममता की आवाज उन फूलों में फिर कहीं सुनाई दी। उसे महसूस हुआ गुलाब की पंखुड़ियों में माँ है और कह रही है- "मैं न कहती थी, मेरा अंशुमन जरूर आएगा।"

अंशुमन अपने कमरे में उदास बैठा है। सामने माँ की तस्वीर है। वह सोचता है- मैं माँ से थोड़े समय के लिए जुड़ा, पर माँ तो हमेशा के लिए जुड़ चुकी थी। वह मेरी यशोदा माँ थी और मैं उसका किशन। काश ! मैं माँ से दूर नहीं गया होता तो आज माँ हम सब के साथ होती। अंशुमन की आँखें नम हो जाती है। बोलता है- प्यार ढूँढ़ने तो मैं तुम्हारे पास आया था.
... सजा तुम क्यों भुगती ? "माँ"।

अंशुमन माँ की याद में एक अनाथाश्रम का निर्माण करवाता है। अनाथाश्रम के प्रांगण के बीचो-बीच में सुनैना की मूर्ति स्थापित है। और उसके चारों तरफ गुलाब का फूल।

आज सुनैना की पूण्य तिथि है और अनाथाश्रम का उद्घाटन भी। वह सभी के साथ उद्घाटन समारोह सम्पन्न करता है।

अंशुमन अपनी पत्नी और बच्चों के साथ माँ की मूर्ति के पास खड़ा है, तभी सामने देखता है कि आया छोटे-छोटे बच्चों को अपने हाथों से खाना खिला रही है। अंशुमन ध्यान से देखते हुए कहीं खो जाता है- उसे ऐसा लगता है- माँ उसे खाना खिला रही है और वह बोल रहा है- माँ जल्दी से खिलाइये न... बहुत भुख लगी है, आ.... ।



इस संसार में प्यार करने लायक दो वस्तुएँ हैं - एक दुःख और दूसरा श्रम । दुःख के बिना हृदय निर्मल नहीं होता और श्रम के बिना मनुष्यत्व का विकास नहीं होता ।

सर्वगुण सम्पन्न : एक परिचय



□ श्रीमती दीपशिखा
पत्नी श्री चन्दन कुमार,
वरिष्ठ लेखाकर

“सर्वगुण सम्पन्न” शब्द ही अपने आप में पूर्णतः परिपूर्ण है। जितना सहज ढंग से उसका अर्थ हम समझते हैं या दूसरों को समझाते हैं, उसे अपने जीवन में अपनाना बहुत कठिन है। जब कभी हम तुलना शब्द का प्रयोग करते हैं तो तुलना उनके गुणों की संख्या का अन्तर की गणना के सापेक्ष ही की जाती है। कभी हम इस बाबत सोचते हैं कि यह सर्वगुणसम्पन्नता में निहित गुण, कहाँ से ली गई है, उसकी संख्या क्या है एवं पैमाना क्या है ? ये सारे गुण अपने परिवेश में रहने वाले पशु-पक्षी के अच्छे गुणों का समावेश हैं यह गुणों की संख्या बीस है। ये पशु-पक्षी हैं, सिंह, मुर्गा, कुत्ता, गदहा, कौआ और मोर।

(क) सिंह से दो गुण (1) हमें बलवान एवं शक्तिमान होना, (2) अगर आपका कोई दुश्मन हो तो उसका जड़मूल सफाया करके ही आराम करना चाहिए।

(ख) मुर्गा से पांच गुण (1) हमें नित्य प्रातः काल उठना चाहिए। (2) दूसरों को हिस्सा कभी भी स्वयं नदी लेना चाहिए। (3) सर्वथा मिल जुलकर रहना चाहिए, (4) यदि कोई आपसे लड़ने को आतुर हो तो उसका मुहतोड़ जवाब देना भी आना चाहिए। (5) अपनी जीत की आस को अन्त तक नहीं छोड़ना चाहिए।

(ग) कुत्ते से छह गुण (1) कुत्ता, स्वामीभक्त का ज्वलन्त उदाहरण है। इससे अच्छा स्वामी भक्त नहीं हो सकता। (2) इसे जितना खाना मिला उसे संतुष्टि के साथ खा लेता है। (3) पुनः किसी खाद्य वस्तु के लिए जिद्द नहीं करता। (4) इसके सूँघने की शक्ति प्रबल से प्रबलतम होती है। (5) किसी विपदा के आने के पहले उसे भाप जाना भी उसे आता है। (6) यह अपने स्वामी का मूड (स्वभाव) भी अच्छी तरह समझता है।

(घ) गदहे से दो गुण (1) पहला गुण है कि आप पर काम का कितना भी दबाव हो उसे धीरे-धीरे करते जाना चाहिए। (2) अगर बीच में आपका ध्यान कोई भंग भी करे तो भी अपने मंजिल पर जाने के रास्ते से कभी भी भटकना नहीं चाहिए।

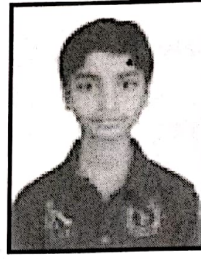
(ङ) कौए से तीन गुण (1) पहला गुण है कि हम सभी को इस पक्षी के अनुसार चौकन्ना रहना सीखना चाहिए। (2) अपनी सोचने की शक्ति हमेशा क्रियाशील रखना इस पक्षी को बखूबी आता है। (3) प्रत्यात्मक क्षमता का यह पक्षी धनी है।

(च) राष्ट्रीय पक्षी मोर से दो गुण (1) जब वर्षा की बूंदों से हम सब प्रसन्न होते हैं तो मोर भी प्रसन्न होता है एवं अपनी प्रसन्नता दर्शाने के लिए वह नृत्य करने लगता है। अर्थात् दूसरों की खुशी में ही वह अपनी खुशी को ढूँढ़ता है। (2) अगर वह पक्षी स्वयं भी खुश है तो भी नृत्य करता है यानि दूसरों का मन भी मोह लेता है। यह पक्षी सामंजस्य का धनी है।

अतः यह कुल बीस गुणों का समावेश मनुष्य को अपने जीवन में ग्रहण करनी चाहिए। इसी आधार पर हम अपने परिवेश में रहने वाले व्यक्ति की तुलना या वो मेरी तुलना कर सकता है। सर्वगुण सम्पन्नता ही एक सफल व्यक्तित्व का परिचायक है। यह गुण जात-पात अमीरी-गरीबी से परे है। यह गुण की अग्नि परीक्षा अभाव / अधिकता दोनों स्थिति में होती है।



अध्ययन, विचार, मनन, विश्वास एवं आचरण द्वारा जब एक मार्ग को मजबूती से पकड़ लिया जाता है तो अभीष्ट उद्देश्य को प्राप्त करना बहुत सरल हो जाता है।



□ अनुज राज

कक्षा-VI 'A'

पिता- श्री राजेश कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

सीखो

सदा परिश्रम करना सीखो ।
मातृभूमि के लिए मरना सीखो ॥
कभी न दुख में डरना सीखो ।
कष्ट सभी का हरना सीखो ॥
अपने पथ पर बढ़ना सीखो ।
गौरव-गिरि पर चढ़ना सीखो ॥
अच्छी पुस्तक पढ़ना सीखो ।
चरित्र उज्ज्वल गढ़ना सीखो ॥
मीठी बातें कहना सीखो ।
हँसकर दुख-सुख सहना सीखो ॥
स्नेह-सिंधु में बहना सीखो ।
मेल-जोल से रहना सीखो ॥
जननी की जय गाना सीखो ।
जग को राह दिखाना सीखो ॥
सच्चाई के पथ पर चलना सीखो ।
प्रभु के लिए शीश झुकाना सीखो ॥



श्रमदान

श्रम की महत्व पहचानो,
अति मूल्यवान इसको जानो ।
सभी धनों का यह साधन मानो,
इसका ही सदा गुणगान करो ।
श्रमदान करो, श्रमदान करो ॥

श्रम वैभव का है दाता,
उज्ज्वल भविष्य का है निर्माता ।
सौभाग्य बनाता जन-जन का,
तुम भी इसका सम्मान करो ।
श्रमदान करो, श्रमदान करो ॥

श्रम से ही खेती लहलहाती,
धरती है सोना उपजाती ।
इसका सम्बल अपना करके ।
भारत को स्वर्ग समान करो ।
श्रमदान करो, श्रमदान करो ॥

बाधाओं में भी सदा मुस्कुराओ,
नया सवेरा जमीं पर लाओ ।
बुझने न पाए ज्योति श्रम की,
इसका सदैव ही ध्यान करो ।
श्रमदान करो, श्रमदान करो ॥



स्वार्थ, अहंकार और लापरवाही की मात्रा बढ़ जाना ही किसी
व्यक्ति के पतन का कारण होता है ।

समझदारों की नासमझी

□ श्री संजय कुमार

लेखा अधिकारी

प्राचीन काल में अंग देश के नरेश आत्मप्रकाश को अमर होने की इच्छा जागृत हुई। राजा आत्मप्रकाश सदैव इसी उधेड़ बुन में लगे रहते थे कि कैसे अमरत्व को प्राप्त की जाए। एक बार उनकी मुलाकात देवर्षि नारद से हुई, तो उन्होंने अपने मन की बात देवर्षि को कह सुनायी। देवर्षि राजा आत्मप्रकाश को लेकर यमराज के दरबार में पहुँचे एवं राजा के मन की बात यमराज को बताते हुए उनसे सहयोग की याचना की। यमराज ने असमर्थता प्रकट करते हुए कहा कि हम तो विधि के लिखित आदेश का अक्षरशः पालन करते हैं, फिर भी देवर्षि के आग्रह पर यमराज देवर्षि एवं राजा के साथ विधि के पास जाने को तैयार हो गए। विधि के यहाँ पहुँच कर सबों ने उनकी स्तुति-वंदना की एवं राजा के मन की बात बताते हुए उनसे सहयोग की याचना की। विधि ने भी अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए कही कि मैं तो ब्रह्मा जी के आदेश से बंधी हूँ एवं उनके आदेश पर ही मेरे द्वारा यमराज हेतु कार्यादेश जारी किए जाते हैं। ब्रह्मा जी के पास पहुँच कर सबों ने अभिवादन के पश्चात् राजा के कष्ट निवारण हेतु सहायता की याचना की। ब्रह्मा जी ने विधि को राजा के भाग्य पढ़कर सुनाने का आदेश दिया। विधि ने जो पढ़ा वह इस प्रकार था- जिस समय राजा आत्मप्रकाश, देवर्षि नारद, यमराज एवं विधि ब्रह्मा जी के दरबार में उपस्थित होंगे, उसी समय राजा आत्मप्रकाश मृत्यु को प्राप्त हो जावेंगे। इतना सुनते ही राजा आत्मप्रकाश धड़ाम से गिरते हैं और उनकी मृत्यु हो जाती है, तत्कालीन डाक्टरों ने मृत्यु का कारण हृदयागति का रुकना बताया।

यह कहना एक दन्त कथा हो सकती है, लेकिन क्या आप अंग देश के राजा आत्मप्रकाश की नियति पर विचार करना चाहेंगे। यह अंग देश क्या है और इसका राजा कौन है ? यह अंग देश हमारा शरीर है, हमारे अंग अवयव हैं और इसके राजा हैं हम स्वयं। हम अमर तो होना चाहते हैं, हम यह तो चाहते हैं कि हम निरोग रहें, हम यह तो चाहते हैं कि सभी हमारा कहा माने, किन्तु कार्य हम वही करते हैं, जो हमें बिमारी, अवसाद, मनोमालिन्य, निराशा, कुढ़न, घुटन, तनाव और अन्ततः मृत्यु की ओर धकेल देता है।

हम निरोग तो रहना चाहते हैं किन्तु प्रकृति की शक्तों से अलग अपनी शक्तों पर जैसे:-

1. हम देर रात तक जगते हैं तो प्रातः हम उठेंगे कैसे?

2. हम सूर्योदय के बाद भी सोते रहते हैं तो क्या हमारा दिन चिड़चिड़ापन रहित भी हो सकता है ?

3. हम ठुंस-ठुंस कर भक्ष्य-अभक्ष्य कुछ भी खाते रहते हैं तो सभी बिमारियों की जड़ कब्ज कभी हमारा पीछा छोड़ेगा ?

4. हम श्रम से जी चुराते हैं, हम व्यायाम नहीं करते हैं फिर भी हम कैसे सोचते हैं कि हमारे हाथ, पैर, जीगर, गुर्दे भी सही ढंग से कार्य करते रहेंगे।

5. हम दूसरों के साथ वैसे ही व्यवहार करते हैं जो हमें अपने लिए पसंद नहीं होता है और जब कभी हमें अपनी परछाई पर पैर रखने की नौबत आती है तो हम तिलमिला उठते हैं और अनावश्यक तनाव पाल बैठते हैं।

6. अन्य बहुत सारे ऐसे कारण हैं जो कि आराम से गिनाये जा सकते हैं जो आप सभी जानते हैं।

जब हम स्वयं अपने साथ न्याय नहीं कर सकते हैं तो क्या हम दूसरों के साथ न्याय कर पायेंगे और ऐसी परिस्थिति में क्या हमें दूसरों से किसी प्रकार के सहयोग या न्याय की भी आशा करनी चाहिए ? हम निरोगिता डाक्टर के क्लिनिक में दुदते हैं और जबतक डाक्टर उपचार बताते हैं तबतक कभी-कभी बहुत देर हो चुकी होती है और हम देवर्षि, यमराज, विधि को लेकर ब्रह्मा जी के पास पहुँच चुके होते हैं।

जो लोग भी साधना के मार्ग पर चलना चाहते हैं उन्हें सर्वप्रथम अपने प्रति न्यायिक दृष्टिकोण अपनानी ही होगी, क्योंकि एक स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मनुष्य (आत्मा/परमात्मा) रह सकता है।

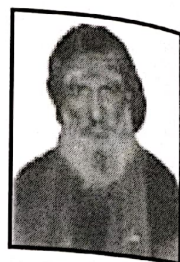
भोग एवं त्याग/दमन (इच्छाओं को बलपूर्वक नष्ट करना) की अति ही समस्त कष्टों का कारण है, इन दोनों के मध्य एक तीसरी दिशा आत्म संयम की है। भोग हो या त्याग, दोनों की अति जीवन को नष्ट करने वाले हैं, यही अज्ञान है, अन्धकार है, विनाश है, जो इस सच को आत्मसात् करते हैं। दोनों की अति छोड़कर समभाव को प्राप्त करता है। ऐसा करते ही उसे अनायास ही मिल जाता है स्वाभाविक, सहज एवं स्वास्थ जीवन। उसका जीवन खुशियों की खिलखिलाहट से भर उठता है।

ॐ शान्तिः । शान्तिः ॥ शान्तिः ॥



दूसरों की निन्दा और त्रुटियाँ सुनने में अपना समय नष्ट मत करो ।

पैसा



□ श्री आशुतोष झा

वरिष्ठ लेखाकार

एक मैं ही क्या, लोभी तो है सारा जमाना पैसे का
इस दुनिया में जिसको देखो, वही दिवाना पैसे का ।
मीना, बादाम, जाम, सुराही, और मैखाना पैसे का
साथी, साकी, रंगे महफिल और पैमाना पैसे का ।

पैसा हो तो आते जाते सब ही राम सलाम करें
पैसा नहीं तो कदम-कदम पर रूस्वा और बदनाम करें ।
पैसे ही से बन जाते हैं सारे बिगड़े काम यहाँ
पैसे ही का खेल तमाशा देखा सुब्हो शाम यहाँ ।
पैसे से ब्योपार चले घरबार चले संसार चले
पैसे ही से औनर बाबू सड़क पे मोटर कार चले ।
पैसा हो तो मन भी चंगा, फुर्ती भी, रानाई भी
नैने में ज्योति, पेट में रोटी, और गले में टाई भी ।
पैसे ही से ताकत भी है, नहीं तो फिर बेजान हैं हम
पैसा है तो इज्जत भी है, नहीं तो बेईमान हैं हम ।
गौर से देखो आज कहाँ भगवान की पूजा होती है
पैसा जिसके पास है उस इंसान की पूजा होती है ।
पूजा, भक्ती, इज्जत, चाहत, सब अफसाना पैसे का
इस दुनिया में जिसको देखो वही दिवाना पैसे का ।
बेचारे मजदूर, मिलों में और भला क्या करते हैं
जला, जला के खून पीसना, पैसा पैदा करते हैं ।
तन पर फटे पुराने कपड़े हाल भी जैसा-तैसा है
जितनी मेहनत करते हैं ये उससे कम ही पैसा है ।
मुल्ला, पंडित, दीन धर्म की बात बतायें पैसे पर
घर-घर में मीलाद पढ़ायें कथा सुनाये पैसे पर ।
डंडा, झंडा नेता लीडर वोट एलेक्शन पैसे का
कुर्सी, गद्दी, राज सिंघाषण, राशन भाषण पैसे का ।

पैसा है तो जगमग, जगमग, दरवाजा अंगनाई भी
पैसे ही से, शादी, डोली, ढोलक और शहनाई भी ।
पैसे ही से होती है, तामीर एबादत खानों की
गिर्जा, गुरुद्वारा और मस्जिद मंदिर और बुतखानों की ।
पैसा ही इंसान को दुनिया भर की सैर कराता है
पैसे में वो ताकत है के चांद पे भी ले जाता है ।
सारी कहानी पैसे की है सारा फसाना पैसे का
इस दुनिया में जिसको देखो वही दिवाना पैसे का ।
पैसे से कानून खरीदेंगे, ये मान के चलता है
पैसा है तो शान से कातिल, सीनातान के चलता है ।
पैसा हो तो खून किसी का करना, मुशकिल बात नहीं
रिश्वत का ये दौर है प्यारे थामेगा कोई हाथ नहीं ।
पैसे से हर एब छुपाली, पैसे का हर काम बड़ा
छोटे मुंह से बात बड़ी है, दर्शन छोटा नाम बड़ा ।
पैसे की खातिर जायज है, ब्राउन सुगर का धंधा भी
पुन्य का कोई काम हो दे दो, लाख रुपये का चंदा भी ।
पैसा है तो पाप को धोलो, पुण्य काये भी काम करो
पैसे से पावन हो जाओ, दर्शन सातों धाम करो ।
पैसा है तो अरथी पर भी बोझ लदेगा हारों का
पीछे-पीछे, मजमा होगा सारे रिश्तादारों का ।
पैसे से कू-कर्म करोगे धर्म राज कहलाओगे
बैठ के पैसे के रॉकेट पर सीधे स्वर्ग में जाओगे ।
आँसू यहाँ से स्वर्ग तलक है आना जाना पैसे का
इस दुनिया में जिसको देखो वही दिवाना पैसे का ।



मनुष्य का अपने आप से बढ़कर न कोई शत्रु है और न मित्र ।

उम्मीद



□ श्री वंशीधर मिश्रा

‘उम्मीद’ (Expectation) का शाब्दिक अर्थ अपने आप में काफी व्यापक है। सच कही जाय तो “उम्मीद” जीवन का आधार है। आम बोलचाल की भाषा में लोग कहा करते हैं कि “दुनिया उम्मीद पर ही टिकी है।” “उम्मीद” ही एक ऐसा सहारा है जिसके सहारे दुःखी लोग सुख की “उम्मीद” लगाये जीवन बसर करते हैं तथा सुखी लोग और और की चाहत लिये “उम्मीद” लगाये जीवन बसर करते हैं। जीवन का हर मोड़ परीक्षाओं से भरा पड़ा है। इन्हीं परीक्षा की घड़ियों को आशावादी लोग अच्छे की “उम्मीद” लिये तथा निराशावादी लोग “बुरे की उम्मीद” लिये जीवन बसर करते हैं।

यह प्रकृति का नियम है कि उजाला के उपरान्त अंधेरा तथा अंधेरा के उपरान्त उजाला होता है। जीवन की राह में भी प्रकृति के इस नियम का पालन सर्वथा होता है। जीवन के पथ पर “अंधेरा” को “दुख” का नाम दिया गया है तथा “उजाला” को सुख का नाम दिया गया है। सार्थक सोच रखने वाले दुःख की घड़ी में हमेशा उजाले की किरण को देखते रहते हैं, अर्थात् सुख का जीवन आने की “उम्मीद” लगाये रहते हैं। दूसरी ओर निरर्थक सोच वाले हमेशा दुःखयुक्त स्थिति/जीवन की ही उम्मीद करते हैं। यही वह स्थिति अथवा समझ है जिसे चिकित्सीय भाषा में अवसाद/डिप्रेशन की स्थिति कही जाती है।

अवसाद/डिप्रेशन की स्थिति आदमी के लिए काफी घातक होती है। वैसी स्थिति में आदमी को उल्टी सोच (Negative Thinking) के अलावे कुछ भी नहीं दिखता है। दुनिया की हर बातों में गुण एवं दोष, दोनों समाहित होते हैं, परन्तु अवसाद ग्रस्त व्यक्ति सिर्फ दोष पर ही विचार करता है। उसे दुनिया के किसी भी क्षेत्र में गुण दिखाई ही नहीं पड़ता है। अर्थात् वह अच्छे की उम्मीद ही नहीं करता। अच्छे की “उम्मीद” न करना ही उसके दुःख का कारण बन जाता है तथा वह व्यक्ति निराशावादी होता है और जीवन से हारतक मान बैठता है और अपनी जीवन लीला तक समाप्त कर लेता है। ऐसी परिस्थिति

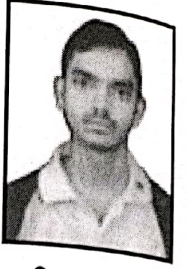
में एकान्तवास से उसे बचाना चाहिए तथा लोगों को भी चाहिए कि वह अकेला न रहने पाये। अमुक जगह अमुक विद्यार्थी ने आत्महत्या कर ली कारण की जानकारी यह मिलती है कि परीक्षा में अच्छा अंक नहीं आया। अच्छी सफलता नहीं मिली आदि-आदि। यह परिदृश्य “उम्मीद” के विपरीत “नाउम्मीदी” को दर्शाता है। आदमी के प्रयास के बावजूद प्रतिकूल परिस्थितियों का बनना क्षणिक हो सकता है, परन्तु सर्वथा स्थितियाँ प्रतिकूल ही नहीं होती हैं। आदमी यदि सार्थक प्रयास करते हुए अच्छी की “उम्मीद” करता है तो अच्छा समय निश्चित ही उसे देखने को मिलती है। समाज में लोगों को चाहिए कि अपने-अपने लोगों में इस बात को दिल में किसी भी स्थिति में घर न करने दे कि वो अच्छे समय की “उम्मीद” रखन भूल जाए। इस तरह हमारे-आपके बीच अच्छे होने की “उम्मीद” सार्थक प्रयास के साथ करने की परिस्थिति बननी चाहिए। यह प्रयास आदमी को सर्वथा सार्थक सोच (Positive Approach) की ओर प्रेरित करता है। आदमी कभी भी अवसाद की स्थिति में नहीं पहुँचता है तथा अच्छे की “उम्मीद” ही सर्वथा रखता है।

यह भी देखा जाता है कि हर व्यक्ति हर क्षेत्र में सिद्धहस्तता प्राप्त नहीं कर पाता है। संभव है कि उसे जिस दिशा में मोड़ा जा रहा हो उससे कई गुण बेहतर स्थिति किसी अन्य क्षेत्र की ओर उसकी हो। इस बात की परख बहुत ही आवश्यक है। दुनिया के हर क्षेत्र में व्यक्ति के अभिभावक से यह “उम्मीद” की जानी चाहिए कि अपने लोगों की सही परख उसके द्वारा हो और उसकी प्रतिभा का निखार उसकी काबलियत वाले क्षेत्र / दिशा में हो। ऐसे कई उदाहरण हैं जिसमें छिपी प्रतिभा की पहचान बाद में दिख पड़ती है और जीवन के सही पथ पर वह व्यक्ति चलता दिख पड़ता है अतः हर क्षेत्र में उम्मीद यह की जानी चाहिए कि प्रतिभा के अनुरूप व्यक्ति का विकास हो एवं प्रतिभा में उत्तरोत्तर निखार आये। उम्मीद को कभी भी अपेक्षा नहीं बनानी चाहिए, कारण कि अपेक्षा करने की स्थिति में जब आदमी उपेक्षित होता है तो वह काफी दुःखदायी होता है तथा बहुत कम दुःख उससे उपर होता है।



सबकी मंगल कामना करें, इससे आपका भी मंगल होगा।

संस्मरण मसूरी की सैर (ट्रेकिंग से)



□ श्री चन्द्रशेखर
सुपुत्र श्री अनिरुद्ध राय
से. नि. पर्यवेक्षक

मौन बैठे उन युवा तुकों की नजर दूर संकरी यंग डंडियों पर थी। उद्देश्य था समस्त बाधाओं को चीरते हुए पहाड़ों के अंतिम शिखर तक पहुँचना जो उन्हें हमेशा बौना साबित कर रहा था। फिर क्या था, जवानी ने उन्मत्त किया और आप देश न बात सभी ने एक स्वर में हामी भर दी। लक्ष्य था मसूरी की सुरम्य पहाड़ियों को देखना, फिर क्या था। देखते-देखते सभी सामान एकत्रित कर लिये गये। मसलन मेस के संतरे, नीबु ग्लूकोज डी और पीने का पानी।

ऐसे तो देहरादून से मसूरी 30 कि.मी. पड़ता है पर ट्रेकिंग के माध्यम से यह रास्ता महज 20 कि.मी. का रह जाता है। प्रस्थान का समय अगले दिन सूर्योदय से पूर्व तय किया गया जिससे सायंकाल तक हम वापस आ सकें। हमारे ग्रुप में कुल पांच नौजवान थे जिनमें एक पहाड़ों का रहने वाला था। यूँ कहे ज्यादा अच्छा होगा, “हमारा गाइड”। प्रातः पांच बजे ही हम निकल गये, हाथ में एक-एक टार्च लिये, चूँकि गर्मी का मौसम था इसलिए प्रायः 05.30 बजे तक सूर्य निकल ही जाता है। गार्ड से बचते-बचते छात्रावास से तो हम निकल गये पर जंगल की घोर शांति हमें आने वाली तूफान का आभास करा रही थी। एकबात और हम पांचों नौसिखिये थे मतलब कि कोई भी आज के पूर्व उन पहाड़ियों पर कभी भी नहीं गया था। न ही हमें रास्ते का पूर्ण रूपेण सही ज्ञान था। बस बीच में एक दो गांव पड़ते थे, उनके भरोसे ही हम निकल पड़े। पहले तो हमने सूखे झरने का रास्ता पकड़ा और आगे बढ़ते गये। सुरक्षा

का पूरा बन्दोबस्त था, मसलन सबों ने एक पतली छड़ी पकड़ रखी थी।

काफिला सफलतापूर्वक आगे बढ़ रहा था और सूर्योदय भी तब तक हो गया था। प्रारंभिक एक घंटे में हमने काफी चढ़ाई कर ली थी, पर धीरे-धीरे हमारी हिम्मत जवाब दे रही थी। खैर गिरते पड़ते हम अपने पहले गंतव्य पहाड़ मतलब कि पहले गांव तक पहुँच गये। कुछ गांववाले अपने खेतों की ओर निकल पड़े थे तो कुछ लोग अपने पशुओं को चारा देने में व्यस्त थे। हमने वहाँ पीने का बोतल दोबारा रीफिल किया और आगे की ओर बढ़े। अब हमें चीड़ के पेड़ दिखने शुरू हो गये थे। ठंड भी हौले हौले बढ़ती प्रतीत हो रही थी। हम हमारा गाईड मित्र लगातार आगे चलकर हमें उत्साहित कर रहा था। प्रकृति को इतने नजदीक से जानने का मौका और कहाँ मिल सकता था ?

आज के भौतिकवादी युग में हम आगे बढ़ते ही जा रहे हैं, लगातार वृक्षों का दोहन कर। पर जहाँ हम खड़े थे वह हमारे लिए किसी स्वर्ग से कम नहीं था। तभी हमारे एक मित्र ने आवाज दी हमें अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ हमारे दस मीटर की दूरी पर तकरीबन 6-7 फिट का पहाड़ी गिद्ध बैठा था। सब ने अपनी मोबाईल उस ओर करके फोटो लेनी शुरू कर दी। तभी उसे हमारे आने का आभास हो चला था और देखते-देखते वह नीले आसमान की ऊँचाई को छू चला था। (आपकी जानकारी हेतु मैं ये बताना चाहूँगा ये प्रजाति

हमारे भू-मंडल पर बिलुप्त होने की कगार पर है) ।

हमारी थकान अब दूर हो चली थी। उस शिखर से सारी धरा अपनी उत्कृष्टतम रूप में दिख रही थी, मानों नई नवेली दुल्हन ने ना-ना प्रकार के गहने पहले रखे हो उसपर हरिपत्ती की चादर और कहीं-कहीं सफेद बादलों की पट्टियाँ सब मानों साक्षात् इन्द्रदेव ने हमारे लिए सजा कर रखा हो। हमारे ग्रुप में ऐसे भी लड़के थे जो बचपन से यौवन तक कंक्रीट के जंगलों में रहे थे, पर इसे देख वे भी प्रकृति से अपने को अलग न रख पाये। हम आगे बढ़ते गये, हमारे संतरे व नौबु हमें भुखा रहने से बचाये रखे । यूँ कहें तो इनकी एक-एक बूँद हमें अमृत-तुल्य प्रतीत हो रही थी। पहाड़ों को चीरते बीच में हमने सॉट कट रास्ता लेने का विचार किया। पर ये निर्णय आगे जाकर हमारी सबसे बड़ी भूल साबित होने जा रही थी। हम फँस चुके थे, आगे सीधी खड़ी पहाड़ी और पीछे सीधे खड़ी ढलान। हमने एक पत्थर और कुछ घास पकड़ रखा था। मोबाईल खोला तो नो सर्विस एरिया। सब एक दूसरे को ताना दे रहे थे तभी हमारा गाईड मित्र ने ऐसी खबर सूनाई

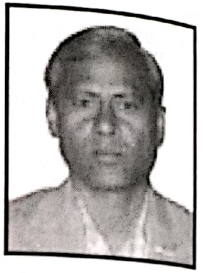
की सभी एक साथ चिल्ला बैठे। उसने दूर कहीं गोवर देखा जो साफ इंगित कर रहा था कि अगर गाय आ सकती है तो हम क्यों नहीं जा सकते। सब आगे बढ़े और काफी चलने के बाद हमने एक बंगला देखा जो एक रेस्ट हाउस था, लोक निर्माण विभाग का वह काफी पुराना था और उसे देखने राहुल गाँधी, सचिन तेंदूलकर, राजीव गाँधी, जवाहर लाल नेहरू आदि न जाने कितने नामी हस्तियाँ आ चुकी थी। हमने वहाँ बैठकर कॉफी पी और कुछ खाया भी । सामने थी हिमालय का बर्फानी शिखर, मसलन केदारनाथ।

हमारी ट्रेकिंग अब खत्म होने पर थी सारी थकान हिमालय ने मिटा दी थी, बची खुची थकान मसूरी की वादियों व नजारों ने खत्म कर दी थी। हमने एक होटल में रूम बुक किया सभी बारी-बारी से फ्रेश हुए, 3-4 घंटे की नींद ली व वापस शाम होते हम अपने छात्रावास में पहुँच चुके थे। प्रकृति से जो हमने सीखा वह वाकई अवर्णिय था। हमारी ट्रेकिंग रोमांचकारी, अविस्मरणीय व वर्णनातीत थी। आज भी 6 महीने बाद हमें वो दिन लगता है मानो कल की ही बात है।



जो दूसरों को धोखा देना चाहता है, वास्तव में वह अपने आप को ही धोखा देता है ।

संस्मरणीय यात्रा



□ श्री दुलारी शरण सिंह

वरीय लेखाकार

वैसे तो मैंने जीवन में अनेकों यात्राएँ की हैं। उन्हीं यात्राओं में एक ऐसा यात्रा का वृत्तान्त मैं यहाँ कर रहा हूँ जिसे चाह कर भी भूला नहीं पाता। चूँकि मैं भारतीय वायु सेना में इससे पूर्व कार्यरत था एवं मेरी पदस्थापना हरियाणा के सिरसा नामक स्थान पर थी जहाँ से पुनः मेरा स्थानान्तरण हैदराबाद के हाकीम पेट नामक स्थान पर किया गया था। तैयारी के साथ मैं अपनी यात्रा की शुरुआत अपने आर्वाटि आवास को छोड़ने से शुरू किया। सभी निकट मित्रों ने मेरे प्रस्थान पर भावभीनी विदाई दी एवं कुछेक सिरसा स्टेशन तक छोड़ने आये। सिरसा स्टेशन से मुझे छोटी लाइन की गाड़ी पकड़कर दिल्ली आना था जहाँ से पुनः दिल्ली सिकन्दराबाद ट्रेन पकड़कर हाकीम पेट जाना था। सिरसा रेलवे स्टेशन आने के पश्चात् ज्ञात हुआ कि ट्रेन एक घंटे विलम्ब से आयेगी। शाम के पांच बज रहे थे। मैंने भारी भरकम सामानों को रेलवे पार्सल में बुक करा दिया एवं जरूरी सामानों को अपने साथ ले जाने को निश्चय किया। एक घंटे समाप्त हो जाने के बावजूद ट्रेन नहीं आयी एवं आगमन का समय एक घंटे और आगे कर दिया गया जो मित्र मुझे स्टेशन छोड़ने आये थे देर होने की वजह से एक-एक कर सभी वापस लौट गये और मैं अपनी पत्नी एवं दो छोटे बच्चों के साथ ट्रेन आगमन का पुनः इन्तजार करने लगा। इस प्रकार रात के बारह बजे और स्टेशन अधिकारी द्वारा यह घोषणा किया गया कि उक्त ट्रेन को निरस्त कर दिया गया है। भिवानी होते हुए दिल्ली के लिए अगली ट्रेन अब सुबह 8.30 बजे आयेगी। सिरसा से दिल्ली की यात्रा लगभग पांच घंटे की थी। मेरा ट्रेन दिल्ली से 9.25 बजे छूटने वाली थी। चूँकि मेरा परिवार सहित दिल्ली से आरक्षण प्राप्त किया हुआ था एवं जो निःशुल्क यात्रा पूर्ण करने के अलावा मेरे पास कोई उपाय नहीं था। सिरसा में मैं अपना आवास भी छोड़ चुका था एवं उस आवास में आर्वाटि व्यक्ति का आगमन हो चुका था। पत्नी से विचारोपरान्त बस के द्वारा दिल्ली जाने को निश्चय किया एवं रिक्सा लेकर बचे सामानों एवं बच्चे सहित बस स्टैंड की ओर रात के

लगभग 1.30 बजे चल दिया। बस स्टैंड पहुँचने के पश्चात् ज्ञात हुआ कि दिल्ली के लिए पहली बस सुबह चार बजे चलेगी जिसके इन्तेजार में हमलोग वहीं बंजारा स्वरूप खुले आसमान के नीचे बैठ गये। चूँकि ठण्ड खत्म एवं गर्मी की शुरुआत का मौसम था इस वजह से कुछ खास ठण्ड महसूस नहीं हुयी। रात भर जागने के कारण हम पति पत्नी की भी बच्चों के साथ आँख लग गयी। जब आँख खुली तो बस लगी हुई थी एवं टिकट लेने वास्ते टिकट खिड़की की ओर दौड़ा एवं प्राप्त भी किया। कुछ छोटे सामान एवं दोनों बच्चों को बस में चढ़ा दिया एवं हम दोनों बाकी सामानों को बस की छत पर चढ़ाने की चेष्टा में लग गये। इसी दरमियान कंडक्टर महोदय को बस चलाने की इजाजत हो गयी एवं बस आगे की ओर रेंगने लगी। हम पति पत्नी की तो मानों दुनिया ही लूटने लगी। सामानों को छोड़ हम दोनों कंडक्टर महोदय की मन्नत मनाने लगे। उनके नहीं मानने पर हम दोनों उनके पैरों में लेट गये एवं पैर को तबतक पकड़े रहे जबतक उन्होंने हमलोगों को पांच मिनट का समय नहीं दे दिया। चूँकि कण्डक्टर महोदय हरियाणा के निवासी थे और उनकी भाषा इतनी मिठास लिए होती है मानो प्यार से बोलने पर हमलोगों को गाली स्वरूप महसूस होता है। पर यह सब सोचने का समय नहीं था। शारीरिक रूप से मेरी पत्नी कमजोर हुआ करती थी एवं आज भी कुछ वैसी ही है दोनों मिलकर बचे सामानों को इस कदर छत पर फेंकना शुरू किया मानों सामान में वजन ही नहीं है। श्रीमति का तो हौसला देखते ही बनता था। उतने समय तक ही मैं जीवन में महसूस किया कि उनकी शारीरिक क्षमता बाकी है। खैर, जैसे तैसे सामानों को उपर फेंक हम दोनों बस में चढ़े एवं बस चलाने का हुक्म पुनः चालक महोदय को दिया गया। इस पांच मिनट के लिए नहीं बल्कि उन जगहों में बसों की रफ्तार काफी अधिक हुआ करती है। शायद चालक महोदय अपनी गाड़ियों को 60 किलोमीटर प्रति घण्टा के हिसाब से शुरू करते हैं। जो लगभग 120-125 तक जा पहुँचती है।

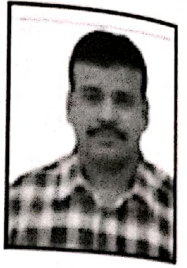
चूँकि, हम लोगों का सामान जो छत पर फेंका गया था समय के अभाव में किसी प्रकार का बंधन नहीं लगाया गया जो डर का सबब बन गया, लगा कि अब हमलोगों को कंगालों का जीवन बसर करना पड़ेगा क्योंकि, तबतक की अर्जित पूंजी लगभग सब छत पर पड़े अटैची एवं बक्से में रखी थी। खैर, कुछ दूरी तय करने के पश्चात चाय-पानी के लिए बस भिवानी में रूकी। बच्चे कुछ खाने के लिए जिद्द करने लगे, पर हमलोगों के पास समय का अभाव होते हुए भी डर से मुक्ति पाना चाहते थे, जिसके लिए सभी बातों को छोड़कर मैं बस की छत पर चला गया। वहाँ बंधन करने योग्य कोई व्यवस्था नहीं देख मैं बक्से को खोला एवं उसमें पड़ी एक-दो पत्नी की साड़ी को निकालकर सामानों को एक हल्का बंधन डाल दिया जिसके पश्चात् बच्चों को संतुष्ट करने हेतु कुछ खाने की वस्तु इच्छानुसार ले आया एवं कुछ चैन महसूस हुआ। पुनः गाड़ी खुली एवं निर्धारित समय से दिल्ली के आई. एस. बी. टी. नामक स्थान पर बस पहुँच गयी। परिवार सहित सामान लेकर हमलोग बस से उतर गये। कुछ सकून का आभास हुआ। चूँकि नयी दिल्ली रेलवे स्टेशन से ट्रेन पकड़नी थी इसलिए वहाँ जाने के लिए मैं दो रिक्साओं का भाड़ा तय कर सामान रखा। एक रिक्सा के उपर मेरी पत्नी एवं बड़े लड़के को बिठाया तथा दूसरे पर सामान सहित मैं अपने छोटे लड़के को लेकर आसिन हो गया एवं गणतन्त्र की ओर चल पड़े। साथ ही यह भी हिदायत निर्गत किया कि दोनों रिक्सा वाले को साथ-साथ चलना है। कुछ दूर जाने के बाद अचानक मेरी पत्नी एवं बड़े बच्चे का रिक्सा मेरी आँखों से ओझल हो गया। एक बार फिर लगा कि मेरी दुनिया उजड़ गयी। मैं चाहकर भी कुछ कर नहीं पा रहा था सिर्फ रोने एवं भगवान को याद करने के सिवाय। रिक्से से नीचे उतरकर इधर उधर दौड़ने लगा इतनी दूरी में कि जिससे यह रिक्सा आँखों से ओझल ना हो। भगवान की मुझ गरीब पर हमेशा ही दया दृष्टि रही है और आज भी मैं महसूस

करता हूँ रिक्सा मुझे नजर आया एवं पल भर की भी देर किये बगैर दोनों रिक्साओं को साथ किया। अस्वभाविक रूप से मेरे मुँह से अपशब्दों का प्रवाह रिक्सा वाले पर फूट पड़ा। वह रिक्सा वाला भी “बिहारी” था और मेरी भावना को कदर करते हुए मेरी गालियों को भी वह न चाहते हुए बर्दास्त कर गया एवं नयी दिल्ली रेलवे स्टेशन पहुँचा दिया। जिस प्लेटफॉर्म से ट्रेन जाने को निर्धारित थी मैं ट्रेन आने का इन्तजार करने लगा। जब ट्रेन आयी अचानक उल्टी दिशा वाली प्लेटफॉर्म पर लगने की घोषणा रेलवे अधिकारी द्वारा की गयी। एक बार फिर हमलोगों के सामने समस्या उत्पन्न हो गयी कि इस पाँच मिनट में किस प्रकार सामान एवं बच्चों सहित अपनी आरक्षित सीट को ग्रहण किया जाये। भागमभाग में कोई कुली तक नहीं मिल पा रहा था। अनेक कुलियों को मिनत के साथ मुँह माँगी कीमत देने को तैयार भी हुआ। इन्हीं सब बातों के दरमियान एक कुली तैयार हुआ और कुछ ही पल में वह एक ठेला लेकर आ गया। सामानों को उसपर रख गन्तव्य प्लेटफॉर्म की ओर चल पड़ा। जैसे ही सामानों सहित परिवार के साथ अपनी आरक्षित बोगी में प्रवेश किया ही था कि ट्रेन चल पड़ी। कुछ परेशानियों को और झेलने के पश्चात् सामानों को ठीक कर ही रहा था कि मेरा सर चकराया और मैं बेहोश सा हो गया। जब मुझे होश आया तो देखा चारों ओर से मेरे उपर लोग गिरने को तैयार थे। तरह-तरह की चर्चाएँ हो रही थी। क्या हुआ कैसे हुआ, नशा तो नहीं किया आदि-आदि। इसके पश्चात् मुझे और विशेष कठिनाई नहीं हुई। समय गुजरा और करीबन समायानुसार सिकन्दराबाद पहुँच गया जहाँ गाड़ी समेत कुछ मित्र मेरा इन्तजार करते पाये गये। उनके सहयोग से गाड़ी द्वारा मैं अपने गणतन्त्र स्थान पहुँच गया। इस यात्रा में भगवान सहित मेरे कई मित्रों का सहयोग रहा। ईश्वर से आशा करते हैं कि किसी को जीवन में ऐसी यात्रा का सामना न हो।



पाप-कर्म से दूर रहना, सदा पुण्य का संचय करते रहना, साधु पुरुषों के वर्ताव को अपनाना और उत्तम सदाचार का पालन करना - यह सर्वोत्तम श्रेय का साधन है ।

क्या भारत मेरा देश नहीं ?



□ श्री संजय कुमार मिश्रा
वरीय लेखाकार

कैसे निकलूँ अपने घर से ?
सब कहते तुम बिहारी हो ।
वो कहते हम हैं संथाली,
खबरदार जो आये बिहारी ।
चाय बागान से उठ रहा धुआँ,
हो जैसे इराकी तेल का कुआँ।
नफरत की आंधी फैल रही,
जन-जन के मन में मैल वही ।
हे गंगा मैया तेरे संगम पर,
यह कैसी कलेश फैल रही ।
कैसे जाऊँ मैं गुरुद्वारे ?
घेर रहे चहुँओर बनजारे ।
कामाख्या के दर्शन कैसे पाऊँ ?
ब्रह्मपुत्र में डूबकी कैसे लगाऊँ ?
क्या मेरे भोले बाबा भी
अब झारखण्डी कहलायें ?
सुल्तानगंज के गंगाजल से
हम उनको कैसे नहलायें ?
क्या भारत मेरा देश नहीं ?
क्या राष्ट्रीय कोई भेष नहीं ?
हिन्दी बोलू तो मारा जाऊँ:
तो फिर अंग्रेजों को ही बुलाऊँ ?
या कि जयचन्द बन जाऊँ ?



मन से कभी भी किसी का अनिष्ट-चिन्तन न करो ।

विफल



□ अश्विन अनुराग

सुपुत्र श्री प्रेम निवास मिश्रा

सहायक लेखा अधिकारी

मैं एक बड़े विशाल आम के वृक्ष की छाँव में बैठा था। जेठ की भरी दोपहर का समय था। गाँव की सामने वाली कच्ची सड़क से कई लोग आ-जा रहे थे। परन्तु मेरे पास किसी के भी ओर देखने का समय नहीं था। हाथों में एक बड़ी मोटी किताब थी। किताब की लिखावट तो स्पष्ट थी, परन्तु थकी आँखों को तो सारा संसार ही अस्पष्ट और दिशाहीन प्रतीत हो रहा था। सुबह से फटकार के अलावा और कुछ भी नसीब नहीं हुआ था। अतः, किताब बन्द की, और आँखें मूंदकर वहीं लेट गया।

कुछ घण्टे बाद-

“ललन, अरे ओ ललन ! उठ ना ! जल्दी उठ !”

मैंने देखा, गाँव का हीरो, छगन, मुझे उठा रहा था। मैंने पूछा, “क्या बात है ?”

“अरे सुन तो यार, अमिताभ की नई फिल्म आई-“शोले”, आज शाम को चलना है।”

इतना सुनते ही पिताजी की भयानक अमानवीय शक्ल आँखों के आगे नाच गई। पहले तो मैंने बात टालनी चाही परन्तु अमिताभ की दीवानगी ने मेरी स्व-क्षमता को परास्त कर दिया। प्रोग्राम बन गया, सब तय हो गया और शाम को हम सिनेमा देखने चले गए।

फिल्म के कुछ प्रभावशाली डायलॉग दोहराते हुए हम लौट ही रहे थे कि साईकिल पंक्चर हो गई, और लौटते-लौटते काफी रात हो गई। साढ़े दस के लगभग मैं घर पहुँचा। बाहर बरामदे में एक मद्धिम प्रकाश पसरा हुआ था। दरवाजा बन्द था। मैंने हुण्डी खटखटाई। मेरी छोटी बहन, शिखा ने दरवाजा खोला। मैं अन्दर खटिया पर बैठकर अपने जूते खोलने लगा।

तभी अन्दर से पिताजी की कड़कती आवाज आई-
“आ गया तुम्हारा निकम्मा लाडला। काम का न काज का, दुश्मन अनाज का। दो दिन बाद परीक्षा है और जनाब अपनी

किताब से अधिक बच्चन साहब को पूज रहे हैं। दो बार तो मेरी नाक कटा ही चुका है, अब तीसरी बार भी.....। घर की क्या हालत है, नौकरी मिली या नहीं, राशन है या नहीं, बहन की शादी हुई या नहीं, इन सारी बातों की उन्हें क्या फिक्र, बस मुफ्त की रोटी तो तोड़ने को मिल ही रही है। और क्या चाहिए। दिन में मस्ती, रात में आराम।”

माँ ने पिताजी को शान्त किया, “रहने भी दीजिए। अभी-अभी आया और आप पीछे ही पड़ गए। आखिर युवावस्था ही तो खेल-कूद की उम्र होती है। अपने समय में तो था ही यह सब आपके लिए भी। फिर इतनी नाराजगी क्यों ?”

पिताजी बोले, “होने को तो था ही पर नौकरी भी तो मैंने अपने ही बल-बूते पर कमाई थी। और इनको तो अभी तक नौकरी भी नहीं मिली है। दो साल से B.P.S.C. की परीक्षा में लटकते आ रहे हैं। अब तो नौकरी की उम्र भी निकल रही है।”

पिताजी सहनशीलता की सीमा लांघ चुके थे। मैंने कड़कदार आवाज में प्रतिरोध किया “बस, बहुत हुआ पिताजी। मेरी चुप्पी को आप मेरी कमजोरी न समझें क्या सही है और क्या गलत, यह समझने की शक्ति है मुझमें। मुझे आपकी सलाह की कोई आवश्यकता नहीं।”

पिताजी के कलेजे में मेरी बात तीर की तरह धँस गई। वे काफी निराश हो गए। बिना कुछ और बोले वे चुपचाप अपने शयनकक्ष की ओर बढ़ गए। परन्तु, उस दिन शायद मैं उनकी पीड़ा न समझ सका।

अगले दिन पुनः मैं उसी विशाल आम के वृक्ष के नीचे बैठा था। हाथ में वही मोटी किताब थी। परन्तु, फिर पढ़ने की इच्छा नहीं थी। मैं आँखें मूंदकर लेट गया। कब नींद आई पता ही नहीं चला। मैंने देखा कि मैं काले कोट और लाल रंग की टाई पहने एक घुमावदार कुर्सी पर बैठा हूँ। मेरे सामने एक

छोटे से बोर्ड पर अंग्रेजी में मेरा नाम लिखा है- 'LALAN KUMAR' आगे-पीछे कई नौकर-चपरासी जूटे हुए हैं। तभी एक बदतमीज चपरासी हड़बड़ाया हुआ आता है और एक फाईल मेरे मुँह पर दे मारता है।

इससे पहले कि मैं उसे फटकार लगा पाता, मैं अपने ख्वाब से बाहर आ गया और देखा कि पिताजी सामने खड़े थे और उनके हाथ में एक जलपात्र था जिसके जल की आधी मात्रा मेरे मुँह पर विसर्जित की जा चुकी थी।

“क्या खूब पढ़ाई कर रहे हो बेटा ! हालाँकि उन्होंने यह बात धीमे स्वर में कही किन्तु इसमें व्यंग्य और कटुता की मात्रा इतनी अधिक थी कि अगर समुद्र इसका सामना करता, तो उफान मारने लगता, धरती बीच से फट जाती, आकाश काँप जाता। पर मुझे क्या, अब तो आदत सी हो चली थी। मैंने नजरें नीचे झुकाए आराम से इसका सामना कर लिया।

“पिताजी ! वो... वो....”, मेरी बात अधूरी ही रह गई। पिताजी तब तक आगे बढ़े चुके थे। दोपहर ढलने लगी थी। मैं उठकर अपने घर की ओर बढ़ चला। भूख भी लगने लगी थी।

संध्या के पहर मैं टहलने के लिए बाहर निकला। तभी दूर के एक घर में सजावट दिखाई दी। “यह अवश्य ही मुकेश का घर होगा।”, मैंने मन ही मन सोचा। सोचा पता लगाऊँ कि बात क्या है। मैं उत्साहित कदमों से उसके घर की ओर बढ़ने लगा। जब वहाँ पहुँचा तो देखा कि बाहर दरवाजे पर मुकेश का बड़ा भाई, रमेश सारी सजावट की देख-रेख में लगा था।

मैंने पूछा, “क्या बात है भईया ? कोई विशेष बात है क्या ?” रमेश ने हँसकर कहा, “यह उत्सव संयुक्त रूप से तीन शुभ-समाचारों के संदर्भ में मनाया जा रहा है। क्या-क्या बताऊँ ?”

“तीनों”, मैंने कहा।

“सबसे पहले तो आज रेखा की शादी के भत्तवान का भोज है। उसके बाद मेरे छोटे बेटे, कुन्दन का आज जन्मोत्सव मनाया जा रहा है। तीसरा समाचार यह है कि मुकेश को रेलवे में नौकरी मिल गई है। पद अच्छा है और तनख्वाह भी दस हजार के लगभग है। शाम को आना मत भूलना ललन।”

—“हाँ, हाँ जरूर”, इतना कहकर मैं आगे बढ़ गया।

परन्तु, हृदय में बड़ी टेस लगी। मैंने कभी उम्मीद भी न की थी कि मुकेश जैसे लड़के को नौकरी मिल जाएगी और मैं बेरोजगार बैठा रह जाऊँगा। मैंने मुकेश को शायद ही कभी पढ़ते देखा था। इसलिए यकीन कर पाना मुश्किल था।

मैंने बुझे मन से घर लौटा। मुकेश को नौकरी मिलने वाली बात ने मुझे पढ़ने नहीं दिया। ठीक एक दिन बाद ही परीक्षा थी। कुछ समय बाद पिताजी घर लौटे। पोस्टल विभाग की फटी-पुरानी पत्रों से भरी थैली और ठनठनाती हुई साईकिल से स्वयं को विमुक्त करते हुए वह धम्म से खटिए पर पसर गए।

“विभा, जरा इधर आना तो !”, उन्होंने माँ को आवाज लगाई। माँ दौड़ी-दौड़ी गई। उन्होंने एक कागज की छोटी सी थैली को माँ के आगे बढ़ाते हुए कहा, “यह रहे इस महीने के पाँच हजार। भला इतने रूपयों में भी घर का खर्चा जाता है। ऊपर से रेखा की शादी और ललन की पढ़ाई। काश इस बार ललन की नौकरी लग जाए तो सारी समस्याएँ दूर हो जाएँगी। खैर, खाना लगा दो।”

मैंने अपने कमरों में बैठे हुए पिताजी की सारी बातें सुनी। उनकी उम्मीदें मेरी आँखों में आँसू बनकर छलछला आईं। घर की परिस्थिति मुझसे छुपी नहीं थी।

अगले दिन जन्माष्टमी का त्योहार। गाँव से कुछ दूर एक स्थान पर एक बड़े भव्य उत्सव का प्रति वर्ष आयोजन होता था। परन्तु, इस बार मैं वहाँ नहीं जाना चाहता था क्योंकि अगले दिन परीक्षा थी।

परन्तु, हमारे गाँव में एक गजेन्द्र चाचा थे। वह हर वर्ष वहाँ जाया करते थे। चूँकि वह बड़े ही बुजूर्ग थे अतः हमेशा किसी न किसी को पकड़कर वहाँ लिए जाते थे। सड़क से गुजरते हुए उनकी दृष्टि मुझपर आ टिकी। और पड़ गए मेरे ही पीछे। मैं लाख मना करता गया और वे लाख मिन्नतें करते गए। अंततः, मझे हार माननी पड़ी।

शाम को उन्हें घुमाकर लौटते-लौटते बहुत देर हो गई। अब और कुछ पढ़ने का समय नहीं बचा था। मैं खा-पीकर सोने चला गया। कुछ समय बाद जब नींद खुली तो माँ को कहते सुना, “इस बार मेरा लल्ला जरूर पास कर जावेगा। आप देखना।”

“काश, ऐसा ही हो।” पिताजी बोले।

अगले दिन माँ से आशीर्वाद लेकर मैं परीक्षा केन्द्र की ओर बढ़ चला। पिताजी मुझे मिडिल स्कूल तक छोड़ते हुए आगे बढ़ गए। वहाँ कई परीक्षार्थी पर्वे बाँटे जाने की प्रतीक्षा में खड़े थे।

आखिर सभी ने अपनी सीटें लीं। पर्वे बाँटे गए। प्रश्न-पत्र देखकर कुछ की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई तो कुछ उत्साहित हो उठे।

मेरी स्थिति अधर में थी। मैंने उत्तर देना शुरू किए। कुछ प्रश्न कबूतर के पंख जितने हल्के थे तो कुछ शिव-धनुष जितने भारी, जिन्हें हिला पाना भी असंभव था।

न जाने नींद ने मुझे कब अपने आगोश में ले लिया, पता ही न चला। समय खत्म होने पर जब मास्टर ने मेरी सीट खटखटाई, तब मैं एकदम से हड़बड़ाकर उठ बैठा। कुछ समझने के पहले ही उसने पर्चा मेरे हाथ से छीन लिया। मैंने देखा कि परीक्षा समाप्त हो चुकी है और विद्यार्थी एक-एक करके बाहर निकल रहे हैं। मेरे होश उड़ गए। मैं बड़े ही अभिशिप्त भाव से बाहर आया। बाहर कड़ाके की धूप थी। उसी धूप में झुलसता हुआ मैं आगे बढ़ा जा रहा था।

मन में कई विचार चक्रवाती तुफान की तरह उमड़-धुमड़ कर गर्जना कर रहे थे। 'जब मैं गांव लौटूँगा तो गांव वालों को क्या मुँह दिखलाऊँगा, माता-पिता और बहन को क्या उत्तर दूँगा, मैंने उनकी उम्मीदों पर फिर पानी फेर दिया। नहीं, यह मैंने क्या किया।' इतना सोचते-सोचते मैं कब पथरीले रास्ते से होता हुआ नहर की ओर बढ़ गया, पता ही न चला पानी गहरा था। मैं उस गहरे पानी में उतरता गया, पानी उपर उठता गया, कमर तक, छाती तक, मुँह तक, नाक तक, सिर तक और फिर जिदगी तक।

मेरी मौत के बाद परिवार पूरी तरह बिखर गया। माँ रेखा को लेकर न जाने कहाँ चली गई, दूर, बहुत दूर। पिताजी की मानसिक स्थिति सही न रही। वह चिथड़ों में रहते और अतृप्त छाये की तरह दिन-भर घर में भटकते रहते। कभी कोई दया करके रोटी दे दिया करता था।

इस घटना के करीब महीने-दो-महीने बाद एक दिन सुबह एक डाकिया हाथ में चिट्ठी लिए हुआ दरवाजे पर आया। पिताजी के स्थान पर उसका नया-नया तबादला हुआ था।

बोला- "अरे पोस्ट बाबू, आपके बेटे ललन के नाम चिट्ठी आई है। अफसरों ने इन्टरव्यू के लिए बुलाया है।"

पिताजी बाहर बरामदे में अधनंगी अवस्था में बैठे थे। सुनते ही उबल पड़े, "कौन पोस्ट बाबू ? कौन ललन ? कोई नहीं रहता यहाँ। कोई नहीं। समझे !", और डाकिए को पत्थर से मारने लगे।

"पागल है", यह कहकर डाकिए ने पोस्ट ऑफिस के स्टाम्प लगी हुई चिट्ठी को थैले में डाला और साईकिल दुनदुनाता हुआ आगे बढ़ गया, वही साईकिल जो कभी पिताजी की हुआ करती थी।



वाणी का वेग, मन का क्रोधरूपी वेग, जिह्वा का चटोरेपन का वेग, उदर का क्षुधारूप वेग और उपस्थेन्द्रिय का वेग - इन समस्त वेगों को जो वीर पुरुष सह लेता है, विचलित नहीं होता, वह इस सम्पूर्ण पृथ्वी पर भी शासन कर सकता है।

कर भला हो भला



□ श्रीमती सुषमा चौधरी

द्वारा श्री सुरेन्द्र लाल दास, सहायक लेखा अधिकारी

यह वाक्या वर्ष 2006 के अप्रैल माह की है, जब मैं और मेरे पड़ोसी माँ वैष्णो देवी के दर्शन हेतु तीर्थयात्रा पर निकले थे। मेरे साथ मेरे पति एवं एक लड़का था, जबकि मेरे पड़ोसी के साथ उनकी पत्नी एवं दो बच्चे थे। गाजियाबाद में मेरे एक रिश्तेदार रहते हैं। उन्होंने भी माता वैष्णोदेवी के दर्शन हेतु हम लोगों के साथ हो लेने की इच्छा जताई, जिसे मैंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। उनके परिवार में उनकी पत्नी के अलावा एक छोटी पुत्री है। उन लोगों को गाजियाबाद से हम लोगों के साथ होना था। इसलिए कुल 10 सिटों का आरक्षण पटना से ही लिया गया, ताकि हम सभी एक साथ यात्रा का आनन्द उठा सकें। हम लोगों को भाया नई दिल्ली जम्मू जाना था। हम लोग नियत तिथि को सम्पूर्णक्रांति ट्रेन से पटना से नई दिल्ली के लिए प्रस्थान किये। अगले दिन सुबह 8 बजे यात्रा का आनन्द लेते हुए नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पहुँच गये। नई दिल्ली से जम्मू के लिए शाम 4 बजे गाड़ी थी। हम लोग अपना सामान नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के क्लॉक रूम में रखकर दिन के समय का उपयोग दिल्ली के कुछ दर्शनीय स्थानों को देखकर किया। अपने नियत समय पर नई दिल्ली से जम्मू के लिए ट्रेन प्लेटफॉर्म पर खड़ी हुई। हम लोग अपने आरक्षित बोगी में सवार होकर यात्रा की अगली कड़ी का आनन्द लेने लगे। कुछ समय बाद गाड़ी गाजियाबाद स्टेशन पर रूकी। मैं खोजी निगाहों से अपने रिश्तेदार को ढूँढ़ रही थी और वे भी उतनी ही तत्परता से उस आरक्षित बोगी का नम्बर तलाशते हुए तेजी से भागते हुए गाड़ी में सवार हुए। उन लोगों के पास समान के साथ छोटी बच्ची भी थी, सो मैं थोड़ा सहारा देकर उन लोगों को गाड़ी के अंदर ले आयी। अब हम तीनों परिवार इकट्ठे हो गये। मैं अपने रिश्तेदार का परिचय अपने पड़ोसी से करायी और थोड़ी ही देर बाद हमसब आपस में काफी घूल मिलकर इस यात्रा का आनन्द लेने लगे।

अभी रात करीब 8 बजे थे। मेरे बगल की सिट पर एक महिला बैठी थी, जिसके साथ दो तीन छोटे-छोटे बच्चे भी थे। वह महिला काफी परेशान दिख रही थी। उसके पति इधर-उधर बर्थ के लिए प्रयास कर रहे थे, जिसकी जानकारी मुझे नहीं थी। मैं उस महिला से उसकी परेशानी का कारण पूछी। महिला बड़े ही अधीर भाव से बोली "बर्थ नहीं रहने के कारण इन बच्चों के साथ

सफर कैसे कर पाऊँगी"। मैं पूछी आपको कहाँ जाना है ? वह बोली दरवार (माँ वैष्णोदेवी) जाना है, और मेरे पास एक ही कंफर्म बर्थ है। मैं तुरंत पूछी अगर मैं आपको एक बर्थ दे दूँ तो आपका काम चल जायेगा ? वह बड़े ही कृतज्ञ भाव से बोली हाँ-हाँ, काम चल जायेगा। मैं अपने रिश्तेदार से अनुरोध की कि वह छोटी बच्ची को अपने बर्थ पर साथ सुला लें और एक बर्थ उस महिला को दें दें। उन्होंने भी सहर्ष स्वीकृति देते हुए एक बर्थ उस अनजान महिला के हवाले कर दिया। बर्थ की व्यवस्था होते ही उस महिला के चेहरे पर खुशी के भाव स्पष्ट परिलक्षित हो रहे थे। उसने पति को बुलाकर एक बर्थ की व्यवस्था हो जाने की जानकारी दी। इस प्रकार वे लोग भी खुशी-खुशी अपनी यात्रा पर आगे चले गए।

हम लोग यात्रा का आनन्द लेते हुए माँ वैष्णोदेवी का दर्शन कर जम्मू लौट आये। उसके बाद हम लोग हरिद्वार होते हुए गाजियाबाद अपने रिश्तेदार के घर आये। वहाँ एक-दो दिनों तक रूकने के पश्चात् हम लोग पटना के लिए प्रस्थान किये। पटना के लिए ट्रेन नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से पकड़नी थी। अतः हम लोग गाजियाबाद से नई दिल्ली के लिए लोकन ट्रेन पकड़ने के लिए गाजियाबाद स्टेशन पहुँचे। वहाँ एक लोकल ट्रेन लगी हुई थी। हम लोग उस ट्रेन में सवार हो गये। नियत समय पर वह ट्रेन जिसमें हम लोग सवार थे, न खुलकर दूसरी ट्रेन खुल गयी, क्योंकि हम लोग गलत ट्रेन में बैठे हुए थे। मेरा रिश्तेदार जो हम लोगों को छोड़ने स्टेशन आये थे, दौड़कर खुली ट्रेन के ड्राइवर से ट्रेन रोकने का इशारा किये। तब तक हम लोग भी अपने सभी समानों के साथ उक्त ट्रेन से उतर चुके थे। गाड़ी अभी-अभी खुली थी और ड्राइवर ने इशारा को समझ कर गाड़ी की रफ्तार को थोड़ी धीमी कर दी। फिर क्या था ? हम लोग सभी समानों के साथ उस ट्रेन में सवार हो गये। हम लोगों के सवार होने के पश्चात् गाड़ी की रफ्तार धीरे-धीरे तेज हो गयी। यदि वह गाड़ी गाजियाबाद में छूट जाती तो संभव था कि नई दिल्ली में पटना जाने वाली गाड़ी भी छूट जाती। गाजियाबाद में छूटती गाड़ी के ड्राइवर के सहयोग के कारण ही हम लोग उस ट्रेन में सवार हो पाये। उक्त गाड़ी में सवार होते ही मेरे मुँह से एकाएक निकल पड़ा 'कर भला हो भला'।

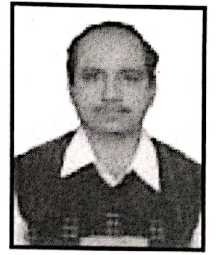


दूसरों के प्रति कोई भी ऐसा आचरण न करो जिसे तुम अपने प्रति किये जाने पर अप्रिय समझते हो।

तुम कहते हो

बूढ़ी आँखों का गम

□ श्री अनिरुद्ध राय
पर्यवेक्षक (सेवा निवृत्त)



□ श्री चन्दन कुमार
वरिय लेखाकार

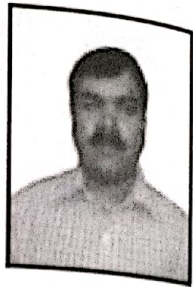
तुम कहते हो- कुछ तुम लिखो,
क्यों कहते हो की तुम लिखो ?
क्या लिखूँ इन पन्नों पर
जीवन का क्या गीत लिखूँ,
इन कोरे-काले शब्दों में
मैं कैसा संगीत रचूँ ?
सोचा था आनन्द हृदय का
तुममें सारा भर डालूँ,
श्वेत-श्याम से जीवन के,
बचे रंग तुम्हें दे डालूँ।
पर क्या करूँ हृदय का विषाद,
शब्दों में स्वतः उभर आता है।
लिखने बैठा श्वेत पक्ष मैं
स्याह स्वयं छलक आता है।
यही सोच चुप बैठा था कि,
कब तक तुम्हें रूलाऊँगा ?
अपने हृदय का बोझ भला,
कब तक तुम्हें सहाऊँगा ?
अब तुम कहते हो- लिखो !
तो चलो आज मैं लिखता हूँ।
मौन पड़े जो छंद हृदय में,
आज उन्हें मैं कहता हूँ।



प्रकृति के रथ पर जीवन का आरम्भ,
नन्हें कदमों के अनुसार जीवन प्रारम्भ।
बीच मझदार में जीवन का बिखराव,
यहाँ मैं तनिक सोचूँ कि कैसे होगा ठहराव।
आगे आने वाली है अन्तिम चरण की गणना,
उम्र में सबसे ज्यादा तथा सोंच का पिछड़ना।
आँखे बूढ़ी एवं ऊँची उड़ान की कौतूहल,
टूटता परिवार तथा आन्तरिक अशान्ति का माहौल।
क्या बोले एवं किसे समझाएं,
नक्कार खाने में क्यों तुती बजाएं।
अन्त में यह गम का बोझ,
छोड़ दू या ढोता रहूँ, यह सो....



पेंशन साफ्टवेयर : चुनौतियाँ और समाधान



□ श्री अमरेन्द्र कुमार पाण्डेय
सहायक लेखा अधिकारी
ई. डी. पी. सेल

क्या आपने कलनित्र (Kalnitra) देखा है ? इसके दो ही संभाव्य उत्तर हो सकते हैं:- (क) देखा है अथवा (ख) नहीं देखा है? इन प्रश्नों का विनिश्चय इस लेख को पढ़ने के पूर्व कर लिया जाए।

मैंने यही प्रश्न कार्यालय में कुछ मित्रों से किया। इसके बड़े ही रोचक उत्तर मिले। (क) एक ने इस प्रश्न के उत्तर में बताया कि मुझे हॉल जाकर फिल्म देखे 10 वर्ष हो गए हैं, पिछली बार....

(ख) दूसरे ने तो इस प्रश्न के उत्तर में नसीहत ही दे डाली। उन्होंने कहा खो गया है क्या ? एक नोटिस कार्यालय के हरेक Floor पर चिपकाई किसी को मिला होगा तो लौटा देगा, वैसे भी Stand में Bike चोरी की घटनाएँ आजकल काफी हो रही हैं सावधानी अपेक्षित है जल्दी कीजिए।

तीसरे ने इस प्रकार का प्रश्न के उत्तर में मनोविज्ञान का सहारा लिया (चूँकि उस समय मेरे हाथ में एक Painting थी।) उन्होंने बताया कि यह विश्वप्रसिद्ध Painting थी। किसी ने अनभिज्ञता नहीं जताई और अपने अपने अंदाज से प्रश्न का समाधान किया।

दरअसल यह प्रश्न कुछ दिन पूर्व "कार्टून चचा" ने मुझसे किया था। उनका वास्तविक नाम विद्याभूषण है। उनके ठल-जलूल हरकतों के कारण युवा-वर्ग ने उनका नामकरण "कार्टून चचा" दिया और अब वे इसी नाम से जाने जाते हैं। वे एक से. नि. सरकारी कर्मचारी हैं, समाज में उनका सम्मान है, किसी बड़े और महत्वपूर्ण कार्य में लोग उनकी राय लेना नहीं भूलते। "बैटिंगा नहीं समय नहीं है" के साथ शुरू होने वाले चचा अगर बैठ गए तो तीन चार घंटे की छुट्टी तय

मानिए। उनके चर्चा में मुहल्ले की खबरों से लेकर खगोलीय घटनाओं तक का जिक्र होता है। पश्चिमी सभ्यता के अंधाधूंध अनुकरण, शिक्षा एवं राजनीति का अवमूल्यन पर चर्चा उनके रोजमर्रा के काम का अहम् हिस्सा है। कुछ लोग उनसे कन्नी कटाते फिरते हैं। जबकि कुछ उन्हें चाय पर आमंत्रित कर घंटों चर्चा करते हैं। क्रिकेट को पश्चिमी सभ्यता को फैलाने वाला वायरस (Virus) मानने वाले चचा किसी महत्वपूर्ण मैच के दिन सत्यनारायण कथा का आयोजन अवश्य करते हैं और व्यक्तिगत रूप से लोगों को विशेष रूप से युवावर्ग को आमंत्रित करते हैं। उपस्थिति/अनुपस्थिति को पैमाना मानकर भारतीय संस्कृति की जीवन्तता को मापते हैं। अनुपस्थिति लोगों से मिलते अवश्य है उनकी पूरी खबर लेते हैं।

चर्चा में रहने वाले उनकी एक और हरकत है, उनके Gift देने का अनोखा अंदोज। चचा सपरिवार, आमंत्रित सभी Function में अवश्य उपस्थित होते हैं। गिफ्ट रंगीन कागज में लिपटा हुआ एक बड़ा सा Pack होता है। Pack के अन्दर उनके हस्तलिपि में आठ-दस वाक्यों में लिखे नसीहत की एक पूर्जी के अलावा कुछ भी नहीं रहता है। "नसीहत में माता पिता का आदर करो" "अपना सूधार संसार का सबसे बड़ा उपकार" आदि रहते हैं। अभी हाल में एक Reception में दिए गए Gift Pack के पूर्जी में नसीहत थी "जनगणना कर्मियों का सहयोग करो" किसी Function में दिए गए महंगे से महंगे गिफ्ट की चर्चा हो या न हो लेकिन लोगों में चचा के पूर्जे पर अंकित नसीहत को जानने की उत्सुकता सदैव बनी रहती है। इस पर चर्चा अवश्य होती है। कुछ लोग उनकी इन हरकतों को भारतीय संस्कृति के पुनः स्थापना / जीवन्तता को

बनाए रखने का प्रयास मानते हैं, जबकि कुछ लोग सस्ती लोकप्रियता पाने का उपक्रम।

सन् 1991 में रेलवे की नौकरी छोड़कर जब मैंने इस कार्यालय को Join किया उसके चंद सप्ताह बाद ही कार्टून चचा ने अपने अग्रज के पेंशन से संबंधित मामले में मुझे सहायता करने को कहा उनके मामले के पैरवी के दौरान ही मैं कार्यालय में अपनाई जाने वाली पेंशन प्रणाली से अवगत हुआ। अतएव उनका उल्लेख इस लेख में अप्रासंगिक नहीं है।

उनके मामले का पत्रांक और दिनांक वाला पूर्जी लेकर मैं अगले दिन जब कार्यालय पहुँचा तो सबसे पहले ऐसे मामलों में करना क्या है की जानकारी अपने निकटस्थों से ली। मामले की अद्यतन स्थिति जानने के लिए निकटस्थों ने मुझे संबंधित लेखाकार महोदय से मिलने को कहा। थोड़ी बहुत पूछताछ के बाद मैंने संबंधित अनुभाग एवं इस मामले से संबंधित लेखाकार की जानकारी प्राप्त कर ली। मैं लेखाकार महोदय के पास पहुँचा। उनके चारों ओर फाईलों का अम्बार लगा हुआ था। फाईल के बने चाहरदिवार के बीच उनका मेज लगा था। फाईल के बने दिवारों के बीच वे इस प्रकार विराजमान थे जैसे कि चीन की दिवार के बीच चीनी साम्राज्य। फाईल के मजबूत सुरक्षा चक्र के अन्दर बैठे महोदय को मैंने पत्रांक दिनांक वाला पूर्जी देते हुए मामले की अद्यतन स्थिति जानने की जिज्ञासा प्रकट की। संक्षिप्त परिचयात्मक वार्ता के बाद उन्होंने मेरे पूर्जी पर एक नजर डाली और अपनी दराज़ से एक पतली सी रजिस्टर निकालकर अनमने मन से उसके दो चार पृष्ठ पलटे। तत्पश्चात उन्होंने निष्कर्ष दिया कि आपका मामला कार्यालय में प्राप्त नहीं है। त्वरित निष्पादन !! मेरे जोर देकर कहने पर कि मामले को कार्यालय में प्राप्त कराया गया है वे भड़क गए और उन्होंने कहा कि यह स्कूल / कॉलेज नहीं है जो मन में आएगा, बोलिएगा। अगर प्राप्त है तो उसका सबूत लाकर दिखाईए।

दूसरे दिन लेखाकार महोदय के रूखा व्यवहार से अपने चचा को अवगत कराया। मैंने स्पष्ट देखा कि चचा चेहरे पर परेशानी की लकीरें खींच आई थी। एक से. नि. कर्मचारी की व्यथा उनके चेहरे से साफ पढ़ी जा सकती थी। थोड़ी देर की खामोशी के बाद उन्होंने कहा या तो तुम्हारा आग्रह लेखाकार महोदय से सभ्य और शालीन नहीं रहा होगा अथवा

मामला कार्यालय में सचमुच प्राप्त नहीं हुआ होगा। उन्होंने यह भी नसीहत दे डाली कि ऐसे मामलों में उनके द्वारा बताए गए बात को Challenge नहीं करना चाहिए। उनके बातचीत से स्पष्ट हुआ कि उनके मन में इस कायलय के कर्मियों का विशेष सम्मान है। उन्होंने मुझे यह भी बताया कि अन्य कार्यालयों में ए. जी. के कार्यालय के कार्य-प्रणाली की मिसालें दी जाती हैं। अपने कार्य को सही बताने के लिए लोग **"As Correct as A.G.S. Figure"** का जूमला बोला करते हैं।

अगले दिन उन्होंने मुझे एक मोटा सा रजिस्टर (Peon Book) दिया। इस Register पर उनके मामले को इस कार्यालय में प्राप्त कर लिए जाने संबंधी प्रविष्टि और Receiving थी। Register लेकर मैं पुनः लेखाकार महोदय के पास पहुँचा।

वहाँ पहुँचकर मैं हतप्रभ रह गया, अनुभाग का नजारा अद्भुत था। कोई भी निर्धारित जगह पर बैठा न था। फाईल का मजबूत सुरक्षा चक्र ध्वस्त हो चुका था, फाईल यत्र-तत्र बिखरा हुआ था। और सभी उस ध्वस्त हुए ढेर में कुछ ढूँढ़ रहे थे। एक दो लोग नाक में रूमाल बांधकर, शर्ट उतारकर, फाईलें ढूँढ़ने में तलीन थे कुछ लोग निदेश देने में व्यस्त थे, इधर देखो! उधर देखो ! तहकीकात करने पर पता चला कि "Court Case" से संबंधित किसी मामले की फाईल खोजी जा रही है। जबतक यह फाईल नहीं मिलेगी अन्य कार्य स्थगित रहेंगे। मेरे मामले में त्वरित निष्पादन देने वाले महोदय फाईल खोजने में व्यस्त थे। काम के प्रति ऐसा समर्पण। उनलोगों के प्रति मन में श्रद्धा की अनुभूति हो रही थी, परन्तु कल के रूखे व्यवहार ने उन्हें उस श्रद्धा का पात्र बनने नहीं दिया जिसके वे हकदार थे। मुझे बाद में आने को बोला गया।

अनुभाग के व्यवस्थित होने पर मैं पुनः उस मोटे रजिस्टर के साथ वहाँ पहुँचा। जबसे मोटे रजिस्टर मेरे हाथ आया था, तबसे मेरा आत्मविश्वास बढ़ गया था, और मेरा मन में एक विश्वास पैदा हो गया था कि यह रजिस्टर लेखाकार महोदय के पतले रजिस्टर को अवश्य पराजित करेगा। फलाफल की उत्सुकता एवं मोटी रजिस्टर के जीत की पूरी संभावना के साथ मैं पुनः अनुभाग पहुँचा, परन्तु चचा के नसीहत को ख्याल

में रखते हुए पूरी शालीनता से अपने प्रश्न के बदले पूछ बैठे 'Court Case' वाली फाईल मिली या नहीं ?

हाँ हाँ मिल गया है, मिलेगा नहीं कैसे ? "मैंने खोज निकाला है।" कोने से आवाज आई, नहीं नहीं मैंने खोजा है। खोजने के श्रेय लेने की होड़। आखिरकार बड़े बाबू ने निर्णय दिया मेरे निदेश पर ही खोजा जाना सम्भव हुआ है। उन्होंने यह भी बताया कि कौन-सी फाईल कहाँ है, इसकी मोटा-मोटी जानकारी उन्हें है। जब उन्हें जानकारी थी तो इतनी बड़ी अव्यवस्था कैसे फैली। मेरा मन उनकी बातों से सहमत नहीं हुआ चाह रहा था फिर भी उनके पुरुषार्थ पर बनावटी प्रसन्नता जाहिर की। Court Case file खोज पकरण समाप्त होने पर मैंने अपना रजिस्टर लेखाकार महोदय की ओर बढ़ा दिया और उन्हें बताया कि मामले के प्राप्ति संबंधी प्रविष्टि और रिसिभिग इस पंजिका के पृष्ठ फलों पर अंकित है। रजिस्टर को मेज पर रखते ही लेखाकार महोदय इस तरह दबाव में आ गए जिस तरह 90+ पर खेल रहा बल्लेबाज Slip के बढ़ाने पर दबाव में आ जाता है। रजिस्टर में संबंधित प्रविष्टि को देखने के बाद उन्होंने यह बात मान ली कि मामला कार्यालय में प्राप्त है। प्राप्त परिणाम पूर्वापेक्षित ही था। मोटी रजिस्टर के सामने उनकी एक न चली और Register की प्रभुता उन्होंने स्वीकार कर ली। War of Register में मोटी रजिस्टर के जीतने पर (वस्तुतः यह मेरी जीत थी) उत्साहित होकर मैंने पूछा अब मुझे क्या करना है। उन्होंने बताया कि नीचे Ground Floor पर स्थिति रिकार्ड सेक्सन से एल. (L) अथवा आर. (R) नम्बर पता कर लाने पर मामले की शीघ्र निष्पादन में उन्हें सहूलियत होगी। मैं रिकार्ड सेक्सन तत्काल पहुँचा। उसी मोटे रजिस्टर के साथ। उस अनुभाग में इस रजिस्टर के मुकाबले चार पांच गुणी मोटी रजिस्टर देखकर मन आशंकित हो गया, परन्तु War of Register की नौबत नहीं आई, एक सहायक ने रजिस्टर में रिसिभिग देखकर, दो तीन मोटी रजिस्टर मेरी ओर बढ़ा दी और संबंधित मामले को स्वमेव खोज लेने को कहा, रजिस्टर में लिखे अक्षर को पढ़ पाना बड़ा ही विकट कार्य था क्योंकि लिखावट आड़े-तिरछे और लगभग अपठनीय था। पत्रांक के आधार पर मैंने L Number खोज लिया और लेखाकार महोदय को मैंने इसकी सूचना दे दी। लगभग 40-45 दिन बाद निर्धारित प्रक्रियाओं से गुजरते हुए चचा के

माले का निष्पादन हो गया। निष्पादन की सूचना पर चचा ने प्रसन्नता जाहिर की।

वस्तुतः पेंशन से संबंधित सभी कार्य 11.09.1996 के पूर्व विशुद्ध रूप से Manually किए जाते थे। इसे हम era of Register कह सकते हैं जहाँ Registers का बोलबाला था इस मैनुअल प्रणाली के तहत सभी पेंशन मामले Centrally, Record Section में प्राप्त किए जाते थे। Record Section द्वारा प्रत्येक मामले पर L (Local received cases के लिए) अथवा R (Register received case के लिए) को Prefix करते हुए एक Unique Dy No. अंकित किया जाता था। तत्पश्चात अनुभाग मामले को छाँट कर एक रजिस्टर (जिसपर मामले से संबंधित विवरणी अंकित रहता है) के साथ सभी मामले को संबंधित लेखा अधिकारी के पास भेज दिया जाता था। लेखा अधिकारी उस Register पर अपना संक्षिप्त हस्ताक्षर कर इसे संबंधित अनुभाग अधिकारी के पास भिजवा देते थे। अनुभाग अधिकारी एक पूर्व निर्धारित Allotment Chart के आधार पर प्रत्येक मामले पर संबंधित लेखाकार का नाम लिखते हुए संक्षिप्त हस्ताक्षर बनाते थे। अ. अ. के Allotment के आधार पर संबंधित अनुभाग के लिपिक मामले को (क) Pension Report PR अर्थात् कार्यालय में पहली बार पेंशन निर्धारण हेतु आए मामले (ख) Family Pension (सरकारी सेवक की मृत्यु की स्थिति में) (ग) Revision आदि Category में अलग-अलग छाँट लिया जाता है। तत्पश्चात प्रत्येक Category के मामले को अलग Register में (Accountantwise छाँटकर) दर्ज किया जाता है। इसी रजिस्टर पर लिपिक द्वारा संबंधित लेखाकार का रिसिभिग लेकर मामले लेखाकार को संपूर्ण कर दिया जाता है। इसके पूर्व संबंधित अनुभाग के लिपिक रिकार्ड के रजिस्टर पर मामले को प्राप्त कर लिए जाने संबंधित अनुभाग के लिपिक रिकार्ड के रजिस्टर पर मामले को प्राप्त कर लिए जाने संबंधित टिप्पणी अंकित कर रजिस्टर को Record Section को लौटा दिया जाता है। संबंधित लेखाकार द्वारा मामले में संलग्न कागजात एवं सेवापुस्त की गहन जांच की जाती है। त्रुटि रहने पर उच्चाधिकारियों की सहमति के पश्चात् मामले को विभाग को त्रुटि दूर कर भेजने के निदेश के साथ लौटा दिया जाता है। त्रुटि रहित रहने पर एक पत्रक पर

पेंशन / उपा. एवं रूपान्तरण की गणना लेखाकार द्वारा की जाती है। अनुभाग अधिकारी के माध्यम से यह पत्रक सेवापुस्त एवं कागजात समेत लेखा अधिकारी के समक्ष प्रस्तुत की जाती है। गणना एवं कागजातों से संतुष्ट हो लेखा अधिकारी द्वारा इसे पारित कर प्राधिकार पत्र हेतु पुनः अनुभाग को भेजवा दिया जाता है। लेखाकार द्वारा पेंशन / उपा. / रूपान्तरण (प्रत्येक अथवा जो सरकारी सेवक को देय होता है) के लिए चार प्रति में प्राधिकार पत्र तैयार किए जाते हैं, एक original एवं तीन कार्बन प्रति जो कोषागार प्रति विभागीय प्रति एवं कार्यालय के प्रति के नाम से जाने जाते हैं इसके अतिरिक्त दो बुक भी तैयार किए जाते हैं। कोषागार प्रति को छोड़कर शेष प्रतियों पर अनुभाग अधिकारी अपना हस्ताक्षर अंकित कर लेखा अधिकारी के पास पुनः भेजा जाता है। लेखा अधिकारी प्राधिकार पत्र के कोषागार प्रति Pensioner's portion of book एवं Disburser Portion पर अपना हस्ताक्षर अंकित करते हैं, इसके अतिरिक्त पी. पी. ओ. रजिस्टर (एक रजिस्टर जिसपर प्राधिकृत मामलों की पूर्ण विवरणी रहती है) एवं Audit Enfacement (अराजपत्रित कर्मचारियों के मामले में प्राधिकृत राशि की संक्षिप्त विवरणी जो सेवापुस्त के किसी पृष्ठ पर अंकित की जाती है) का भी Attestation लेखा अधिकारी द्वारा किया जाता है एवं हस्ताक्षरित थे प्राधिकार पत्र पुनः संबंधित अनुभाग को भेज दिए जाते हैं, जहाँ आवश्यक Sorting के पश्चात मामले Despatch Section को भेज दिया जाता है, जहाँ से मामले संबंधित जगह पर रजिस्टर डाक द्वारा भेज दिया जाता है। सभी कोषागार में लेखा अधिकारी का नमूना हस्ताक्षर रहता है, जिससे कि प्राधिकार पत्र के हस्ताक्षर से मिलान कर भुगतान की प्रक्रिया की जाती है। पेंशन प्राधिकृत करने की यही प्रक्रिया 1996 के अंतिम तिमाही तक चला।

बीसवीं शताब्दी के मध्य में अस्तित्व में आए कम्प्यूटर ने कार्यप्रणाली में व्यापक फेर बदल किए हैं। Vaccume Tube से अपनी यात्रा शुरू करने वाले Computer ने विभिन्न चरणों को पार करते हुए अपना कदम Fifth generation में रखा जाता है, जिसमें Artificial Intelligence एवं Magnetic Bubble memories की संकल्पना की गई है। Computer

कहिए, अभिकलित, संगणक अथवा कलबित सबों का एक ही अर्थ है आज शायद ही ऐसा कोई व्यक्ति मिलें जिन्हें इसके इस्तेमाल का लाभ न मिला हो और ऐसा कोई व्यक्ति जिसने कलनित्र न देखा हो ? किसी ने नहीं देखा होगा।

कार्यालय में पेंशन मामलों के निष्पादन में अपनाई जाने वाली तरीका के आधार पर इसे निम्न चार भागों में बांटा जा सकता है।

(1) Manually अर्थात् era of register जिसकी चर्चा पूर्व में किया जा चुका है। यह प्रणाली September 1996 के अंत तक चला। यह प्रक्रिया more effort less achievement वाला था। कार्यप्रणाली की मुख्य चुनौतियाँ थी (क) फाईल का रख-रखाव, (ख) रजिस्टर आधारित प्रणाली कोई भी जानकारी के लिए रजिस्टर पर निर्भरता थी जो श्रम साध्य एवं समय का अपव्यय वाला भी थी। (ग) प्राधिकार पत्र बनाने में काफी समय लगना एवं उसकी लिखावट की समस्या। चौथी (कार्बन कॉपी) पर लिखे को पढ़ना आसान नहीं था। (घ) कारगर प्रतिवेदन की अनुपलब्धता (ङ) निष्पादित मामलों की संख्या प्राप्त मामलों की मुकाबले काफी कम था और इसमें बढ़ोतरी की गुंजाइश नहीं थी। डीवेश प्रणाली के तहत पेंशन प्राधिकृत होते हुए इन चुनौतियों में से अधिकतर का समाधान हो गया।

(2) डीवेश प्रणाली (Dbase):—उच्चाधिकारियों की प्रेरणा, सहकर्मियों की परेशानी एवं कम्प्यूटर पर अपने शोध की मनोवृत्ति से प्रभावित कार्यालय के ही श्री बी. जी. कान्त ने पेंशन प्रणाली को कम्प्यूटरीकृत करने का बीड़ा उठाया। सन् 1995 के मध्य से उन्होंने इस हेतु Programme लिखना शुरू किया, और लगभग एक साल में यह तैयार हुआ। उनके द्वारा बनाए गए साफ्टवेयर से पहला प्राधिकार पत्र 12 सितम्बर 96 को डॉट मैट्रिक्स प्रिन्टर्स से छपा। छपा प्राधिकार साफ सुन्दर और स्पष्ट था। इस सॉफ्टवेयर के उपयोग ने निष्पादित मामलों की संख्या में वृद्धि एवं लगने वाले समय में काफी कमी ला दी। इस प्रणाली के तहत अपनाई जाने वाली कार्यप्रणाली लगभग पले जैसी थी परन्तु इसमें दो स्तरों पर बदलाव किए गए। पहला स्तर था प्राप्त होने वाले सेवापुस्तक

के विभाग, पेंशनर का नाम आदि Computer में feed कर दिए जाते थे और feeded मामले का एक प्रिंट निकालकर उस प्रिंट के साथ मामले को संबंधित अनुभाग में भेज दिया जाता था। इस प्रकार कम से कम एक रजिस्टर को तो दरकिनार कर ही दिया गया, इस प्रणाली को अपनाने पर। दूसरा स्तर पारित गणनापत्रक को ई. डी. पी. में भेज दिया जाता था। गणनापत्रक पर अंकित Information को विभिन्न user computer में feed करते थे। इस Feeded data के आधार पर Both halves दो प्रति में एवं विभिन्न प्राधिकार पत्र की चार-चार प्रतियाँ डाटमैट्रिक्स प्रिन्टर्स से छाप दी जाती थी एवं अनुभाग को गणना पत्रक के साथ वापस लौटा दिया जाता था। इससे न सिर्फ समय और श्रम का बचत होने लगा बल्कि संबंधित डाटा का एक डाटावेश भी तैयार होने लगा जिसका Multiple use आज हो रहा है।

डीवेश (Dbase) प्रणाली कार्यालय में 9/96 से दिसम्बर 2008 के प्रथम सप्ताह तक अपना कार्य किया। इस दौरान लगभग 4 लाख मामले का निष्पादन इस प्रणाली के सहयोग से किया गया। ये डाटा आज कार्यालय के अमूल्य निधि है। हलांकि इस प्रणाली से काम के तरीकों में आमूल-चुल परिवर्तन हुआ, परन्तु कुछ चुनौतियाँ ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। मुख्य चुनौतिया थीं।

(क) इस प्रणाली ने पेंशन में काम करने वाली कर्मियों को दो हिस्सों में बाँट दिया Computer Knowing employee & non Computer Knowing employee जो एक दूसरे के अधिकार क्षेत्र के कार्य करने से परहेज करते थे।

(ख) कम्प्यूटर में कोई सूचना प्राप्त करने के लिए Command लिखना पड़ता था फलतः उपयोगिता सीमट गई, एक वर्ग के Non Computer knowing employee दूसरे वर्ग Computer knowing employee पर आश्रित हो गए।

(ग) प्रिंटिंग श्रमसाध्य बन गया Tractor form में होने वाली छपाई में form के फंसने से Stationary का भी अपव्यय होता था। छपाई के लिए 4-5 अनुभाग अधिकारी लगे रहते थे, Printing के किरकिरे का आवाज न सिर्फ ध्वनि प्रदूषण करता था बल्कि मानसिक रूप से ई. डी. पी. कर्मियों को अशान्त कर देता था।

(घ) विभिन्न पेंशन अनुभाग में प्राधिकार पत्र से संबंधित कार्य ई. डी. पी. में केन्द्रित हो गया, फलस्वरूप ई. डी. पी. का कार्यभार काफी बढ़ गया।

इन परेशानियों के बावजूद Dbase प्रणाली कम्प्यूटरीकरण की दिशा में बढ़ाया गया पहला और मजबूत कदम था। लम्बी अवधि तक Dbase Software का प्रयोग (लगभग 12 वर्ष) इसके तहत छपने वाले मामलों की संख्या (जो लगभग 4 लाख है) इनके सफलता को दर्शाता है।

(3) SAI Project:—मुख्यालय की यह महत्वकांक्षी परियोजना है, जिसका उद्देश्य भारत के सारे कार्यालयों (AG Offices, A & E) में एक समान अर्थात् एक ही Pension Software परिचालन का था। System Auto Initiation के नाम से प्रसिद्ध इस Project का Pilot office AG Maharashtra, Mumbai था। Software के Intallation training का भार HCL को सौंपा गया है। HCL Engineer ने इस कार्यालय में अपना कार्य October 2007 शुरू किया।

लगभग 25 दिनों में स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप Software में परिवर्तन किया। Software निसंदेह उच्च स्तर का है एवं यह पूर्ण रूपेण कम्प्यूटरीकृत प्रणाली है। यहाँ तक कि Return होने वाले मामले का फारवाडिंग पत्र भी Computer Generated था। परन्तु स्थानीय आवश्यकता के अनुरूप Software के परिवर्तन में आई अड़चने, लम्बे समयावधि के बाद भी प्राधिकार पत्र का जेनरेट न हो पाना (और अंत में हुआ भी तो गलत)। तत्कालीन महालेखाकार महोदय श्री गौतम गुहा की टिप्पणी थी। "This Software is not able to add or subtract How it will..." उपर्युक्त कारण ही इसके विफलता की कहानी गढ़ दी। लम्बे पत्राचार / Meeting दौर के बाद आखिरकार मुख्यालय ने January 2009 में इस सॉफ्टवेयर के लागू करने की बाध्यता से कार्यालय को मुक्त कर दिया। इस प्रकार बिना एक प्राधिकार पत्र छपे, इस परियोजना की विदाई इस कार्यालय से हो गई।

SAI Project के परिचालन के लिए 100% Computer literate employee की आवश्यकता पड़ती जिसका अभाव इस कार्यालय में था। SAI विफलता का यह सर्वप्रमुख कारण था। ICISA, Noida में 20 July 09 से 14

Aug. 2009 तक पेंशन से संबंधित एक प्रशिक्षण में मैंने हिस्सा लिया। इस दौरान यह बात सामने आई कि SAI Project पूरे देश में मात्र एक जगह मुम्बई में ही चल रहा है। SAI की विफलता का इससे बड़ा उदाहरण क्या हो सकता है।

(4) **SERL Software:**—2 दिसम्बर 2008 से, SERL द्वारा Development इस Pension Software के तहत कार्यालय में पेंशन मामलों का निष्पादन हो रहा है। इस Software का Development पटना के एक स्थानीय फर्म SERL (Software Education & Reserch Limited) ने किया है। तत्कालीन महालेखाकार महोदय श्री गौतम गूहा के निदेश में Software निर्माण का कार्य आरम्भ हुआ था। Software के Operate होने के पूर्व ही उनका स्थानान्तरण दिल्ली हो गया, फलस्वरूप Software पर कुछ दिन संशय की स्थिति बन गई थी, SAI चलेगा या SERL

वर्तमान महालेखाकार श्री आई.डी.एस. धारीवाल के कार्यालय में योगदान के साथ ही संशय के ये बादल छटने लगे। उनके प्रयास एवं निदेश से पेंशन Software का एक महत्वपूर्ण कड़ी Pension Registration Cell (PRC) ने अपना कार्य July 2008 में शुरू किया। PRC क कार्य करने की शुरुआत के साथ ही SERL के कार्य में तेजी आई और कुछ ही दिनों में यह पूर्ण-रूपेण कार्य करने लगा। वर्तमान महालेखाकार महोदय की दूरदर्शिता कुशल नेतृत्व, उच्च प्रशासनिक क्षमता एवं अनुभव का ही परिणाम है कि सितम्बर 2009 को समाप्त हुए तिमाही में मुख्यालय ने इस कार्यालय को पेंशन में Grade 'A' दिया है। इसमें इस Software का भी अहम योगदान है। अगर कोई विशेष अड़चन में नहीं हो तो मुझे कोई ऐसा कारण नजर आता कि कार्यालय को यह Grade Maintain करने में परेशानी होगी। SAI में जहाँ 100% Computer Literate की आवश्यकता थी, SERL Software में लोग कार्य करते-करते (Learning by doing) computer literate हो गए हैं। Pension wing कि सभी employee इस Software को Operate करने में सक्षम हैं। ASP. Net में लिखे इस Programme में

इच्छित जानकारी Mouse click करते ही मिल जाती है। Command लिखकर जानकारी हासिल करने की dbase की चुनौती को इस प्रणाली ने समाप्त कर दिया।

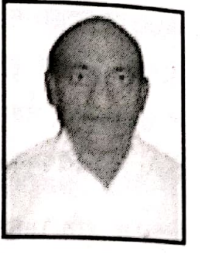
वर्तमान लेख लिखे जाने तक इस Software के माध्यम से 51714 (इक्वान हजार सात सौ चौदह) मामले छप चुके हैं। प्राधिकार पत्र Web page के रूप में Laserjet printer से छपता है जिससे कि DMP वाली परेशानी भी समाप्त हो गई। किसी तरह की परेशानी पर SERL का site support सम्प्रति प्राप्त है जिससे आने वाली परेशानियाँ दूर कर दी जाती है। सम्प्रति मामले के निष्पादन में लगा औसत समय 12 से 18 दिन है जो पहले के तुलना में काफी कम है।

आने वाले समय में बिहार के कर्मचारियों के छोटे वेतन से संबंधित पेंशनरी लाभ का निष्पादन की इसी Software से होनी है जो इसका असली इम्तिहान होगा छोटे वेतन आयोग के तहत इस Software के माध्यम से कार्य आरम्भ हो चुका है और अभी तक परिणाम उत्साह वर्धक है।

इस Software के लागू होने के बावजूद गणनापत्रक/प्राधिकार का AO और अनुभाग के बीच दो तीन बार आने जाने की प्रक्रिया का समापन नहीं हो पाया है, जो एक चुनौती है। इस प्रणाली की प्रमुख चुनौतियाँ हैं:— (1) user end पर Netwring slow.. रहने के कारण feeding में दिक्कतें, Server error का बार-बार आना, emp-code दो से भिन्न मामलों में समान हो जाना और कतिपय मामले में printer का सहयोग नहीं करना। ये कुछ समस्याएँ हैं जिनके समाधान ढूँढ़े जाने हैं, चुनौती है तो उसका समाधान तो मौजूद रहता ही है, आवश्यकता है उन चुनौतियों को स्वीकार करने की। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि कुछ दिनों में यह एक त्रुटिरहित आदर्श पेंशन Software होगा, जिसका अनुकरण विभिन्न कार्यालय करना चाहेंगे।



चालाक आदमी अवसर को लक्ष्य प्राप्ति रूपी किस्मत में बदल देता है ।



□ श्री बनवारी सिंह
लिपिक

हमार कार्यालय

ए. जी. ऑफिस बा बिहार के नमूनवां,
ऐ गुनवा कहाँ से सुनाउ नाए ॥
बगले में बाटे रेलवे स्टेशनवा,
बगले में बस स्टेशनवा,
पूरे बिहार के कर्मचारी लोगन के
आवे जाये के अच्छा वा सधनवा,
ए गुनवा कहाँ ले सुनाउ नाए ॥
बगल में वाटे पर्यटन ऑफिस,
बगले में सोन भवनवा,
सामने में बाटे सर्किट हाउस,
मात्र अफसर लोग के बाटे विश्रमवा।
एक गुनवा कहा ले सुनाउ नाए ॥

कार्य

जी. पी. फंड, पेंशन बनेला, बनेला वेतनपूर्जा,
एक माह के अन्दर-अन्दर जिला वाईज पहुँच जाला डाकखनवा।
ऐ गुनवा कहाँ ले सुनाउ नाए ॥
ए. जी. ऑफिस बा बिहार के नमूनवां,
ए गुनवा कहाँ ले सुनाउ नाए ॥

आडिट का कार्य

पूरे बिहार के आडिट इहे से होला,
गलती पकरइला पर जालन जेल खनवा।
ऐ गुनवा कहाँ ले सुनाउ नाए ॥
ए. जी. ऑफिस बा बिहार के नमूनवां,
ए गुनवा कहाँ ले सुनाउ नाए ॥
कविता बना के गावेलन बनवारी भाई जिला पटना के,
भाई खास ठनका नेठरा ठिकैतपुर मकनवां,
ऐ गुनवा कहाँ ले सुनाउ नाए ॥
ए. जी. ऑफिस बा बिहार के नमूनवां,
ए गुनवा कहाँ ले सुनाउ नाए ॥
जय हिन्द !

मकई

मकईया रे तोर गुण कहलो ना जाला ।
मकईया रे तोर गुण कहलो ना जाला ॥
आगे आगे हर चले पिछे से बोआला ।
ओकरा पिछे हेंगा चले खेत के बराबर होला ॥
मकईया रे तोर गुण कहलो ना जाला ।
एक बिता के होला तो खुरपी से सोहाला ॥
भर ठेहुना के होला तो कुदारी से कोड़ाला ।
मकईया रे तोर गुण कहलो ना जाला ॥
तैयार होने पर दिन करी धार धार रात ।
खाला सुअरा तनीमनी दिन पड़े ले के भागे बोरआ ॥
मकईया रे तोर गुण कहलो ना जाला ।
मकईया रे तोर गुण कहलो ना जाला ॥
भात करे फदर फदर रोटी फट जाला ।
दूध दही मिलला पर सटर सटर जाला ॥
ऐ बा गरीबवन के निवाला ।
बाड़ा बाड़ा साहेब लोग पाउडर के दूध के साथ चम्मच से बड़ा
प्रेम से खाला ॥
मकईया रे तोर गुण कहलो ना जाला ।
कविता बना के गावेलन बनवारी भाई ॥
ऐ. जी. ऑफिस के केयर टेकर बा भाई ।
अधिकारी कर्मचारी लोगन के जवन चीज के पड़े जरूरत,
वही तुरन्त देवल जाला ॥
मकईया रे तोर गुण कहलो ना जाला ।
मकईया रे तोर गुण कहलो ना जाला ॥

जय हिन्द जय भारत

कैंसर में गुणकारी— “श्याम तुलसी” रोग परिचय, लक्षण, कारण एवं उपचार



□ वैद्य डा. रामेश्वर राम

वरिय लेखाकार

धान के खेत में, तालाब में काम करते वक्त जब भूलवश हाथ से कंकड़ा (Cancer) पकड़े जाने पर काट देता है और कंकड़ा काटने पर हाथ में जैसा तीव्र दर्द एवं जलन होता है ठीक वैसा ही दर्द, जलन कैंसर के रोगी को हमेशा होते रहता है। वह ठीक से न तो खा पाता है, न ठीक से सो पाता है। उसके चेहरे काले होते जाती है तथा मुंह का सूरत-शक्ल बदरंग हो जाता है। चेहरे पर बड़े-बड़े घाव, मुंह के कैंसर में भी बड़े-बड़े घाव हो जाते हैं। शरीर के किसी भी अंग में कैंसर हो सकता है।

लक्षणः—कैंसर के रोगी को शाम को जाड़ा देकर तेज बुखार हो जाता है और रात में दर्द से कराहते रहता है।

कारणः—ज्यादा खैनी, बीड़ी, सिगरेट के सेवन करने वाले को कैंसर हो जाता है तथा रोज खस्सी, बकरी का मांस खाने वाले को भी कैंसर होने की संभावना रहती है। खस्सी का मांस 48 घंटा में पूरी तरह पचता है। रोज खस्सी बकरी का मांस खाने वाले को पहले दिन का खाया हुआ मांस ठीक से पचा भी नहीं कि दूसरे दिन खा लिया। पहले दिन का खाया हुआ मांस अंतड़ी में जमा होकर सड़ने लगता है और फिर आंत का कैंसर हो जाता है। यह अमेरिका में ज्यादा होता है। चूंकि, वह ठंड प्रदेश है। वहां के लोग रोज ही मांस-मदिरा खाते-पीते हैं। मांस का ठीक से पच-अपच नहीं होने से कैंसर हो जाता है।

उपचारः—

1. कैंसर के रोगी को सुबह स्नान के बाद श्याम तुलसी का 35 पत्ता खाली पेट में खिला कर एक गिलास पानी पिला देने से कैंसर के रोग में बहुत लाभ होते देखा गया है। एक महीना श्यामा तुलसी का 35 पत्ता सेवन कराने के बाद जांच कराने पर 40 प्रतिशत लाभ देखा गया है। कैंसर के रोगी

को श्याम तुलसी का तबतक सेवन करना चाहिए। जब तक वह पूरी तरह निरोग (ठीक) नहीं हो जाय। श्याम तुलसी का 35 पत्ता रोज सेवन करने पर 10 दिनों के बाद उसके चेहरे का रंग जो काला हो गया तथा बदरंग हो रहा था वह सामान्यतः ठीक होने लगता है।

2. कैंसर रोगी को शाम के समय एक आंवला रूद्राक्ष (जिसमें एक भी धारी नहीं हो) अथवा पांच मुखी रूद्राक्ष को रूखड़े सीलवट पर घीसें। रूद्राक्ष जब चटनी की तरह जमा हो जाये तो उसे कैंसर रोगी को चटाकर पानी पीला देना चाहिए। कम-से-कम आधा रूद्राक्ष का चटनी चटाना चाहिए।

3. कैंसर रोगी को आंवला रूद्राक्ष नहीं मिलने पर 5 मुखी रूद्राक्ष का 12 दाना का माला बनाकर सोमवार के दिन गले में पहना देना चाहिए।

4. एक साफ बाल्टी में पानी भरकर धूप में दिन भर रख दें और उसी पानी को कैंसर के रोगी को भोजन के समय पानी पीने के लिए देना चाहिए, लाभ होगा।

5. कैंसर के रोगी को रात में देशी गाय (सींग वाली गाय) के बगल में बोरा बिछाकर सोना चाहिए, इससे कैंसर ठीक होगा। देशी गाय का कच्चा एक-एक गिलास दूध सुबह-शाम पीलाना चाहिए। कैंसर रोगी को गाय की खूब सेवा करनी चाहिए।

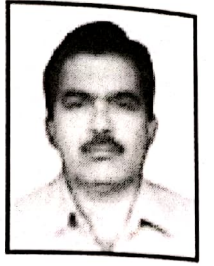
परहेजः—खैनी, बीड़ी, हुक्का, मांस, मछली, अंडा बिल्कुल बंद कर देना चाहिए। उसे सात्विक भोजन देना चाहिए। खैनी का लत लगा हुआ हो तो उसे लौंग चबाने के लिए देना चाहिए। उससे मुख का कैंसर में भी लाभ होगा।

(लाख दवा की एक दवा परहेज है।)



कोई भी कठिनाई क्यों न हो, अगर हम सचमुच शान्त रहें तो समाधान मिल जायेगा।

रवून का रिस्ता



□ श्री हरेराम प्रधान

वरिष्ठ लेखाकार

बाबू मदन सिंह रोबिले किस्म के इंसान थे। कड़ी-कड़ी मूँछें, लाल-लाल आखें, तना हुआ सिना के साथ जब सड़क पर निकलते थे, तो लोग उनसे आँख मिलाने में सकुचाते थे। फौज से सेवा निवृत्त हुये थे। लोग उन्हें नाम से कम सिपाही जी कहकर ही ज्यादा सम्बोधित करते थे। मदन सिंह का परिवार सामान्य था। परिवार में तीन बेटियाँ एवं दो बेटे थे। मदन सिंह की पत्नी का नाम शान्ति देवी था। नाम के अनुरूप उनका स्वभाव नहीं था जिसके कारण मदन सिंह कभी-कभी ताने मारते हुये उन्हें अशान्ति देवी कहा करते थे।

मदन सिंह अपने सामर्थ्य के अनुरूप बेटे-बेटियों का लालन-पालन एवं शिक्षा-दीक्षा दिलाने का भरपूर प्रयास किये। सामर्थ्य के अनुसार दान-दहेज देकर बड़ी बेटी की शादी धूमधाम से किये। बेटी ससुराल चली गई।

ससुराल में राजी-खुशी से रहने लगी। इधर शान्ति देवी का मन बेटी के बिना नहीं लग रहा था। बेटी को मायके लाने का अनुरोध बार-बार मदन सिंह से करने लगी। अन्त में मदन सिंह बेटी के ससुराल गये एवं उसे बिदा कराकर अपने घर लाये। साथ में दो नाती भी आये। बेटी के साथ नाती को देखकर शान्ति देवी के खुशी का ठिकाना नहीं था। दिन बितने लगे, खुशी से सभी लोग मिल-जुलकर रहने लगे।

मदन सिंह की दूसरी बेटी भी सयानी हो गई। उसकी शादी की चिन्ता मदन सिंह को सताने लगी। जहाँ कहीं भी लड़का का पता चलता था, मदन सिंह बेहिचक वहाँ पहुँच जाते थे, पर लेन-देन की बात आते ही अपने सामर्थ्य को टटोलते हुये अपनी बड़ी-बड़ी मूँछों की तौहीनी देखकर उस पर हाथ फेरते हुये बुझे मन से घर लौट आते थे। कहते हैं कि एक दिन ऐसा भी आता है, जब दुखी इन्सान के घर में खुशी आती है, तो वह खुशी से फूले नहीं समाता है। मदन सिंह के घर में ऐसी ही खुशी आई थी। मदन सिंह के बेटे की नौकरी फौज में हो गई थी। पूरा परिवार खुश था। मदन सिंह एवं

शान्ति देवी बेटे को ट्रेनिंग में जाने के लिए खुशी-खुशी विदा करने लगे। शान्ति देवी की आँखों के आँसू थम नहीं रहे थे। बेटा झुककर पैर छुआ और माँ के आँसू को पोछते हुये गले से लगकर वह भी रोने लगा। माँ-बेटे एक दूसरे से नहीं रोने को कहने लगे। मदन सिंह यह दृश्य देखकर खुद को नहीं सम्भाल सके और उनकी आँखें भी छलछला गई। किसी तरह से माँ-बेटे को अलग किये और स्टेशन पर गाड़ी पकड़वाने के लिए ले गये। स्टेशन से लौटते समय बार-बार मदन सिंह की आँखों के सामने बेटा का चेहरा उभर कर आ जाता था और वह पुराने ख्यालों में डूब जाते थे।

दिन बितता गया और मदन सिंह के बेटे की ट्रेनिंग भी खत्म हो गई। ट्रेनिंग पूरा करने के पश्चात मदन सिंह का बेटा घर आया और ढेर सारे सामान सभी के लिए लाया। मदन सिंह एवं शान्ति देवी बहुत खुश थे। खुश क्यों न हों जब मदन सिंह के बोझ को हलका करने में उनका बेटा जो हाथ बँटा रहा था। अब मदन सिंह को लगने लगा कि बेटी की शादी अब आसानी से कर लूँगा।

मदन सिंह के बेटे का रिस्ता अनेक जगहों से आने लगा, परन्तु मदन सिंह अभी बेटा की शादी करने के पक्ष में नहीं थे। उनका अभी एक मात्र अभियान बेटी की शादी करना था। सभी को एक ही जवाब देते थे, जिसके घर में जवान बेटी हो, वह भला उसे छोड़कर बेटे की शादी पहले कैसे कर सकता है।

मदन सिंह की बेटी का रिस्ता उनकी पत्नी शान्ति देवी के दूर के किसी रिस्तेदार के सहयोग से उसके रिस्तेदार के यहाँ तय हो गई। शादी धुम-धाम से सम्पन्न हो गई। बेटी ससुराल चली गई। अब मदन सिंह की चिन्ता कुछ कम हुई। कुछ चिन्ता कम इस मामले में हुई कि बेटी की शादी हो गई। परन्तु, असली चिन्ता मकान बनाने की थी, ताकि मकान बनाकर बेटे की शादी कर लें। धीरे-धीरे मकान बनाने में

भी हाथ लगा दिये, बेटे का पूरा सहयोग मिल रहा था। आधे-अधूरे मकान बनकर तैयार हो गया। अब रिश्तेदारों को ढाल नहीं सकते थे। औकात से अधिक दान दहेज लेकर उसकी शादी तय कर दिये और धूम-धाम से बेटे की शादी सम्पन्न हो गई। घर में बहू आई गई। मान-सम्मान सभी को देने लगी और उसे भी मान-सम्मान मिलने लगा।

घर गृहस्थी की गाड़ी अच्छी तरह से चलने लगी। शान्ति देवी का मन घर में कम तथा पड़ोसियों से गप करने एवं देवी देवताओं में ज्यादा लगने लगा। किसी-किसी दिन तो वह रात में भी जागरण में जुटी रहती थी। इसका कारण यह था कि मदन सिंह भी घर से दूर किसी शहर में पार्ट टाइम की नौकरी करने लगे थे। मदन सिंह से शान्ति देवी की शिकायत किसी ने नहीं किया कि जागरण में रातभर घर से बाहर रहती है, परन्तु इसकी भनक पड़ोस में मित्रों से उन्हें लग गई।

मदन सिंह मन ही मन शान्ति देवी की करतूतों से दुःखी रहने लगे, पर अपनी पीड़ा शान्ति देवी से उन्होंने कभी भी नहीं बताई। उन्हें दुःखी देखकर शान्ति देवी भी घबराने लगी, परन्तु उनमें हिम्मत नहीं थी कि पति से इसके बारे में बात करें। समय बितता गया। मदन सिंह एवं शान्ति देवी में खटास बढ़ता गया। शान्ति देवी को लगने लगा कि हो-न-हो उनकी शिकायत बहू ने बेटे से की होगी और बेटा बाप से कहा होगा, जिसके कारण मदन सिंह उनसे नाराज हो गये हैं, पर वास्तव में ऐसी बात नहीं थी। भला बहू और बेटा उनकी शिकायत क्यों करने लगे। उन्हें तो मदन सिंह एवं शान्ति देवी को खुश देखना था। परन्तु, शान्ति देवी शान्ति से बैठने वाली नहीं थी। वह खूद बहु और बेटे के अचानक स्वभाव में आये बदलाव को हथियार बनाकर मदन सिंह से उनकी शिकायत करने का सिलसिला शुरू कर दी। इसका कारण भी था। मदन सिंह का बेटा शादी से पहले जितना पैसा देता था, उसमें कमी आ गई। स्वभाविक है कि बहू की जरूरतों को पूरा करने में पैसा खर्च होता होगा, जिसके चलते पैसा कम देता होगा। इसी बात को लेकर शान्ति देवी मदन सिंह को बहू-बेटे की नियत पर शक करके उनके खिलाफ भड़का दी। मदन सिंह कम पढ़े-लिखे इन्सान थे, पत्नी के बहकावे में आ गये।

बेटा छुट्टी में घर आता था। इस बार घर के लोग उससे कटे-कटे रह रहे थे। भर मुँह बात भी कोई नहीं करता था। बेटा को समझ में नहीं आ रहा था कि कौन सी बात हो गई, जिसके कारण परिवार के लोग उससे नाराज हो गये हैं। मदन सिंह को तो पैसा चाहिए, परन्तु इस बार वह पैसा नहीं दे सका, क्योंकि पैसा उसके पास था ही नहीं। शान्ति देवी

अपने शक को सच करते हुए मदन सिंह से कही कि देखते हैं न इस बार पैसा नहीं दिया। जान बूझकर हमलोगों को परेशान कर रहा है। बहू जैसे कहती है वैसे चलता है। मदन सिंह शान्ति देवी के बहकावे में आ गये। शान्ति देवी तो यही चाहती थी।

बेटा की छुट्टी खत्म होने पर थी। एक दिन मदन सिंह बेटा को बुलाकर सबके सामने गजरने लगे और कहने लगे कि बहू को भी अपने साथ लेते जाना। हमारे जीते जी यह नहीं होगा कि तुमलोग मौज मस्ती करो और हम बुढ़ापा में भी पार्ट-टाइम नौकरी करें। मदन सिंह शान्ति देवी के बहकावे में इतना बहक गये कि पता नहीं चला कि क्या बोल रहे हैं। थरथराती आवाज में बोलती बोले “जाओ मेरे मरने पर भी मुझे देखने मत आना।”

बेचारा बेटा शान्त मन से सब सुन रहा था। उसकी हिम्मत नहीं थी कि मदन सिंह से कुछ कहे। जाते समय शान्ति देवी का पैर छूकर आशीर्वाद लेना चाहा, पर शान्ति देवी के मुँह से आशीष के एक शब्द भी नहीं निकले। मदन सिंह तो अपना पैर ही खिंच लिए। बेटा बहू को लेकर घर से विदा हो गया भारी मन से, आँसुओं का शैलाव लिये हुये। दिन बितता गया। बेटा घर पर फोन करके हाल चाल जानना चाह रहा था, पर फोन कोई नहीं उठाता था। कभी कभार इधर-उधर से घर का समाचार मिल जाता था।

मदन सिंह शान्ति देवी के बहकावे में बेटा को भला-बुरा तो कह दिये थे, पर अब उन्हें पछतावा हो रहा है कि आखिर मेरा बेटा ही तो है। इसके बहकावे में न जाने क्या-क्या कह दिया और बेटा ‘गुड ब्वाय’ बनकर सब सुन लिया। एक शब्द भी नहीं बोला। जाते समय भी हमने उसके साथ दुर्व्यवहार किया। इसकी सजा भगवान हमें अवश्य देगा। ऐसा कहते-कहते मदन सिंह सिसिकिया भरने लगे। अपनी करनी पर उन्हें अफसोस होने लगा। मन में सोचने लगे कि लड़ाई के मोर्चा पर मेरा मन कभी विचलित नहीं हुआ। मेरा दिल कठोर था, अब ऐसा कैसे हो रहा है। शायद बहू-बेटे की याद सता रही है। किस मुँह से उनलोगों को कहूँ कि तुमलोग आ जाओ और यदि आ भी गये तो उनसे आँखे कैसे मिलाऊँगा, निंद में बड़बड़ा रहे थे और कह रहे थे कि सब इसी शान्ति देवी का किया हुआ है, इसी ने अशान्ति फैलाई है। उनकी बड़बड़ाहट सुनकर शान्ति देवी ने उन्हें झकझोर कर उठाया और बोली कि कोई बुरा सपना देख रहे थे का ? मदन सिंह कुछ नहीं बोले सिर्फ सिर हिला दिये। मदन सिंह किसी से कुछ कहते नहीं थे, पर मन-ही-मन भीतर से टूट चुके थे।

अनजाने में शान्ति देवी के बहकावे का अब उन्हें पछतावा हो रहा था। पर पछताने से अब क्या फायदा। मदन सिंह के दिमाग में बिती हुई बातें अनायास याद हो जाती थीं और वे गम में डूब जाते थे। मदन सिंह बिमार होने लगे। उनकी तबीयत दिनों दिन खराब रहने लगी। एक-दो दिन ठीक रहते तो पुनः बिमार हो जाते। इस तरह उनका शरीर काफी कमजोर हो गया। एक दिन की बात है कि अचानक वे बरामदे में गिर गये। किसी तरह से उन्हें उठाकर घर में ले जाया गया। डॉक्टर बुलाया गया। डॉक्टर देखकर बोला कि इन्हें किसी बात का सदमा लगा है जिसके चलते ऐसा हुआ है। घबराने की बात नहीं है। डॉक्टर ने यह नहीं बताया कि उन्हें दिल का दौरा पड़ा है और वह भी जबरदस्त। डॉक्टर दवा देकर चला गया और समझाता गया कि इन्हें आराम की जरूरत है। ज्यादा सोचने या चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। पर चिन्ता किसी के कहने या न कहने से थोड़े ही दूर होती है, यह तो अनायास ही हो जाती है।

शान्ति देवी मदन सिंह को 'सिपाही जी' कहकर सम्बोधित करती थी। आज मदन सिंह के बगल में बैठकर उनसे पूछी "सिपाही जी, आपकी तबीयत दिनों-दिन खराब होती जा रही है, परन्तु आप अपने दिल की बात नहीं बताते हैं, आखिर किससे कहियेगा। आप कहें तो बहू-बेटे को आपकी बीमारी के बारे में जानकारी दें दे।

मदन बाबू कातर निगाहों से शान्ति देवी की ओर एक पल देखने लगे, पर उनकी जुबान से एक शब्द भी नहीं निकला। सिर्फ 'ना' में गर्दन हिला दिये। मुहल्ला में चर्चा जोरों पर थी कि मदन बाबू काफी दिनों से बीमार हैं, पता नहीं क्या होगा। इसकी जानकारी तो उनके बहू-बेटे को दे देनी चाहिए। आखिर उनका बेटा है, गुस्से में कुछ कह दिये उससे क्या होना है, उससे उनका खून का रिस्ता है, उसे कोई दूर नहीं कर सकता है।

मदन सिंह की बीमारी की खबर उनके बहू-बेटे को किसी तरह मिल गई। बेटा बिना सोचे समझे की आने से मना किये हैं, छूट्टी लेकर बहू के साथ घर चल दिया। मदन सिंह

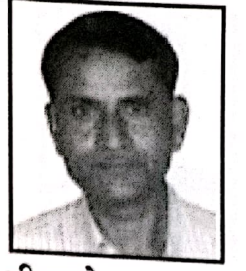
की बात उसे रह-रहकर सता रही थी कि बाबूजी मना किये थे कि मेरे मरने पर भी मत आना। काश मेरे बाबू जी सही सलामत हों। भगवान उन्हें स्वस्थ रखें। लेकिन होनी को कौन टाल सकता है। बेटा-बहू जैसे ही घर के पास आये तो देखा कि उसके घर के पास काफी भीड़ लगी है। घर के पास आते ही किसी से दबी आवाज में कोई कह रहा था कि बेचारे बेटा-बहू को समय पर खबर नहीं दी गई जिसके चलते आते-आते देर हो गई। मदन सिंह बेटे-बहू को नहीं देख सके। बेटे-बहू के आने में कुछ देर पूर्व मदन बाबू इस दुनिया को छोड़ चुके थे। बहू-बेटे घर में उनके पार्थिव शरीर के पास जाकर उनके पैरों को पकड़कर रोने लगे। रो-रोकर उनका बूरा हाल था। उनके आँसूओं से मदन बाबू का चरण धूल रहा था। बहू-बेटे मदन बाबू का चरण छोड़ नहीं रहे थे, किसी तरह शान्ति देवी और उनकी बेटी ने उन दोनों को मदन बाबू के पास से अलग किया। इसके पश्चात दाह-संस्कार का कार्य शुरू किया गया। बेटे ने मुखाग्नि दी। इस प्रकार मदन सिंह का नश्वर शरीर पंचतत्व में विलीन हो गया। सभी की जूबान पर एक ही शब्द था कि मदन सिंह के बेटे ने खून के रिस्ते को निभाया। अब शान्ति देवी सचमुच देवी शान्ति के नाम से चर्चित हो गई। पूजा-पाठ में उनका ज्यादा समय बितने लगा। बेटे से कहकर बहू को अपने पास ही रखने की जिद करने लगीं। बेटा उनके आग्रह को मान लिया और बहू को घर छोड़कर अपनी ड्यूटी पर चला गया। अब शान्ति देवी को एहसास हुआ कि बेटी और बहू में अन्तर नहीं होता है, जो प्यार बेटी को दिया जाता है, वही लाड़-प्यार बहू को दिया जाय तो बहू बेटी से भी ज्यादा सेवा सत्कार और मान-सम्मान करेगी।

आज मदन सिंह इस दुनिया में नहीं हैं, परन्तु उनके रोबिला स्वभाव और उनकी कड़ी-कड़ी मूँछों की याद उनके संगमरमर वाली आदम कद मूर्ति कराती है। जी हाँ, उनके बेटे ने उनके घर के बगल में उनका स्मारक बनवाकर उनकी आदम कद मूर्ति को स्थापित करा दिया है। मूर्ति के नीचे सुन्दर-सुन्दर अक्षरों में लिखा है, "मदन सिंह उर्फ सिपाहीजी"।



साधना एक पराक्रम है, संघर्ष है जो अपनी ही दुष्प्रवृत्तियों से करना होता है ।

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैत्र नरोत्तमम् देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जय मुदिरयेत् । “भ्रष्टाचार”



□ श्री राजेन्द्र कुमार
वरिष्ठ लेखाकार
हिन्दी कक्ष

जल की धारा जब भी बहती, बहती उपर से नीचे,
निर्मल हो तो निर्मल बहती, गंदी हो तो गंदी नीचे ।
देखो बहाकर, गंदगी तुम, क्या नीचे से उपर को जाएगा,
नहीं बहेगी, नहीं बहेगी, स्वच्छ जल उसे बहा ले जायेगा ।
भ्रष्टाचार वैसे ही फैला, जैसे जहर यमुना जल में,
भ्रष्टाचार मिटे तो जग में, हो स्वच्छ समाज धरती तल में ।
संसद, न्यायालय और प्रशासन से आती है बू भ्रष्टाचार की ।
जहाँ से सेवा होती है देश, शहर और गावों की ।
भ्रष्टाचार का बीज पनपा है, मुगल और अंग्रेजी शासन से,
देश में आज भी वही बीज, फैला रहे भ्रष्टाचारी, संसद से ।
भ्रष्टाचार मिटाना हो तो बंदे, सजा बना दो फाँसी का,
छोटा हो या बड़ा वो बंदे, सबको सजा हो फाँसी का ।
निकल जाते हैं बड़े सजा से, जाते फँसाये छोटे वहाँ ।
सजा मिले बड़ों को यदि तो, छोटों में फिर दम कहाँ ।
भ्रष्टाचार न्यायालय में फिर क्यों ? दुहाई दी जाती जहाँ न्याय की ।
सर्वोच्च न्यायालय, मुख्य न्यायमूर्ति, जहाँ देते बयान हैं न्याय की ।
न्याय दिलाने में जज सोंचे, छोटे-बड़ों के ज्ञान का,
बड़े ज्ञान में गलती करते, छोटे करते अज्ञानता का ।
एक ही गलती के लिए, करो न्याय उसे जानकर ।
सजा दुगुनी हो ज्ञान वालों को अज्ञानवालों को अनजान जानकर ।
माफी न दो, कभी सजा को तभी ये भ्रष्टाचार मिटेगा ।
सुधरेगा ससमाज इस देश में नवयुग का निर्माण होगा।
दस प्रतिशत भ्रष्टाचार उपर हो, होती सौ प्रतिशत नीचे आते-आते
भ्रष्टाचार मिटाना है तो साथी, मिटा दो भ्रष्टाचार प्राणायाम करते-करते ।
मिटते ही भ्रष्टाचार उपर का, नीचे का स्वतः मिट जाएगा,
कल कोई न होगा भ्रष्टाचारी, स्वर्ण विहान ले आएगा ।



सच्ची लगन तथा निर्मल उद्देश्य से किया हुए प्रयत्न कभी निष्फल नहीं जाता ।

कथनी और करनी



□ श्री रामदेव झा

वरिष्ठ लेखाकार

बात उन दिनों की है, जब यातायात की व्यवस्था न के बराबर थी। एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने में लोगों को अत्यधिक कठिनाई का सामना करना पड़ता था। उस समय शिक्षित लोग भी कम थे, क्योंकि तब स्कूल कॉलेजों की संख्या भी बहुत कम थी और ज्ञानार्जन के लिए लोगों को अत्यधिक परिश्रम करना पड़ता था। पत्र-पत्रिकाएँ एवं समाचार पत्र भी उन दिनों इक्के-दूक्के ही दिखाई पड़ते थे। किसी बड़ी घटना के घटित होने के दो चार दिन बाद ही लोगों को उसका पता चल पाता था।

उन्हीं दिनों एक लेख किसी समाचार पत्र में प्रकाशित हुआ। उसे लिखने वाली लेखिका का नाम कल्पना था। लेख में परतंत्र भारत के लोगों के दयनीय स्थिति का वर्णन बहुत ही मार्मिक ढंग से किया गया था। मोहन नाम का एक लड़का जिसे उस जमाने के अनुसार शिक्षित माना जा सकता था, उसकी दृष्टि भी कल्पना के उस मार्मिक निबंध पर पड़ी। क्या सोच थी लेखिका की। लगता था जैसे अंग्रेजों के जूलम का दृश्य हबहु घटित हो रहा है। जितनी बार मोहन उसे पढ़ता उसके मन में अंग्रेजों के प्रति घृणा एवं भारतीयों की दयनीय स्थिति पर दया आने लगती। फिर वह यह सोचने पर विवस हो गया जिस कल्पना (लेखिका) की कल्पना में इतना चातुर्य, इतनी सरसता है, वह कितनी सुन्दर होगी? वह कल्पना में खोता चला गया। उससे मिलने की व्यग्रता से वह बेचैन हो उठा। बहुत पता करने पर मोहन को मालूम हुआ कि कल्पना कलकत्ता (आज का कोलकाता) की रहने वाली है। जिस समाचार पत्र में कल्पना का लेख प्रकाशित हुआ था, उससे प्रेरित होकर मोहन अपनी रचना उसी समाचार पत्र में देने लगा। अपनी रचनाओं में वह कल्पना की उस रचना का उल्लेख भी अवश्य करता था। इस प्रकार दोनों में एक दूसरे से मिलने की उत्सुकता बढ़ती गई, फिर समाचार पत्र से बात पत्र तक आ गई। पत्रों में दोनों का एक दूसरे से मिलने की उत्कण्ठा एवं तड़प साफ दिखाई देती थी।

कल्पना को लगने लगा कि उसकी दुनिया अब रंगीन हो गई है। उसका मनमौत उसे अब मिल चुका है। इतनी खुश वह पहले कभी नहीं दिखती थी। एक दिन जब वह मोहन की कल्पना में डुबती उतराती कुछ गुनगुना रही थी तो उसके पिता ने हँसते हुए पुछ ही दिया, “क्यों बेटी, आजकल बहुत खुश दिख रही हो। क्या बात है?” आखिरकार लजाते-लजाते उसने पिता को सारी बात बता दी। अमर

जी (कल्पना के पिता) की खुशी की ठिकाना नहीं रहा। जिस पुत्री की शादी के लिये अनेकों दरवाजों पर उन्होंने अपनी नाक रगड़ी थी, मिन्नते की थी परन्तु कहीं भी आश्वासन तक न मिला था, आज बिन मांगे उन्हें सब कुछ मिल गया था। गद्गद् कंठ से कल्पना को उन्होंने गले लगा लिया “बेटी आज तुने मुझे दुनिया की सारी खुशी दे दी।”

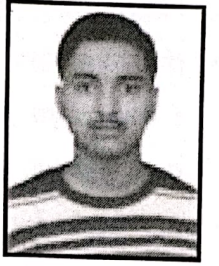
एक दिन मोहन कल्पना से मिलने कलकत्ता पहुँचा। कल्पना तो उसकी आस में नजरें बिछाई हुई थी। अमरजी ने भी भावी दामाद के आवभगत की पूरी तैयारी कर ली थी। मोहन जब स्टेशन पर उतरा तो दोनों (पिता-पुत्री) उसकी ही प्रतीक्षा कर रहे थे। मोहन को देखते ही कल्पना जोर से चहकते हुए चिल्लाई “मोहन जी, मैं ही कल्पना हूँ। आईये, इधर आइये” कल्पना को देखते ही मोहन को चक्कर आने लगा। क्या इसी कल्पना के लिये मैं इतना व्यग्र था। इतनी कुरूप लड़की तो मैंने आजतक नहीं देखा है। कुछ पलों के लिए वह रूका और फिर यह कहते हुए वहाँ से चला गया कि मुझे कुछ आवश्यक काम याद आ गया है। फिर कभी आपलोगों से मिलुंगा।

कल्पना पर उस समय क्या बिता होगा, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। जिस मोहन के लिये वह पलकें बिछाई हुई थी, वही रौंदते हुए से चला गया। पिता के गले लगकर वह फुट-फुटकर रोने लगी। अमर जी भी हतप्रभ हो गये थे। पुत्री के विवाह के लिये क्या-क्या सपने नहीं संजो रखा था उन्होंने। पर, सपना तो टूटा ही है। डब डबाई आँखों से पुत्री को ढाँढस बंधाने लगे “चलो बेटी घर चलो।” लगता है तुम्हारे भाग्य में भगवान ने दुःख ही दुःख लिखा है। लम्बी चौड़ी भाषण देने वाले बहुधा मिल जायेंगे, परन्तु सच्चाई की धरातल पर साथ निभाने वाले विरले ही होते हैं।”

स्टेशन से जाते हुए कल्पना को मोहन की एक-एक बात (पत्र के माध्यम से) याद आने लगी। एक पत्र में उसने लिखा था। शारीरिक सुन्दरता तो क्षणभंगुर होती है। वास्तविक सौन्दर्य तो हमारे सोच में हमारी लेखनी में होनी चाहिये। पर वाह रे मोहन! फिर उसने (कल्पना) एक झटके के साथ अपने आपको उबार लिया, मैं क्यों उस बहुरूपिये, पाखण्डी की याद में खोई रहूँ, जबकि वह मुरली वाला मोहन तो न जाने कब से घर में मेरी राह देख रहा होगा।

ठगो मत चाहे ठगा जाओ! क्योंकि संसार में हमेशा नहीं रहना है, जाना अवश्य है और साथ कुछ नहीं जायेगा - यह भी निश्चित है।

काँटो का जीवन



□ श्री शशिशंकर झा

सुपुत्र श्री रामदेव झा

वरिष्ठ लेखाकार

प्यारा होता है फूल, सबके नजरों में।
क्यों बूरे होते हैं काँटे, सबकी नजरों में ?
सब देखते नहीं फूलों के नजरों से,
क्या काँटे सही में बूरे होते हैं, सबकी नजरों में ?
फूल की सुन्दरता देख खुश होते हैं सब,
काँटे की कठोरता देख दुखी होते हैं सब,
क्या सुन्दर चीज ही अच्छी होती है सबकी नजरों में ?
कभी देखते नहीं, क्या है काँटे का गुण,
सभी देखते हमेशा उसका अवगुण,
हमेशा रक्षा करता है फूल की, काँटा
औरों की दर्द दे बचाता है फूल को, काँटा
क्या मदद करने वाले होते हैं बूरे, सबकी नजरों में ?
वह बिना बताए अपने गुण को, जीता है जिन्दगी,
दूसरों की नफरतों को सहकर जीता है जिन्दगी ।
क्या इतनी बूरी है काँटे की जिन्दगी ?
हमेशा दुख में जीवन व्यतीत करता है काँटा ।
सारी खुशियाँ देता है फूल को काँटा,
तो महान कौन है ? फूल या काँटा।
फिर क्यों बूरे होते हैं काँटे सबकी नजरों में ?
क्यों एक सा होते नहीं दोनों सबकी नजरों में ?



इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कोई पदार्थ नहीं है ।

बदला



□ श्री श्रीराम पाण्डे

सहायक लेखा अधिकारी

बात बस इतनी-सी है कि हरिहर साह के यहाँ अंचलाधिकारी महोदय का आगमन हुआ था।

गाँव की बात। आज के गाँव की नहीं, उस जमाने के गाँव की, जब सही मायने में गाँव गाँव होते थे। आज तो गाँव भी मानो शहर हो गये हैं। अब गाँवों में मक्का नहीं मिलता, मटर की छीमी भी यदा-कदा ही देखने को मिलती है। मिट्टी की सौंधी सुगंध वाली पगडंडियों की जगह अब कंकरीट, तारकोल या फिर सिमेंट-पत्थर वाले सड़कों ने ले लिया है। आज यही हमारे देश की प्रगति का पैमाना भी तो है। कभी-कभी मन में टिस-सा उठता है कि क्या यही हमारी प्रगति है ? लगता है जैसे किसी बच्चे से उसकी किलकारी, मासुमियत, उसका बचपन छिनकर अचानक ही प्रौढ़ बना दिया गया हो।

खैर, समय के साथ परिवर्तन तो होता ही है। हाँ तो मैं उस समय की बात कर रहा हूँ जब गाँव-गाँव होते थे। कटिहार जिले का एक गाँव है काँटाकोश। गंगा नदी के किनारे बसा होने के कारण उस गाँव की अलग ही पहचान है। छठ पर्व आरंभ होने के कई रोज पहले से ही पूरे जिले के लोगों का तांता लगा रहता है। गंगा नदी में एक डुबकी लगाने के लिये लोग अब भी आतुर रहते हैं। इसी तरह कार्तिक महिने में दूर-दूर के कई गाँवों की महिलायें प्राती (सुबह सूर्योदय होने के पूर्व गाया जाने वाला भजन) गाती हुई गंगा नदी में स्नान करते आती हैं और अपने को धन्य समझती हैं। गंगा नदी के समान ही इस गाँव के लोग बहुत ही सीधे-सादे एवं पवित्र मिजाज के हैं। परन्तु, बात जब आन पर आ जाती है तो ये लोग बरसात की गंगा बन प्रचंड रूप धारण करने में भी नहीं

हिचकिचाते। गंगा जब प्रचंड रूप धारण करती है तो फिर कैसी विभीषिका फैलाती है, यह सभी को मालूम है। हरिहर साह उसी काँटाकोश गाँव के जमींदार कहलाते थे। हालाँकि जमींदारी चली गई थी, फिर भी शानो-शौकत में कोई कमी नहीं आई। जमीन बेच-बेचकर जमींदारी की परंपरा का पालन अभी भी हो रहा था। गाँव के लोग उनकी बड़ी इज्जत करते थे। साहजी की वाक्पटुता का सभी लोहा मानते थे। एक बार का वाक्या है कि उनका नौकर गाँव के ही किसी व्यक्ति से कुछ मांगने गया तो उसने देने से मना कर दिया। हरिहर साह के मन में यह बात पैठ गई। कुछ दिन बाद वही व्यक्ति साहजी से गाय-बैलों का चारा ढोनेवाली रस्सी की जाली मांगने चला गया। साहजी ताक में तो थे ही। बोले, “हे रे, हम्मऽ त जल्ला म राई (सरसों) कसी क रखी देलऽ छी।” वह व्यक्ति मुँह फाड़कर चकित होते हुए पूछा, “साहजी, हम्मऽ समझलिये नै। भूसा क जल्ला म राई केना क रैयते।” यही तो सुनना चाहते थे हरिहर साह। तपाक से बोले, “अरे सारऽ, तों समझलें नैं कि हम्मऽ बहाना करी रहलऽ छी। जल्ला छै, पर तोरा लऽ नै छै।” वह व्यक्ति अपना सा-मुँह लेकर साहजी के यहाँ से गया। ऐसे थे हरिहर साह।

उन्हीं हरिहर साह के यहाँ अंचलाधिकारी महोदय पधारे। अफसरों से साहजी जले-भूने रहते थे, क्योंकि गाँव में आने का उनका एक ही मकसद होता था, अपनी आव-भगत करवाना एवं अपना पॉकेट गर्म करने की फिराक में लगे रहना। “आइयो सीवो साहेब। की हाल-चाल छै।” “सब ठीक ही है। साहजी, आप बहुत समय से मालगुजारी क्यों नहीं दे रहे हैं ? लगता है, नियम-कानून को ताक पर रख दिया है आपलोगों

ने।" सी. ओ. साहेब अफसरगिरी का रौब दिखाते हुए झड़पे।
 वैसे तो हरिहर साह को एक ऊपर वाले को छोड़कर किसी
 का ताव बर्दास्त करने की आदत नहीं थी। फिर भी गम खाते
 हुए बड़ी विनम्रता से बोले, "की करियो सीवो साहेब,
 खेत-खरिहान त अब्बऽ नै के बराबर बचलै। जे थोड़ा बहुत
 फसल होय छलै, अबरी ओहू गंगा मइया क किरपा से डूबी
 गैलकै। हम्मऽ वचन दैय छी कि अबकी गेहूँ भैला कऽ बाद
 तोरा ऑफिस में सभ्भे मालगुजारी चुकता करी देबौ।" सी. ओ.
 साहेब का रौद्र रूप बन रहा। उन्हें तो मालगुजारी चुकाने का
 वचन नहीं, कुछ और ही चाहिये था। हरिहर साह की अनुभवी
 आँखें भी इस बात से बेखबर नहीं थीं। न चाहते हुए भी
 धोती में लपेटा मारकर बाँधी हुई अठन्नी को निकालते हुए
 बोले, "सीवो साहेब माफ करियो, हमरा त चाह पीबै के आदत
 नै छे। अहाँ है राखू आ कुनो दुकानी म चाह पी लेबै।"
 अंचलाधिकारी महोदय भड़क उठे। अठन्नी ने आग में घी का
 काम किया था। "आपमें जरा भी तमीज नहीं। दरवाजे पर आये
 अधिकारी का ऐसे ही स्वागत किया जाता है?" "अरे-रे,
 हम्मऽ की करियो सीवो साहेब, बुढ़ौती में हम्मरऽ मती काम

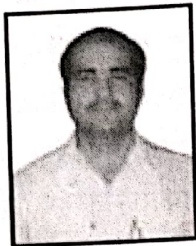
नै करै छे। अरे गनेसिया, साहेब कऽ चुड़ा-गुड़ आरो मक्खन
 लानी क खिला त।" ऊपरी ठकुरसोहाती दिखाया साहजी ने।
 महाशय को भरपेट चुड़ा-मक्खन खिलाया गया। हरिहर साह ने
 आग्रह कर-कर के चुड़ा के साथ-साथ लगभग एक पाव बासी
 मक्खन सी. ओ. साहेब को भकोसवा दिया। दमड़ी नहीं मिलने
 के बावजूद महाशय डकार लेते हुए खुशी-खुशी विदा हुए।

दूसरे दिन अपने एक बेटे को साहजी ने सी. ओ.
 साहेब का हाल-चाल लेने के लिये भेजा। साहेब के घर में
 कोहराम मचा हुआ था। पता चला कि उन्हें डायरिया हो गया
 है। दस-बारह बोटल पानी चढ़ाने के बाद भी तबियत संभल
 नहीं रही थी। होश आता था तो एक ही बात मुँह से निकलती
 थी, "यदि मैं ठीक हुआ तो उस हरिहर साह को छोड़ूँगा नहीं।
 उसकी बची-खुशी दौलत को भी नीलाम करवाके रहूँगा।" घर
 आकर बेटे ने सारी बात साहजी को बताया। ठठाकर हँस पड़े
 हरिहर साह, "सारऽ, हरिहर साह पर धौंस दिखाय छेलौ।
 अब्बऽ ओकरऽ नानी मरते जे वों हमरा सिवानों में गोड़ रखवै।
 हे रे गनेसिया, बासी मक्खन आरो घीव सम्हारी क रखलऽ
 कर। बखत पर बड़ी काम दैय छे।



महान सौभाग्य किस्मत से मिलता है। परन्तु, सौभाग्यशाली सभी हैं, सिर्फ देखने का नजरिया चाहिए।

माँ तुझे सलाम



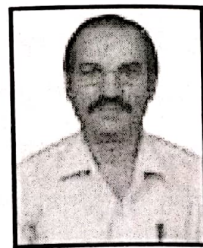
□ श्री अजय कुमार

सुपुत्र श्री हरeram
वरिष्ठ लेखाकार

सरहद पर तेरे लिए हमने,
लगाया दुश्मनों को लगाम।
माँ तुझे सलाम॥
यह देखकर सभी खुश हैं,
क्योंकि सलामत है हमारा आवाम ।
माँ तुझे सलाम ॥
हमारी समृद्धि पर, हमारी उन्नति पर,
सारी दुनिया की लगी है नजर,
माँ, मुझे गर्व है कि तूने पैदा किया
दुनिया का सरताज डा. कलाम ।
माँ तुझे सलाम ॥
माँ तुझे याद दिलाने में मुझे पीड़ा हो रही है
कुछ मेरे भाई-बहने तेरी औलाद आतंकवादी हो रहे हैं।
आश्चर्य हो रहा है, यह वही देश है,
जहाँ पैदा हुए कृष्ण बलराम ।
माँ तुझे सलाम ॥
वह दिन दूर नहीं जब हम दुनिया के नायक बनेंगे,
अध्यात्म, ज्ञान-विज्ञान एवं खेल, सभी क्षेत्रों के नायक बनेंगे,
बूरी दृष्टि रूपी रावण का करेंगे संहार राम ।
माँ तुझे सलाम ॥
हम तेरे आशीर्वाद से विकास के हर क्षेत्र में
दुनिया को पीछे छोड़ेंगे,
अपने बल -बूते पर चांद सितारों के ऊपर जायेंगे ।
बिना किये आराम ।
माँ तुझे सलाम ॥



“नव जीवन का संचार करो”



□ श्री शिव शंकर तिवारी

वरीय लेखाकार

खिला मधुबन क्यों मुरझा गया ?
किस कारण माली चला गया ?
क्या सोंचा था ? क्या हो गया ?
वह ! बसा चमन क्यों उजड़ गया ?
हर बाग की शोभा, माली से है,
गुलशन की खूशबू माली से है,
तुम चले गये, मैं तड़प रहा,
तुम मुक्त हुए, मैं बंधा रहा,
सुखे उपवन में बहार भरो,
नव जीवन का संचार करो।
तुम जन्नत की आभा बढ़ा रहे,
मेरी दुर्दिन पल है बीत रहा,
हे श्रद्धामयी ! हे पुण्यात्मा !
इस रंगमंच का किरदार बनो,
नव जीवन का संचार करो... (2)
वर्ष 2010 के नूतन किरण से,
इस बगिया को गुलजार करो,
हे दयामयी ! सर्वज्ञ पिता,
सब खता-गिला तुम माफ करो
नव जीवन का संचार करो (3)



अन्धकार में पड़ी हुई मानव जाति को प्रकाश में लाने के लिये संत-वचन
कभी नहीं बुझने वाली दिव्य ज्योति है ।

शाकाहार—बनाम मांसाहार



□ श्री भारत भूषण झा

लेखा अधिकारी

इस संसार में प्रत्येक जीवन को आहार की आवश्यकता है। आहार के बिना जीवन जिन्दा नहीं रह सकता है। आहार के दो ही प्रकार हैं:- शाकाहार और मांसाहार। संसार में कुछ जीव शाकाहारी हैं तो कुछ जीव मांसाहारी। कुछ जीवों में शाकाहारी और मांसाहारी दोनों होने की क्षमता होती है। इसी श्रेणी में मनुष्य आते हैं। मांसाहारी जीव सामान्यतः पानी अपनी जीभ के द्वारा चाटते हुए पान करते हैं जबकि शाकाहारी इसके लिए अपने मुख का ही पूर्णतया प्रयोग करते हैं।

आहार मनुष्य के शरीर एवं मन पर सूक्ष्म प्रभाव डालता है। शाकाहार मनुष्य को स्थिर चित बनाता है जबकि मांसाहार मनुष्य को चंचलचित बनाता है। प्रत्येक जीव के शरीर में कोशिकाओं के निर्माण और विनाश की प्रक्रिया की गति पर जीवों की आयु निर्भर करती है। उस प्रक्रिया की गति जीव का आहार निर्धारित करती है, वह प्रक्रिया मांसाहारी जीवों में तेज गति से होने के कारण मांसाहारी अल्पायु हुआ करते हैं जबकि शाकाहारी जीवों में यह प्रक्रिया मन्द गति से होने के कारण शाकाहारी दीर्घायु हुआ करते हैं। शाकाहारी को शुद्ध अन्न, फल एवं शाक-सब्जियों के अच्छी तरह धो-साफकर भोजन में शामिल करने से रोगों के होने का भय नहीं रहता है, परंतु मांसाहारी को रोगों की चपेट में आने का भय अपेक्षाकृत ज्यादा बना रहता है। इसका कारण है कि हम सभी जीव इस ब्रह्मांड में प्रदूषण के बीच जी रहे हैं। पर्यावरण स्वच्छ नहीं होने अर्थात् भूमि, जल एवं वायु प्रदूषित होने के कारण सभी जीव किसी न किसी रोग से न्यूनाधिक आक्रान्त हैं जो कहीं प्रकट होता नजर आता है और वह कहीं नजर नहीं आता है। इस स्थिति

में किसी जीव को आहार बनाने से उसके रोग के कीटाणु हमारे शरीर में सीधे प्रवेश कर हमें रोगी बना डालते हैं। एक समय था जब हमारे देश में अत्यधिक लोग शाकाहारी हुआ करते थे। उन दिनों विदेशों में मांसाहार का प्रचलन अधिक था। इस कारण हमारे पूर्वज स्वस्थ एवं दीर्घायु हुआ करते थे। आज हमारे देश के लोगों में मांसाहारियों की संख्या अधिक है और शाकाहारी लोगों की संख्या कम हो गई है। आप यदि इसकी जांच करना चाहें तो किसी प्रीतिभोज में सम्मिलित होइए जहाँ शाकाहार और मांसाहार दोनों प्रकार के व्यंजन प्रस्तुत हो। उसका नजारा लेने से ही प्रतीत हो जायेगा कि शाकाहारियों की संख्या कितनी प्रतिशत है। शाकाहार और मांसाहार में महँगा आहार मांसाहार ही होता है। तथापि, समाज में मांसाहार के बहुतायत में प्रचलन के कारण एक गरीब भी शाकाहार की जगह मांसाहार लेना पसंद करता है क्योंकि जीभ की लोलुपता के कारण मांसाहार उसकी मजबूरी हो जाती है।

अध्यात्म क्षेत्र में अहिंसा का बड़ा गुणगान हुआ है। शाकाहार हमें अंशतः हिंसा से बचाता है। दुनियां में जितने धर्म-सम्प्रदाय हैं, सबने एक सुर से दया एवं परोपकार को ऊँचा स्थान दिया जो अहिंसा का ही पर्याय है। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी अहिंसा के पुजारी थे। उन्होंने जीवनपर्यन्त अहिंसा की राह पर अपने को रखा। आज अहिंसा की महत्ता विश्व समझ रहा है और अहिंसा दिवस मना रहा है। इसी अहिंसा के बल पर पूज्य बापू ने बीसवीं सदी में अपने व्यक्तित्व का करिश्मा कर दिखाया। आज विश्व आतंकवाद और हिंसा से जूझ रहा है। अधिसंख्य लोगों के व्यवहार में

क्रूरता दीख पड़ता है। हमारा भोजन बहुत हद तक इसके लिए जिम्मेवार है और मांसाहार की भूमिका इसमें सबसे अधिक है। भगवद्गीता के अध्याय छः के श्लोक सत्रह में योगेश्वर श्री कृष्ण का कथन है कि “युक्ताहार विहारस्य युक्त चेष्टस्य कर्मसु।”

युक्त स्वप्नाव बोधस्य योगे भवित दुःखहा।

तात्पर्य यह है कि यथायोग्य आहार-विहार से मनुष्य को अपने दुःखों का निवारण करना चाहिए। इसी संबंध में भगवद्गीता में ही आगे उन्होंने अध्याय सत्रह के श्लोक सात से दस तक में आहार के विषय में विस्तार से चर्चा की है, उसमें उन्होंने सत्व, राज और तम गुणों से विभूषित आहारों एवं उनके प्रभावों की विशद चर्चा की है। हमें इसे अवश्य अध्ययन करना चाहिए और अपने कल्याण के लिए उसके अनुसार व्यवहार में बरतना चाहिए।

निस्सन्देह समाज के कुछ प्रतिष्ठित एवं जाने माने लोग मांसाहारी की श्रेणी में हैं। उन्हें उपर्युक्त सारे तथ्यों का आकलन कर स्वेच्छा से शाकाहारियों में शामिल हो जाना श्रेयस्कर है, क्योंकि इससे उनका कल्याण तो होगा ही, समाज में बड़ा सन्देश जायेगा और क्रांतिकारी परिवर्तन होगा। साथ ही प्रकृति एवं पर्यावरण पर भी अच्छा प्रभाव पड़ेगा। मांसाहार का वीभत्स एवं विकृत रूप आपको देखना हो तो ताइवान चले जाइए। वहाँ के होटलों में मनुष्य के गर्भस्थ शिशु को निकालकर सुरक्षित डब्बाबन्द रखा जाता है, जो ग्राहकों को महँगी दर पर भोजन के लिए बनाकर परोसा जाता है। इसी परिप्रेक्ष्य में भारत के नोयडा शहर में हाल का हुआ सुरेन्द्र कोहली काण्ड स्मृति

पटल पर उभर आता है। मन की वीभत्स एवं विकृत मांसाहार प्रवृत्ति ने विभिन्न पशु-पक्षियों की अनेकानेक प्रजातियों तक को लुप्त कर दिया है। मनुष्य के लिए यह बड़े खतरे का संकेत है। हमारे यहाँ एक प्रसिद्ध नीतिश्लोक है। “आहारनिद्रा भय मैथुनंच समान्यमेतत् पशुभिन्नराणां॥” तात्पर्य यह है कि आहार आदि वर्णित सभी चारों विषय मनुष्य एवं पशु में समान रूप से पाये जाते हैं, परंतु प्रकृति ने मनुष्य को ही ज्ञान एवं विवेक विशेष रूप से दिया, जिसके कारण वह प्रकृति का सर्वश्रेष्ठ जीव बन पाया। यदि मनुष्य ज्ञान एवं विवेकशून्य हो जाय तो वह भी पशु के समान ही आचरण करने लगेगा। अतः हमें ज्ञान और विवेक का आश्रय लेकर शाकाहारी बनना चाहिए, क्योंकि प्रकृति ने हमें स्वभाव से शाकाहारी बनाया। इसे हमारे पूर्वजों ने अपनाया था। हम आज अपने पथ से विचलित होकर भटक गए हैं और अपने नौनिहालों को भी संभाल नहीं पा रहे हैं। हमारे जीभ लोलुप और उदंड हो गए हैं, जिसका खामियाजा आनेवाली हमारी पीढ़ी को भुगतना होगा अन्यथा.....? समय रहते हम संभल जाएँ तो अच्छा। मेरे विचार से शाकाहारी बनने की एक मुहिम चलनी चाहिए क्योंकि मांसाहार में जो प्रोटीन, विटामिन, खनिज बगैरह पौष्टिक पदार्थ पाए जाते हैं, उनके विपरीत फल, मेवे, दूध इत्यादि में भी बहुतायत में प्राप्त होते हैं तो हम मांसाहार की जगह शाकाहार ही क्यों नहीं लेते ? प्रिय मांसाहारी पाठकों से निवेदन है कि लेख को पढ़कर एकान्त में विचार किया जाय और अपने हृदय में अवस्थित आत्मा से विमर्शकर इस विषय पर उचित निर्णय लिया जाय।



असत् से सत् की ओर, अंधकार से आलोक की ओर और बिनाश से विकास की ओर बढ़ने का नाम ही साधना है ।

गेहूँ के ज्वारे का रस

□ श्री विजय प्रसाद

वरिष्ठ लेखाकार

गेहूँ के छोटे-पौधे को गेहूँ का ज्वारा कहा जाता है। यह तो सभी जानते हैं कि गेहूँ में असीमित ताकत है और इसके द्वारा हमारे शरीर को रोगों से सामना करने की ताकत मिलती है। इसी तरह गेहूँ के ज्वारे का उपयोग भी हमारे जीवन में बहुत ही ज्यादा है। बैद्यचार्य गेहूँ के ज्वारे के रस को "अमृत रस" के नाम से भी पुकारते हैं। लगभग सभी बीमारियों को दूर करने की ताकत इसमें होती है। विदेशी जैव वैज्ञानिक इसको "हरा लहू" (Green Blood) के नाम से जानते हैं।

गेहूँ के ज्वारे के रस में रक्त शोधन करने की और हीमोग्लोबिन की मात्रा बढ़ाने की बहुत ज्यादा क्षमता होती है। इसके सेवन से मानव शरीर से विजातीय व तमाम विषैले पदार्थ बाहर निकल जाते हैं, जिससे शरीर स्वस्थ रहता है।

आज हम दिन-ब-दिन अनेक प्रकार की असाध्य बीमारियों से ग्रस्त होते चले जा रहे हैं। आज की महंगी दवाईयों के साथ साईड इफैक्ट मुफ्त मिला करता है। हमें प्रकृति की तरफ चल कर उसका सहारा लेना चाहिए। इसमें जरा-सा भी संदेह नहीं है कि प्राकृतिक चिकित्सा के द्वारा मानव शरीर को हर प्रकार से स्वस्थ रखा जा सकता है। गेहूँ के ज्वारे का रस भी एक ऐसा प्राकृतिक पेय पदार्थ है, जिसके सेवन से हमें लाभ-ही-लाभ होता है। इसका सेवन किसी भी उम्र का व्यक्ति कर सकता है और निरोगी व्यक्ति भी इसके सेवन से अपने शरीर में रोग प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाने में सफलता पा सकता है। कैंसर जैसे जान लेवा रोग में गेहूँ के ज्वारे का रस बहुत ज्यादा फायदा पहुँचाता है। गेहूँ के ज्वारे का रस पोषक तत्वों से भरपूर होता है। नियमित रूप से इसका सेवन करने से शरीर बलशाली और रोग रहित होता है।

गेहूँ के ज्वारे में बाकी वनस्पतियों की अपेक्षा क्लोरोफिल तत्व अति विशिष्ट होता है। इसकी वजह यह है कि क्लोरोफिल तत्व मानव के रक्त से 40 प्रतिशत तक मेल खाया करता है। गेहूँ के ज्वारों का रस दूध, दही, माँस से भी ज्यादा लाभकारी होता है। चूँकि इसे घर में भी उगाया जा सकता है, इसलिये यह सस्ता और सदैव सुलभ है। क्या बच्चे, क्या बूढ़े सभी इसका सेवन कर सकते हैं। और तो और, नवजात शिशुओं को भी गेहूँ के ज्वारे के रस की पाँच बूंदें हर रोज दी जा सकती है। ज्वारे के रस में लगभग सभी विटामिन और गुण मौजूद रहते हैं। यही वजह है कि इसके सेवन से शरीर के सभी अभावों की पूर्ति की जा सकती है।

गेहूँ के ज्वारों के रस में एक्टिव एंजाइम्स, मिनरल्स, क्लोरोफीन, आहार, सुयोग्य फाइबर्स, विटामिन्स और अनेक पोषक तत्व प्राकृतिक रूप से पाये जाते हैं। इसलिये ही गेहूँ के ज्वारों के रस को प्रकृति की संजीवनी कहा गया है।

गेहूँ के ज्वारे को घर में उगाने की विधि

मिट्टी के आठ-नौ छोटे गमलों में मिट्टी भर लें। इसकी मिट्टी में गोबर की खाद मिलाना ठीक रहता है। हाँ, गमलों की मिट्टी में रासायनिक खाद का प्रयोग बिल्कुल भी नहीं करना चाहिए। रात को बोने वाले गेहूँ को एक मात्रा में पानी में भिगों दे। एक गमले में 10 ग्राम गेहूँ की मात्रा के हिसाब से प्रातः गमले की मिट्टी में आधा उंचे-नीचे मिट्टी में गेहूँ दबा देना चाहिए। पानी डालकर गमले को धूप की बजाय छाया में रखना चाहिए। गमले पर सूर्य की धूप ज्यादा और सीधी न पड़े, इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

इसी प्रकार दूसरे दिन दूसरे गमले में गेहूँ बोये। इस तरह हर दिन एक-एक करके सभी नौ गमलों में गेहूँ बो देना चाहिए। चौबीस घंटों में एक बार इन गमलों में पानी देना चाहिए। जब गेहूँ के ज्वारे थोड़े बाहर आ जायें, तब गमलों में पानी देना कम करना चाहिए। नौवे दिन उस गमले में से जिसमें सबसे पहले दिन गेहूँ बोये गये थे, गेहूँ के ज्वारे काट लें और उन्हें उपयोग में ले लें। नौ दिन की अवधि में गेहूँ के ज्वारों की लंबाई 7-8 इंच तक की हो जाया करती है। गेहूँ के ज्वारों को गमले में जड़ सहित उखाड़ना ठीक रहता है, यह आपकी इच्छा पर निर्भर है कि आप जड़ इस्तेमाल में ले या कैची से काट कर फेंक दें। अब मिक्सी में या सिलबट्टे पर पीस कर गेहूँ के ज्वारों का रस निकाला जा सकता है। ज्वारे के रस को धीरे-धीरे घूट-घूट कर पीना चाहिए। एक बार में कम से कम 50 मिली. की मात्रा में जूस को पीना चाहिए।

खाली हुए गमले में फिर से गेहूँ बो देना चाहिए। इसी तरह दूसरे दिन दूसरे गमले से तीसरे दिन तीसरे गमले से गेहूँ के ज्वारे काटने का क्रम चलाते रहें और गेहूँ के ज्वारे का रस पीते रहें। जो भी गमला खाली होता रहे, उसमें पुनः गेहूँ बोते रहें। एक बात का विशेष ध्यान रखें। इस सारी प्रक्रिया में प्लास्टिक के बर्तनों का प्रयोग बिल्कुल नहीं करना चाहिए।

गेहूँ के ज्वारों के बारे में एक बात ध्यान रखने योग्य है। गेहूँ के ज्वारों को 7-8 इंच के होने तक ही काट कर उपयोग में लेना चाहिए। क्योंकि, इनसे ज्यादा लंबे होने पर गेहूँ के ज्वारों में गुण कम होते चले जाते हैं। इसलिए गेहूँ के ज्वारों का पूरा-पूरा लाभ प्राप्त करने के लिए उनको उचित समय पर काट कर उपयोग में ले लेना चाहिए।

प्रयोग विधि

मिट्टी के ज्वारों को काटते ही पानी से धो डालना चाहिए। इसके बाद इन्हें कूटना चाहिए। फिर एक कपड़े से छानना चाहिए। गेहूँ के ज्वारों को लगभग तीन बार कूट-पीस कर रस निकालना चाहिए। ऐसा करने से ज्यादा रस प्राप्त होता

है। रस को निकालने के बाद उसके सेवन में ज्यादा देरी नहीं करनी चाहिए, क्योंकि हर क्षण उसके गुणों में कमी आती चली जाती है। तीन घंटे पश्चात् तो रस के सभी पोषक तत्व खत्म हो जाया करते हैं

सुबह प्रातः काल खाली पेट गेहूँ के ज्वारों का रस पीना चाहिए। वैसे दिन में किसी भी वक्त ज्वारों का रस पिया जा सकता है। इसके सेवन से आधा घंटा पूर्व और आधा घंटा बाद तक कुछ भी नहीं खाना-पीना चाहिए। इस रस के सेवन से कई लोगों को उबकाई आने लगती है। उल्टी हो जाया करती है, या फिर सर्दी की समस्या हो जाया करती है। ऐसी अवस्था आने पर घबराना नहीं चाहिए। इस रस का सेवन करने वाले के शरीर में जितने ज्यादा विषैले पदार्थ इकट्ठे हो चुके होते हैं उसी की प्रतिक्रिया स्वरूप उसे उबकाई या उल्टी की समस्या से दो-चार होना पड़ता है। उल्टी के द्वारा उसके शरीर से वे सभी विषैले पदार्थ शरीर से बाहर निकल जाया करते हैं।

गेहूँ के ज्वारे के रस में अदरक, शहद, नागरबेल के पान (खाने के पान) भी मिलाया जा सकता है। ऐसा करने से इसके स्वाद और गुणों में वृद्धि भी होती है और इसके सेवन से उबकाई भी नहीं आयेगी। ज्वारे के रस में नींबू और नमक बिल्कुल भी नहीं डालना चाहिए। पुदीने के 2-4 पत्ते पीस कर रस में जरूर मिला सकते हैं। अगर रस निकालने में असुविधा हो तो गेहूँ के ज्वारों चबा-चबा कर भी खाये जा सकते हैं। ऐसा करने से मसूढ़े दाँत मजबूत होते हैं। गेहूँ के ज्वारे चबाने से मुख की दुर्गन्ध से भी छुटकारा पाया जा सकता है। दिन में तीन बार गेहूँ के ज्वारे के रस का सेवन करना चाहिए।

लाभ

गेहूँ के ज्वारे के रस के सेवन से रक्त को साफ किया जा सकता है। इसका रस शरीर में स्वस्थ रक्त की बढ़ोतरी करता है। फोड़े-फुंसियों से भी इसके सेवन से छुटकारा पाया जा सकता है। गेहूँ के ज्वारे के रस के सेवन से शरीर की गर्मी को दूर कर शीतलता प्राप्त की जा सकती है। चोट लगने पर

इसका रस खून के बहाव को रोकता है। उदर विकार, कब्ज और पेट-गैस की समस्या से इस रस के सेवन से छुटकारा पाया जा सकता है। इसके सेवन से पेट हाजमा ठीक रहता है। इसके रस के सेवन से ब्लड प्रेशर को सही रखा जा सकता है। डायबिटीज के रोगियों को भी गेहूँ के ज्वारे का रस फायदा पहुँचाता है। थलेसेमिया, एनिमिया, एवं सिकलसेल जैसी रक्त से संबंधित बीमारियों में यह रस फायदा पहुँचाता है। शरीर के जोड़ों में इसका रस लचीलापन बढ़ाता है। त्वचा रोगों में भी इसका रस फायदा पहुँचाता है। इसका रस जैविक ऊर्जा स्रोत और रोग प्रतिरोधक शक्ति में बढ़ोतरी करता है। पक्षाघात, गठिया, दमा, टी. वी. आदि रोगों में भी इसका रस फायदा पहुँचाता है। इसके रस के सेवन से सिर के बाल सफेद होने बंद हो जाते हैं, साथ ही झड़ने से भी रूक जाया करते हैं।

आजकल चारों ओर कैंसर और एड्स जैसे भयानक रोगों ने अपने पांव पसार लिये हैं। इन घातक रोगों में भी गेहूँ का रस बेहद लाभ पहुँचाता है। इन रोगों के रोगी को 10 ग्राम गेहूँ के ज्वारों को 25 ग्राम गिलोय में थोड़े पानी के साथ पीना चाहिए। इसके बाद इस मिश्रण को कपड़े में छान लेना चाहिए। इस तरह का रस एक कप की मात्रा में रोज सुबह खाली पेट

लेना चाहिए। लगातार इस क्रिया को करते रहने से रोगी कैंसर और एड्स जैसे रोग से निश्चय ही छुटकारा पा लेता है।

गेहूँ के ज्वारों के रस में रोगों के उन्मूलन की अलौकिक शक्ति मौजूद रहती है। हमारे शरीर के लिये यह बेहद उपयोगी औषधि है। इसमें प्राकृतिक रूप से कार्बोहाइड्रेट आदि सभी पोषक तत्व और प्रोटीन मौजूद रहते हैं। इसके सेवन से शरीर में ताकत का संचार होता है और थकान मिटती है। इसके सेवन से शरीर ताँबे जैसे (ताम्र वर्णी) लाल और पुष्ट होता है। भारत ही नहीं अमेरिका में भी गेहूँ के ज्वारों का रस बेहद लोकप्रिय है। वहाँ जीवन और मरण के बीच झूलते रोगियों को हर रोज चार गिलास ज्वारों का रस पीने को दिया जाता है। जीवन की आशा छोड़ चूके इन रोगियों को चमत्कारिक रूप से ठीक होते देखा गया है। इसके सेवन से निरोगी व्यक्ति को तो और भी ज्यादा लाभ प्राप्त होता है। आजकल चारों तरफ प्रदूषण की बुरी तरह मार है। इसकी वजह से वातावरण में जो बदलाव आ रहे हैं और बीमारियाँ फैल रही हैं उनसे गेहूँ के ज्वारे के सेवन से मुकाबला किया जा सकता है। साथ ही दिनभर तरोताजा रहा जा सकता है।



चरित्र का अर्थ है- अपने महान उत्तरदायित्वों का महत्व समझना और उसका हर कीमत पर निर्वाह करना ।

परिवर्तन



□ श्रीमती मुक्ता बनर्जी

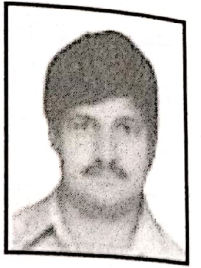
डाटा इंडी ऑपरेटर

शरद ऋतु की मन्द वयार चल रही है। जगत के पालन हार स्वामी महादेव कैलाश पर्वत पर ध्यानमग्न थे। देवी पार्वती को अपने मैके जाने की जल्दबाजी थी। वह भगवान शंकर को ध्यान मग्न देखकर वहाँ से बिना कुछ कहे ही चल दी, अपने बड़े पुत्र भगवान श्री गणेश के पास-बेटा चलो तैयार हो जाओ नानी घर जाना है। तुम्हें तो लड्डु बहुत अच्छा लगता है। वहाँ खुब सारा लड्डु मिलेगा खाने को। सुनकर गणेश बोला “नहीं माँ, मुझे नहीं जाना” “अब धरती के लोग रिफाइन खाने लगे हैं जिससे मेरा पेट खराब हो जायेगा”, सुनकर देवी वहाँ से चल दी बड़ी बेटे लक्ष्मी के पास, “बेटी चलो, तैयार हो जाओ नानी घर जाना है। लोग तुम्हारी बेसब्री से इंतजार करते हैं। तुम्हीं तो लोगों को खुश रख सकती हो “तब लक्ष्मी बोली- “अब वो दिन गया माँ ! जब मेरी कद्र होती थी, अब तो लोग शेयर मार्केट और रिजर्व बैंक पर भरोषा करते हैं, मुझे नहीं जाना। तुम्ही चली जाओ सरस्वती को लेकर।” तब देवी सरस्वती के पास गई और बोली- बेटी चलो, धरती के लोगों का तुम ही कल्याण कर सकती हो।” सरस्वती तुनक कर बोली- “माँ मुझे मत बहलाओ। वो दिन गया जब लोग मुझे स्मरण करते थे, सुबह-शाम मुझे याद करते थे। अब तो कम्प्यूटर का युग है, उसके मेमोरी में सालों भर का हिसाब रखकर लोग चैन से सोते हैं। मुझे नहीं जाना। तुम कार्तिक को लेकर चली जाओ।” हारकर देवी छोटे पुत्र कार्तिक के पास गई और बोली- “बेटा तुम्हारे भाई-बहनों ने मेरे साथ नानी घर जाने से इनकार कर दिया। तुम ही चलो मेरे साथ। तुम्हारे रूप की प्रशंसा तो कुव्वारी कन्याएँ बहुत करती हैं।” तब कार्तिक दूर हटके बोले- “माँ तुम भूल रही हो, अब मेरा जगह, अक्षय कुमार और ऋतिक रोशन ने लिया है। मुझे नहीं जाना। तुम अकेले ही चली जाओ।”

निराश होकर देवी अकेली प्रस्थान कर दी अपने मन में सोची “परिवर्तन ही जगत् का नियम है।”



एक अनुभव



□ श्री सुभाष चन्द्र गुप्ता

सहायक लेखा अधिकारी

होश में कोई नहीं पर
जानने की बात करता है।
अपने अभिमान के आगे
दूसरों को रूलाता है।
और हँसता भी है कि
देखो कितना सबल हूँ
अपने इसारों पर नचाता हूँ
बिल्कुल मदारी की तरह।
दूसरों की इच्छा को, और
स्वाभिमान को कुचलता है।
मानों वह सर्वशक्तिमान है
एक अधूरा ज्ञान।
वह जानता नहीं कि
समय बलवान होता है,
बलि ने वामन को दीन समझा था
रसातल में चला गया।
रावण और कंश भी मारा गया।
कमजोर के आह में भी ताकत होती है।
उसका दर्द भी लाठी बन टूटता है
उन निरंकुशों पर
जो दूसरों का सुख चैन छिनते हैं।
और अभिमान का दंभ भरते हैं।
आज नहीं तो कल
उनका भी चूर होगा अभिमान
तार-तार होगी स्मिता
और टूटेगा दुःस्वप्न



अपने दोषों की ओर से अनभिज्ञ रहने से बढ़कर प्रमाद इस संसार में और कोई दूसरा नहीं हो सकता।



□ श्री सुरेन्द्र लाल दास
सहायक लेखा अधिकारी

अकलू एक गरीब किंतु परिश्रमी किसान था। उसके पास पर्याप्त जमीन नहीं थी, जिसकी उपज से उसके पूरे परिवार का भरण-पोषण हो सके। उसने गाँव के साहूकार से कुछ रुपये उधार लेकर एक गाय खरीद लिया। वह गाय का दूध शहर में बेचता था। दूध बेचने के क्रम में उसका परिचय एक सहृदय परिवार से हुआ। अकलू के व्यवहार से उस परिवार के लोग बहुत प्रसन्न रहते थे। एक दिन उस परिवार के मुखिया ने अकलू से पूछा तुम्हारा लड़का क्या करता है ? उसने बड़े ही विनम्र भाव से बोला “हजुर हम गरीब का बेटा क्या करेगा ? गाय चराता है।” वह व्यक्ति अकलू को पास बैठकर शिक्षा के महत्त्व को समझाया और अपने बच्चे को पढ़ाने की सलाह दी। अकलू उसके सामने अपनी गरीबी का रोना रोया। इसपर उस व्यक्ति ने अकलू को हर संभव सहायता करने का वचन दिया और बच्चे को पढ़ाने वास्ते राजी कर लिया। अकलू अपने बेटे रामू का नाम गाँव के स्कूल में लिखा दिया। रामू अपने घरेलू कार्य के साथ-साथ पढ़ाई भी मन लगाकर करता था। पढ़ाई में उसकी लगन को देखते हुए शिक्षक भी काफी खुश रहा करते थे और यथासंभव सहायता भी करते थे। रामू पढ़-लिखकर शहर में अच्छी नौकरी करने लगा। समय से उसकी शादी भी हो गई और वह अब परिवार संग शहर में रहने लगा। शहर में रहने के कारण रामू के सोच में बदलाव आने लगा। अब उसे ग्रामीण जीवन रास नहीं आ रहा था। वह धीरे-धीरे भौतिकवादिता के आगोश में सिमटता जा रहा था। पर अकलू अब भी वही अकलू था। वह त्योहार के अवसर पर गाँव से संदेश लेकर शहर में रामू से मिलने जाया करता था। बच्चे भी दादाजी को अपने बीच पाकर प्रसन्न रहा करते थे।

रामू अच्छे पद पर नौकरी करता था। इसलिए, उसके घर अच्छे लोगों का आना-जाना होता था। अब वह जीवन की सादगी को लगभग भूल चुका था। उसे न तो पिता की सादगी पसंद थी और न ही घर से लाया हुआ सौगात ही पसंद आ रहा था। धीरे-धीरे घर में अब बड़े बुजुर्गों की अनदेखी होने लगी।

एक दिन अकलू गाँव से सौगात लेकर थका-हारा रामू के घर पहुँचा। उस समय रामू के दोस्त उसके साथ बैठे हुए थे। अकलू का गंवई (ग्रामीण) वेश-भूषा में आना रामू को अच्छा नहीं लगा और उसने अपने पिता की पहचान अपने मित्रों से छिपा लिया। यह देखकर अकलू काफी दुःखी हो गया। जब रामू के दोस्त चले गये तो अकलू ने उसे समझाया कि आज तुम जहाँ जिस परिस्थिति में हो वह इसी वेश-भूषा की देन है। हम ग्रामीण सादा जीवन, उच्च विचार में जीना पसंद करते हैं। यदि हम भी अपनी जीवन शैली को तड़क-भड़क वाली बनाते तो हो सकता है तुम जो आज हो, वह तुम नहीं रहते। यह सुनते ही रामू गुस्से से लाल हो गया। अहंकार उस पर हावी हो चुका था। उसने सारे लोक लाज एवं मर्यादाओं को तार-तार करते हुए अपने पिता को तुरंत घर से चले जाने का फरमान जारी कर दिया। इतना सुनते ही घर के सारे लोग सन्न रह गये। अकलू ने कभी सपना में भी ऐसा नहीं सोचा था कि जिस लड़के को खून पसीने की कमाई से पढ़ाया वह ऐसा व्यवहार करेगा। उसे अपनी अन्तरात्मा की आवाज सुनाई दी कि जिस घर में बड़े-बुजुर्गों का आदर-सम्मान न हो वहाँ रहना उचित नहीं है। उधर घर के सारे लोग हाथ जोड़कर अकलू से घर ना छोड़ने का आग्रह कर रहे थे। पर वह तो मन में घर छोड़ने का निश्चय कर चुका था। घर से निकलने से पहले अकलू ने रामू से कहा कि बेटा काफी ठंड है, मुझे एक कोट दे दो। इस पर रामू ने अपने लड़का गोलू से कहा की जाओ और दादाजी के लिए एक पुरानी कोट ले आओ। गोलू थोड़ी देर बाद आधा कोट काट कर अपने पिताजी के हाथ में रख दिया। यह देख कर रामू ने गुस्से से पूछा यह कोट काट कर क्यों लाये हो ? गोलू ने रूँधे स्वर में जवाब दिया “जी पिताजी, जब आप भी बूढ़े हो जायेंगे और मेरे पास आयेंगे तो मैं भी आपको घर से उसी प्रकार निकाल दूँगा, जिस प्रकार आप आज दादाजी को घर से निकाल दिये हैं और उस दिन जाते समय यही बचा हुआ कोट आपको दूँगा।



अच्छाइयों का एक-एक तिनका चुनकर जीवन भवन का निर्माण होता है, पर बुराई का एक हल्का झोका ही उसे मिटा डालने के लिए पर्याप्त होता है ।

माता-पिता



□ सुश्री पम्मी कुमारी

डाटा इन्ट्री ऑपरेटर

एक गांव में एक राजा था। उसे एक भी संतान नहीं थी। वह बहुत दुखी रहता था। एक बार एक महापुरुष के कहने पर बहुत पूजा-पाठ करने के बाद एक पुत्र हुआ। राजा बहुत खुश थे। उस राजवंश का अकेला वारीस आनन्द था। राजा उसे बहुत मानते थे। उसकी हर इच्छा कहने से पहले पूरी करते थे।

जब वह बड़ा हुआ तो राजा ने उसकी शादी एक गांव की लड़की सुकन्या से कर दी। अचानक रानी की तबीयत बिगड़ जाने की वजह से रानी की मृत्यु हो गई। राजा अकेले हो गये। बेटे और बहु अपने ही जीवन में खो गये। जब कभी राजा को किसी चीज कि जरूरत होती तो उसे पूरी करना बेटे और बहु को बहुत कठिन लगता था क्योंकि उन्हें सिर्फ अपने आप से ही मतलब था।

एक दिन सुकन्या अपने पति आनन्द से बोली, आप पिता जी को खेत में ही एक झोपड़ी क्यों नहीं देते। पिता जी वहीं रहते और खेती की रखवाली भी हो जाती। आनन्द अपनी पत्नी की बातों को मान कर अपने ही पिता को जो कि कभी उस राज्य के स्वामी हुआ करते थे उन्हें खेती की रखवाली के लिए एक झोपड़ी में पहुंचा दिया।

कुछ दिन बीता। आनन्द का बेटा जो अब विद्यालय जाता था और राजा का बेटा होने का घमंड उसे बहुत था। एक दिन अपने मित्रों के साथ विद्यालय जाते समय अपने और अपने राजा पिता की प्रशंसा करता हुआ जा रहा था। उसके एक मित्र से यह सब सुना न गया उसने कहा- तुम अपने पिता की इतनी बड़ाई करते हो क्या इसलिए ही तुम्हारे पिता ने खेतों की रखवाली के लिए अपने पिता को एक झोपड़ी में रख दिया। यह सुन कर आनन्द के बेटे सुदर्शन को बहुत दुःख हुआ। उसने अपने मित्र से अपने दादाजी का पता पूछा और वहाँ पहुँच गया।

पहुँच कर उसने देखा कि एक अंधेरी झोपड़ी में कोई बैठा है। उसने आवाज लगाई- कोई है क्या यहां ? अन्दर से आवाज आई- आप कौन हैं ? आइये, अन्दर आ जाइए। सुदर्शन यह जानते

हुए भी कि वे उसके दादाजी हैं, पूछा आप कौन हैं और यहां अकेले क्यों रहते हैं ?

राजा ने कहा बेटा मैं यहां के राजा आनन्द का पिता हूँ। उसने मुझे अपने घर से दूर यहाँ खेतों की रखवाली के लिए रखा है। यह सुन कर सुदर्शन की आँखों में आँसू आ गये और उसने अपने दादाजी के गले लग कर कहा- दादाजी मैं आपका पोता सुदर्शन हूँ। मुझे पता भी नहीं था कि मेरे दादाजी भी हैं। राजा उसे देख कर बहुत खुश थे।

बातें करते हुए सुदर्शन ने पूछा कि दादाजी आप खाना कैसे खाते हैं और बनाते कैसे होंगे ? राजा ने कहा बेटा तुम्हारे पिता मुझे रोज इस मिट्टी के बर्तन में खाना लाकर दे जाते हैं। सुदर्शन के मन में एक बात आई। उसने अपने दादाजी से कहा कि दादाजी मैं जैसा कहूँ आप वैसा ही करें। राजा ने पोता की बातें मान ली।

अगले दिन सुदर्शन विद्यालय जाने के बजाय अपने दादाजी के पास चला गया। कुछ देर बाद उसने अपने पिता को खाना लाते हुए देखा। वह दौड़कर झोपड़ी के पीछे छूप गया। जैसे ही आनन्द ने राजा को खाना देने के लिए मिट्टी के बर्तन मांगे, राजा ने उस बर्तन को उठा कर जानबूझ कर तोड़ दिया। इतने में सुदर्शन आकर अपने दादाजी से कहने लगा- ये क्या दादाजी, आपने ये क्या किया, अब मैं अपने पिता को उनके बूढ़े होने पर किस चीज में खाना दूंगा। यह सुनकर आनन्द को बहुत बुरा लगा और उस छोटे से बालक ने उसकी आँखें खोल दी। आनन्द अपने पिता को अपने घर ले गया और अब उनकी देखभाल पहले से उचित ढंग से करने लगा।

ये कहानी उन बच्चों के लिए है जो अपने माता-पिता को फटे पुराने कपड़े और टूटे-फूटे मेज के समान समझते हैं, लेकिन वे ये नहीं जानते कि माता-पिता जीवन दाता हैं जिनकी वजह से वे आज इस धरती पर हैं।



यदि मनुष्य सीखना चाहे, तो उसकी प्रत्येक भूल उसे कुछ-न-कुछ सीखा देती है।

“छींक विचार”



□ सुश्री रेणुका पासवान
सुपुत्री वैद्य (डा.) रामेश्वर राम
वरीय लेखाकार

परम पिता परमेश्वर के हम अंश पार्ट (सुक्ष्म कण) हैं। शुभ या अशुभ घटना घटित होने के पहले परम पिता परमेश्वर किसी न किसी रूप से हमें संकेत कर ही देते हैं। चाहे हम उस संकेत को मानें या न मानें।

1. मैं छींक विचार के संबंध में एक आपबीती घटना का वर्णन कर रही हूँ। चाईबासा से पटना वापस आने के लिए स्टेट बस स्टैंड चाईबासा पहुँची और टिकट काउन्टर बाबू से पटना का एक टिकट की मांग की। जब टिकट काउन्टर बाबू टिकट काट दे रहे थे तब वे तीन बार जोर-जोर से छींक दिये। मैं डरते-डरते टिकट तो ले ली और पटना जाने वाली बस के पावदान पर जैसे ही पैर रखी कि उसी बस में सवार 3 यात्री उतरते हुए बहुत जोर-जोर से छींक रहे थे। मैं बिल्कुल डर गई और मन में शंका होने लगा कि कहीं इस बस में कोई अप्रिय घटना तो नहीं होगा ?

मैं तुरंत टिकट काउन्टर बाबू के पास गई और बोली कि मुझे आज पटना नहीं जाना है, टिकट वापस लौटा दी।

बड़ी मुश्किल से टिकट काउन्टर बाबू मेरा टिकट वापस लेकर पैसा लौटा दिया। फिर मैं बस स्टैंड पर ही टहल रही थी और एक समाचार पत्र खरीद कर बेंच पर बैठ कर समाचार पत्र पढ़ रही थी। कुछ घंटे में पटना से चाईबासा आने वाली बस उस स्टैंड पर रुकी और उसका ड्राइवर दौड़ते हुए आया और टिकट काउन्टर वाले बाबू को बोला कि यहां से पटना जा रही बस दुर्घटनाग्रस्त हो गई और खाई में गिर गई। बस में आग लग गई है, उसमें सवार सभी यात्री मारे जा चुके हैं, जल्दी से किरान गाड़ी भेजकर उस बस का चेचिस मंगा लीजिए। इतना सुनने पर टिकट काउन्टर बाबू मुझे बुलाये और पूछे कि तुम पटना जाने वाला टिकट क्यों वापस की थी ? तब मैं उत्तर दी कि “जब मैं आपसे टिकट ले रही थी तब आप टिकट देते समय 3 बार जोर-जोर से छींक दिये थे, और जब मैं पटना जाने वाली स्टेट बस के पावदान पर पैर रखी थी तब

उसी बस से 3 यात्री उतरते हुए बहुत जोर-जोर से छींकते हुए उतर रहे थे। मैं उनके जोरदार छींक से डर गई थी कि कहीं इस बस में कोई अप्रिय घटना तो नहीं होने वाला है। इसी वजह से मैं टिकट वापस कर दी थी। तब टिकट बाबू बोले कि तुमको जिस स्टेट बस का टिकट पटना जाने के लिए दिया था वह बस घाटी में संतुलन खो जाने के चलते खाई में गिर गई और उसमें आग लग गई है। सारे यात्री जलकर मर चुके हैं। तुम बच गई। तब मैं परमपिता परमेश्वर को बहुत-बहुत धन्यवाद दी।

2. घर से निकलते समय यदि पीछे से, आगे से कोई जोर-जोर से छींक रहा हो तब रुक जाना चाहिए। यदि घर से बाहर यात्रा पर जाना ज्यादा जरूरी नहीं हो तो यात्रा रद्द कर देना चाहिए, क्योंकि वह छींक संकेत कर रहा है कि जहां जा रहे हैं, वहां काम नहीं होगा। यात्रा में परेशानी या कुछ अप्रिय घटना भी होने की आशंका है।

3. यदि घर से तैयार होकर किसी इन्टरव्यू या जरूरी काम से निकल रहे हैं, जाना भी अनिवार्य है, उसी वक्त कोई छींक देता है तब आप तुरंत घर में वापस लौटकर थोड़ा रुक जाईए। कुछ समय बाद 5 साबुत धनिया खाकर एक गिलास पानी पी लें और उसके बाद दही, गुड़ खाकर एक पानी भरा गिलास पानी पीकर घर से निकलें। जो बाधा आने वाला था 5 धनिया खा लेने से बाधा कट जाता है।

4. कभी-कभी हम किसी महत्वपूर्ण कार्य के बारे में नकारात्मक रूप से सोचते रहते हैं यानि अमुक काम तो बड़ा कठिन है, कैसे होगा ? शायद नहीं होगा इसी वक्त यदि कोई छींक दे, तब समझिए कि काम हो जायेगा और यदि हम किसी महत्वपूर्ण कार्य के बारे में यह सोच रहे हैं कि अमुक काम हो ही जाएगा और उसी वक्त कोई छींक दे तो यकीन जानिए कि वह काम नहीं होगा, ऐसा अनुभूत है।



जीवन दिन काटने के लिए नहीं कुछ महान कार्य करने के लिए है ।

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जय मुदिरयेत्।
“गुलाब”



□ श्रीमति प्रतिमा सिन्हा
पत्नी श्री राजेन्द्र कुमार
वरिष्ठ लेखाकार

फूल गुलाब के मन में उलझन,
थी कली से उसकी अनबन ।
उसने पूछा, ऐ कली ! तू सुन जरा,
क्यूँ भाती तुम सबको भला ?
प्रेमी दिलों को तु ही लुभाती,
उनके मन को खूब हर्षाती ।
मेरा तो है रूप सुहावन,
खुशबू भी है अति मनभावन।
मैं तो हूँ एक खुली किताब ।
हर एक पंखुड़ी में है शबाब,
ऐ बंद कली न जाने तुझमें,
कौन सी है इक राज की बात।
‘प्रतीक’ प्रेम की तुम हो कली,
पर भौरें, मुझमें क्या ढूँढे अलि ?
मेरे मन की उलझन तू सुलझा,
सुन री कली मेरी प्यारी अलि ।
मेरी प्यारी कली मेरी प्यारी अली ।
मेरी प्यारी अली मेरी प्यारी अली।



केवल ज्ञान ही एक ऐसा अक्षय तत्व है, जो कभी भी किसी अवस्था और
किसी काल में मनुष्य का साथ नहीं छोड़ता ।

“जाको राखे साईया....” (संस्मरण)



□ श्रीमती नीता मिश्रा

पत्नी श्री बंशीधर मिश्र,
लेखा अधिकारी

सन् 1985 में मेरी शादी फाइनल हो चुकी थी। उसी समय इन्टर का रिजल्ट आया था और मैं पास हो गई थी। उसके बाद हमारी इंगेजमेन्ट हुई और शादी की तिथि 21 मई निर्धारित हो गई।

तत्पश्चात एक दिन माँ बाबूजी के साथ “बिहट” (बरौनी बिजली घर के निकट) फुआ के यहाँ होते हुए ननिहाल (मोकामा) जाने का प्रोग्राम बना। मैं बहुत खुश थी कि माँ बाबूजी के साथ कहीं जाने का मौका बहुत दिनों बाद मिला था। मैं अपने पैकिंग में जूट गई थी। साथ-साथ माँ-बाबूजी के सामानों का पैकिंग भी मुझे ही करनी थी। बाबूजी की शुरू से ही आदत रही थी कि जब कहीं निकलते थे शुभ दिन और शुभ मुहूरत देखकर ही निकलते थे। दो दिन बाद हमलोगों के जाने का दिन तय हुआ। वो दिन जल्द ही आ गया जब हमलोगों को जाना था।

बस से जाने का प्रोग्राम सुनकर मुझे पहले से ही सिर में चक्कर आने लगा था और भॉमिटिंग टेंडेन्सी होने लगी थी। इस परेशानी से बचने के लिए मुझे एवोमिन (Avomin) खानी पड़ी थी। इसे खाने के आधे घंटे बाद मुझे निन्द आने लगी थी और मैं अर्द्धनिद्रा में आँखें बन्द किये हुए सफर दरभंगा से प्रारंभ कर चुकी थी। मेरा और मेरी माँ का भॉमिटिंग से बुरा हाल हुआ जा रहा था। उधर से सावन की चिलचिलाती धूप तो कभी बादल की छाव। इसी धूप-छाव के खेल में बारिश शुरू हो गयी और काफी अच्छी बारिश हुई। आगे चलकर यही बारिश हमलोगों के प्राण रक्षक का काम किया, नहीं तो उस दिन बस में सवार सभी साठ-सत्तर यात्री मौत के आगोश में

समा गये होते। बारिश की वजह से रास्ता धूंधला नजर आ रहा था। फिर भी ड्राइवर बड़ी कुशलता से बस चला रहा था। अचानक ऐसा अहसास हुआ मानों भूकम्प आ गया हो। बस चड़मड़ाता हुआ दाहिनी ओर लुढ़कने लगी थी। चारों तरफ से बस में चिखने-चिल्लाने की आवाजे आने लगी। बायें साइड के लोग खिड़की पकड़े हुए लटकते हुए थे। मैं भी उसी साइड थी। मैं अपनी आँखें बन्द किये भगवान को याद कर रही थी और सोच रही थी कि अब तो मौत निश्चित ही है, फिर भी मुझे न जाने क्यों घबराहट नहीं हो रही थी। मैं भगवान से सिर्फ इतना ही कह रही थी कि- “हे भगवान ! मेरे माँ-बाबूजी को बचा लेना !” साथ ही अपने मौत का इन्तजार करने लगी। तभी अचानक बस एक डेढ़ फिट झुकने के बाद रुक गई। कारण था कि पानी के बाद मिट्टी के दलदल में उसका चक्का फस गया था और बस बारिस की वजह से मिट्टी नर्म हो जाने के कारण एकाएक रुक गई थी और साठ-सत्तर फिट नीचे तक जाने के बजाय बीच में ही अटक कर रह गई थी। मैं सोच रही थी कि भगवान को प्यारी हो गई। लेकिन, जब एवोमिन की नशा टूटी और आँखें खोल कर देखी तो नीचे बाबूजी आवाज दे रहे थे- ऐ बेटा ! आहिस्ता-आहिस्ता नीचे उतरना! हमलोग बच गये हैं। यह सुकनर मेरी आँखों से खुशी के आँसू बहने लगे।

इधर ड्राइवर चिल्ला रहा था- “सभी यात्री धीरे-धीरे बायें साइड से नीचे उतरने की कोशिश करें। घबराये नहीं। अब किसी को कुछ नहीं होगा। भगवान ने हमलोगों की रक्षा की है।” उसी बस में संयोगवश पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी भी

यात्रा कर रहे थे जिन्होंने अपने प्रभाव और प्रयास से बस को निकलवाने में काफी मदद की। नहीं तो, उस दिन रात भी हमलोगों को उसी बिराने में बिताना पड़ता। खैर ! चार-पाँच घंटे के मशक्कत के बाद बस निकाला जा सका एवं वह चालू भी हो गया और हमलोग उस भयानक दुर्घटना से गुजरने के बावजूद उसी बस से अपनी मंजिल पर पहुँच गए। बस से नीचे उतरने के उपरान्त जिसे जो सवारी मिली उसी से अपनी मंजिल की ओर चल पड़े।

हमलोगों को भी रिक्सा करना पड़ा। एक पर बाबूजी सामानों सहित बैठ गये तथा दूसरे पर मैं और माँ बैठ गई थी। थकावट और परेशानी से हालत-खराब थी। लग रहा था कि अपने जगह पर पहुँचकर चैन की सांस लें। यही सोचते हुए रिक्सा से चली जा रही थी कि पिछे एक तांगे वाले का घोड़ा बिदक गया और हमलोगों के रिक्सा के पीछे से एक जोड़दार टक्कर मार दिया। यह देख लगा कि भगवान अभी तक संकट नहीं टाल सके थे।

मुझमें कहाँ से इतनी शक्ति मिल गयी कि सामने चार-पाँच फिट चौड़े नाले को एक झटके में जम्प कर पार हो गयी। थोड़ी सी चूक गहड़े दल-दल में पहुँचा सकती थी।

भगवान की मेहरबानी ही थी कि इस बार भी उसने मुझे बचा लिया। किन्तु, मेरी माँ के सिने में इस दुर्घटना (घोड़ेवाली) से गहरी चोट आयी थी और वह रिक्सा का सिट पकड़कर नीचे बैठ गई थीं। चारो तरफ देखते-देखते काफी भीड़ इकट्ठी हो गई थी। खैर! किसी तरह हमलोग अपने गन्तव्य जगह “बिहट” (बरौनी बिजली घर के निकट) पहुँच गये। मेरे साथ फुआ ने भैया-भाभी (मेरे माँ-बाबूजी) को देखा तो बहुत खुश हुई। लेकिन, जब उस घटना का जिक्र हुआ तो वे फफककर रो पड़ी। क्योंकि, कुछ दिन बाद ही रक्षा बन्धन था और हर बहन को रक्षा-बन्धन पर अपने भाई का इन्तजार रहता है। उन्होंने भगवान का सुक्रिया अदा किया कि- “हे भगवान! तूने मेरे परिवार को बार-बार बचा लिया।”

परन्तु, इस दुर्घटना के ठीक चार साल बाद मेरे बाबूजी की मौत एक बड़ी दुर्घटना में ही हो गई जिसमें मेरे करीबी छः रिश्तेदारों सहित कुल सात लोगों की मौत हो गई तथा तीन जीवन मौत से लड़ते आज भी जीवित हैं।

उपरोक्त घटनाओं से अक्सर याद आती है- “जाको राखें साईयां....।”



किसी के आत्म-विश्वास जगाने वाला प्रोत्साहन देना ही सर्वोत्तम उपहार है ।

हिन्दी पखवाड़ा समारोह, 2009

एक सिंहावलोकन



- हिन्दी कक्ष

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा), बिहार, पटना एवं महालेखाकार (लेखा एवं हक0), बिहार, पटना के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक-1.9.2009 से 15.09.2009 तक हिन्दी पखवाड़ा सोल्लास मनाया गया। इस दौरान 06 प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई थीं, जहाँ हिन्दी संबंधी विभिन्न प्रतियोगिताओं में अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। अधिकारियों/कर्मचारियों के बच्चों द्वारा भी, बच्चों हेतु विशेष तौर पर आयोजित, प्रतियोगिताओं में उत्साह पूर्वक भाग लिया गया। हिन्दी पखवाड़ा के दरम्यान दो कार्यशालाएँ भी आयोजित की गईं। हिन्दी कार्यशालाओं में प्रतिभागी अधिकारियों/कर्मचारियों का तन्मयता के साथ कार्यालयीन कार्य हिन्दी में करने हेतु प्रशिक्षण दिया गया। प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले कर्मियों को हिन्दी दिवस के दिन पुरस्कृत भी किया गया। साथ ही वर्ष 2008-2009 के दरम्यान हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले 23 अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी नगद राशि के रूप में पुरस्कार दिया गया।

मुख्य समारोह दिनांक 14.09.2009 को 2 बजे दिन में विभागीय कैंटीन, पटना

में आरंभ हुआ। समारोह की अध्यक्षता प्रधान महालेखाकार श्री अरुण कुमार सिंह के द्वारा किया गया। स्वागत भाषण श्री फैसल इमाम, वरीय उपमहालेखाकार (प्रशासन) द्वारा किया गया। तत्पश्चात 'हिन्दी दिवस' के उपलक्ष्य में माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार के प्राप्त संदेश-पाठन उपमहालेखाकार (पेंशन) श्री सुशील कुमार सिन्हा द्वारा किया गया। प्रधान महालेखाकार श्री अरुण कुमार सिंह ने अपने अध्यक्षीय भाषण में हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं उपयोगिता पर विशेष बल दिया तथा हिन्दी भाषा के निरंतर विकास के प्रति अपना विश्वास व्यक्त किया। इस अवसर पर लेखापरीक्षा कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'प्रहरी' का लोकार्पण प्रधान महालेखाकार श्री अरुण कुमार सिंह द्वारा मुख्य अतिथि श्री कुमार वीरेन्द्र के हाथों कराया गया, जिसमें 'प्रहरी' के सम्पादक श्री मनोज कुमार ने सहयोग किया। लेखा कार्यालय की पत्रिका 'चेतना' का लोकार्पण महालेखाकार महोदय के मुख्यालय में न होने के कारण प्रधान महालेखाकार श्री अरुण कुमार सिंह द्वारा विशिष्ट अतिथि श्री राकेश चन्द्रनारायण के हाथों कराया गया, जिसमें संपादक श्री बंशीधर मिश्र ने सहयोग किया। इसी बीच 2008-09 के दरम्यान महालेखाकार कार्यालय (ले0 एवं

ह0) बिहार, पटना के हिन्दी रिपोर्ट, हिन्दी कक्ष की गतिविधियों से संबंधित प्रतिवेदन श्री बंशीधर मिश्र द्वारा प्रस्तुत किया गया।

हिन्दी दिवस समारोह का द्वितीय चरण भव्य कवि-गोष्ठी से शुरू हुआ। इस कवि-गोष्ठी में आमंत्रित कविवृन्द श्री आलोक धन्वा, श्री सत्यनारायण, श्री रवीन्द्र राजहंस, श्री सविता सिंह नेपाली, श्री मेहता नागेन्द्र सिंह, श्रीनन्द किशोर शर्मा, श्री कमला प्रसाद, श्री ललित कुमुद, श्री शहंसाह आलम, श्री इन्द्र मोहन मिश्र 'महफिल', श्री नरेन्द्र सिंह 'नाहर', श्री मनोज कुमार, श्री महेन्द्र मोहन मिश्र, श्री सिद्धेश्वर, श्री शिव शरण सिन्हा, श्री अरुण कमल, श्री श्रीराम पाण्डेय, श्री दिलीप कुमार सिंह, श्री राजेन्द्र कुमार, श्री रामेश्वर राम एवं श्री उमेश्वर प्रसाद सिंह ने अपने काव्य-पाठ से श्रोताओं को मंत्र-मुग्ध कर दिया। श्रोताओं

ने तालियों की गड़गड़ाहट से कवियों का मान-सम्मान किया। कवि-मंच संचालन प्रसिद्ध साहित्यकार एवं कवि श्री कमला प्रसाद ने किया।

धन्यवाद ज्ञापन श्री कैलाश राम, उप महालेखाकार (एस.आर.ए.) द्वारा किया गया।

15.09.2009 को सांस्कृतिक कार्यक्रम मुख्य कार्यक्रम रहा। स्वागत भाषण सुश्री स्मृति, उप महालेखाकार (कार्य) द्वारा दिया गया। माननीय मुख्य अतिथि श्री सिद्धेश्वर द्वारा भावोद्गार प्रकट किया गया। इसके उपरान्त पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम हुआ। दिन के दूसरे चरण में सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ जिसमें गीत-संगीत का लोगों ने आनन्द लिया। धन्यवाद ज्ञापन श्री मुकेश कुमार लाल, सहायक महालेखाकार द्वारा करते हुए एक सफल हिन्दी पखवारे का समापन हुआ।



दुनिया में आलस्य को पोषण देने जैसा दूसरा भयंकर पाप नहीं है।



15 अगस्त 2009—स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर अपना उद्गार प्रकट करते हुए माननीय महालेखाकार श्री इन्द्रदीप सिंह धारीवाल ।



इंदिरा गाँधी हृदय रोग संस्थान, पटना के निदेशक श्री एस० एन० मिश्र का महालेखाकार कार्यालय में आयोजित स्वास्थ्य शिविर में स्वागत करते श्री इन्द्रदीप सिंह धारीवाल, महालेखाकार (ले० एवं हक०), बिहार, पटना

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.) बिहार,
संयुक्त तत्त्वावधान में
हिन्दी पखवारा सम्मेलन
दिनांक:- 01.09.2009 से 15.09.2009



हिन्दी पखवारा, 1.09.2009 से 15.09.2009, के शुभारम्भ के सुअवसर पर प्रधान महालेखाकार श्री अरूण कुमार सिंह एवं वरिष्ठ उप महालेखाकार श्री प्रवीर कुमार के साथ महालेखाकार (ले० एवं हक०) श्री इन्द्रदीप सिंह धारीवाल अपना उद्गार प्रकट करते हुए।



महालेखाकार कार्यालय में आयोजित स्वास्थ्य शिविर में श्री एस०एन० मिश्र, निदेशक, इंदिरा गाँधी हृदय रोग संस्थान, पटना अपने चिकित्सक दलों तथा महालेखाकार कार्यालय के सक्रिय कार्यकर्ताओं के साथ।